

रामपाल का कल्ट: सम्पूर्ण भंडाफोड़

भूमिका

इस पुस्तक के शुरुआत में ही मैं स्पष्ट कर देता हूं की मेरा संत कबीर जी या उनके किसी पंथ से कोई भी विरोध नही है। संत कबीर ने अपनी वाणी से समाज में फैली कुरीति और पाखंड का भांडफोड़ कर मानवता को सही राह पर लाना चाहा था। लेकिन जैसे होता आया है की ऐसे दिव्य मानवों के जाने के बाद उन्हें ही पाखंड का जरिया बना लिया जाता है।

वर्तमान में संत रामपाल नाम के व्यक्ति और उसके कल्ट के द्वारा संत कबीर जी के नाम का प्रयोग करके समाज में भ्रम, बैर और शत्रुता फेल रही है, और उनकी कल्ट पुस्तक ज्ञान गंगा कई धर्म मजहबों के विचारो को भ्रष्ट कर रही है जिसके विरोध में ही यह पुस्तक आपको पेश की जा रही है।

अगर आप संत रामपाल के शिष्य नही है तो इस पुस्तक को पूरा पढ़े, नही तो अगर आप एक रामपाली दास दासी है तो आप सीधे 12 और 13 भाग पढ़ सकते है।

भाग 1 : परिचय

कल्ट क्या होता है? कल्ट की परिभाषा इस रूप में लिया जा सकता है की कल्ट सामाजिक समूह का एक रूप है जिसमें यह धार्मिक, आध्यात्मिक या दार्शनिक प्रकार का हो सकता है। एक कल्ट में हमेशा एक नेता और उसके कुछ अनुयायी होते हैं जिन्हें इस नेता द्वारा कहे गए सभी सिद्धांतों और बातों का पालन करना होता है।

धार्मिक कल्ट अक्सर नए भगवान या नई मान्यताओं को पेश करते हैं जो इसके अनुयायियों पर आरोपित किए जाते हैं और कल्ट के लोग पुराने भगवान या पुराने विश्वासो और रीति रिवाज के हमेशा खिलाफ होते है। कल्ट अनुयायियों को अक्सर इन पुराने या "विपरीत कल्ट" मान्यताओं के खिलाफ खुले तौर पर या गुप्त रूप से विरोध करते देखा जाता है। वे इसके लिए हिंसक या अहिंसक तरीके चुनते हैं।

कल्ट में अक्सर उस कल्ट के नेता द्वारा कहे गए उनके सभी बातों या सिद्धांतों को लिख लिया जाता हैं और एक पवित्र पुस्तक का निर्माण किया जाता हैं, जिस पर श्रद्धा रखना सबसे ज्यादा जरूरी होता है।

कल्ट में अनुयायियों शामिल करने के लिए भय और लालच का इस्तेमाल भी किया जाता है। यदि कोई अनुयायी कल्ट को छोड़ने का प्रयास करता है, तो कल्ट का नेता कल्ट छोड़ने के बाद नुकसान की शिक्षा देता है और उन्हें इसके बारे में सलाह या धमकी देता है, जिससे अनुयायी डर में आकर अपना फैसला बदल लें। दूसरी ओर, यदि अनुयायी कल्ट में आकर निराश या शंका महसूस करते हैं, तो नेता उन्हें कल्ट चुनने के लाभ–फायदे बताते हैं, जिससे उन्हें एक झूठी उम्मीद लगी रहती है या फिर किसी लालच में लग कर ये अनुयाई कल्ट से जुड़े रहते है।

जब अनुयायी कल्ट नेता पर आँख बंद करके विश्वास करने लगते है, तो कल्ट के ये नेता हमेशा उनका आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक या किसी अन्य माध्यम से इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।

इस प्रकार हम ऊपर बताए गए सभी बिंदुओं को समझ कर आसानी से एक कल्ट की पहचान कर सकते हैं, जो की निम्नलिखित है -

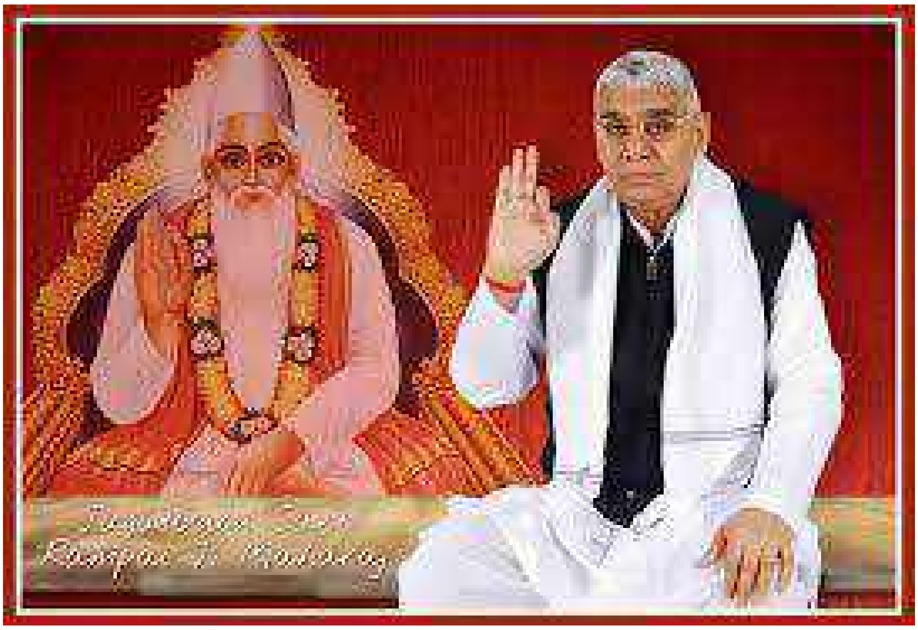
1. कल्ट में हमेशा एक नेता और उसके कुछ अनुयायी होते हैं। अनुयायियों को नेता द्वारा दी गई राय, आज्ञा, तथ्यों या सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है।

2. कल्ट की अपनी अलग मान्यता या धर्मशास्त्र होता है जो पारंपरिक या पुराने विश्वास के खिलाफ होते है। कल्ट हमेशा अपने स्वयं के रीति रिवाज को श्रेष्ठ और दूसरे रीति रिवाज को हीन मानते हैं।

3. कल्ट नेता, कल्ट छोड़ने के लाभ या हानि दिखाते हैं और कल्ट अनुयायियों पर नियंत्रण के लिए हमेशा लालच और भय का उपयोग करते हैं।

4 कल्ट अन्य विश्वासों या शिक्षा प्रणाली का विरोध करता है जो उनकी अपनी कल्ट की विश्वास प्रणाली के उल्ट होते हैं।

अब हम भारत के रामपाल कल्ट के बारे में चर्चा करेंगे जो इसके नेता तथकथित सन्त रामपाल द्वारा शुरू किया गया था और वर्तमान में अपने नेता की गिरफ्तारी और कैद के बाद पूरी दुनिया में अपने अंध अनुयायियों द्वारा प्रचारित किया जा रहा है।



संत रामपाल जिन्हें पहले रामपाल सिंह जतिन के नाम से जाना जाता था, भारत के हरियाणा के सोनीपत जिले के एक गाँव धनाना गाँव के निवासी थे। उनका जन्म नंद लाल नाम के एक किसान के परिवार में हुआ था।

उन्होंने सरकारी पॉलिटेक्निक नीलोखेड़ी से इंजीनियर की डिग्री ली, और फिर हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में एक जूनियर इंजीनियर के रूप में काम किया। साल 1995 में, उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था।

रामपाल, छुड़ानी गाँव के अपने गुरु रामदेवानंद द्वारा कबीर कल्ट में शामिल हुए, जो की भारत के 15वीं शताब्दी के रहस्यवादी शैली के संत कबीर को अपना आदर्श मानते थे और उनकी सीख का अनुसरण करते हैं। उन्होंने रामदेवानंद कल्ट में दीक्षा ली और उन्होंने दावा किया कि इसका कारण यह था कि उन्हें हिंदू धर्म की विश्वाश प्रणाली में आध्यात्मिक शांति नहीं मिल रही थी।

रामपाल ने संत कबीर पर कई ग्रंथ पढ़े और पुराण और वेद जैसे कई हिंदू ग्रंथ भी पढ़े।

बाद में उन्होंने छुड़ानी आश्रम छोड़कर अपना खुद का आश्रम शुरू किया और खुद को संत कबीर का अवतार या पुनर्जन्म घोषित करना शुरू कर दिया और संत कबीर को भगवान कबीर भी घोषित करना शुरू कर दिया।

उन्होंने अपने एजेंडे और दावों में फिट होने के लिए वेदों और पुराणों जैसे हिंदु धर्म की पवित्र पुस्तकों की गलत व्याख्या की और तोड़ मरोड़ कर मनमर्जी के अनुवाद किए। इसके लिए उन्होंने पहले से अनुवादित किताबो में से इधर उधर से कड़ियां जोड़ी, क्यूंनकि रामपाल को संस्कृत का कोई ज्ञान नही था।

रामपाल कबीर को सर्वोच्च ईश्वर के रूप में दिखाने के लिए यही नही रुके और उन्होंने दूसरे मजहब की किताबो यानी कुरान और बाइबिल की भी बुरी तरह से व्याख्या करने लगे, जबकि रामपाल को न तो अरबी का ज्ञान था और न ही हिब्रू भाषा का।

उन्होंने अपनी भी कुछ किताबें लिखी है, जिनमें ज्ञान गंगा, गीता तेरा ज्ञान अमृत नाम की एजेंडा वाली किताबें है, जिनमे यही मनघड़ंत और मनमर्जी की व्याख्यान दिए गए है।

उनके एक शिष्य कृष्ण दास, जो की पहले रामपाल के साथ पहले छुड़ानी आश्रम में थे और बाद में रामपाल के साथ ही आश्रम में जुड़े थे, उनका बाद में रामपाल से मोहभंग हो गया था। वो वापस छुड़ानी आश्रम चले गए थे और उन्होंने 'शैतान बना भगवान' नामक एक पुस्तक लिखी, जो रामपाल के परिवर्तन का एक अप्रभावी विवरण है।

अब ये कितनी हास्यास्पद और समझने की बात हैं कि जिन गुरु रामदेवानंद जी, जिन्होने रामपाल को अपने कल्ट में दीक्षा दी थी, उन के छुड़ानी के आश्रम ने रामपाल पर बाद में एक पुलिस केस दर्ज किया था क्यूंनकि उनका दावा था कि रामपाल ने जबरदस्ती आश्रम के पुराने गुरुओं के लिखवाए गए संदेशों में छेड़छाड़ की थी। 19 जून, 2006 को, क्रोधित रामपाल ने कथित तौर पर अपने आदमियों को छुड़ानी आश्रम पर हमला करने के लिए कहा ,जिसमे एक व्यक्ति की मृत्यु और कुछ लोग घायल हो गए थे। पुलिस ने उनके 48

अनुयायियों को इस केस में पकड़ लिया था। उन्हें दिघल गांव में एक पुलिस चौकी ले जाया गया, जहां रामपाल के कुछ और अनुयायी इकट्ठा हुए और कथित तौर पर उन्होंने चौकी में आग लगा दी थी।

2006 में, रामपाल ने आर्य समाज धार्मिक संप्रदाय की मुख्य पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के कुछ हिस्सों पर आपत्ति जताई। उन्होंने इन भागों को "अव्यावहारिक और असामाजिक" करार दिया, लेकिन वास्तव में उन्होंने इस पुस्तक की फिर से अपने एजेंडे के तौर पर गलत व्याख्या की थी। इसने आर्य समाज के अनुयायियों को नाराज कर दिया, जिन्होंने उनके आश्रम को घेर लिया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः 12 जुलाई 2006 को दो संप्रदायों के अनुयायियों के बीच भीषण संघर्ष हुआ। संघर्ष के दौरान, सोनू नामक एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी गई, और 59 अन्य लोग घायल हो गए। रामपाल पर अनेकों आरोप लगाये गये थे जिनमे हत्या और समाज में वैमनस्य के प्रयास थे, और फिर उन्हें 22 महीने की जेल हुई। उनके अनुयायियों का दावा है कि उन्हें इस मामले में झूठा फंसाया गया था और वह बेकसूर है।

हालांकि रामपाल ने कभी भी पुलिस में सरेंडर नही किया। 18 नवंबर तक, हिसार में उनके सतलोक आश्रम को उनके हजारों अनुयायियों द्वारा संरक्षित किया गया था, जिन्होंने लाठी, लाठी और अन्य आग्नेयास्त्रों का इस्तेमाल करके उनके आश्रम को एक छावनी बना डाला था। आश्रम को हजारों महिला भक्तों ने भी संरक्षित किया हुआ था, जिन्होंने कई दिनों तक प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर दिया, जिससे पुलिस को प्रवेश नही मिला। वे कथित तौर पर उसके सहयोगियों द्वारा परिसर में ही सीमित थे।

बाद में 20,000 से अधिक सुरक्षाकर्मी और पुलिस जबरन आश्रम में घुसे, लेकिन वे रामपाल को गिरफ्तारी के लिए नहीं ढूंढ पाए। पुलिस ने उन्हें खोजने के लिए आश्रम के पिछले हिस्से की दीवार तोड़ने के लिए मशीनों का इस्तेमाल किया, लेकिन बड़ी संख्या में अनुयायियों ने इसका विरोध किया जिन्होंने उनके प्रवेश को रोकने के प्रयास में 28 पुलिस कर्मियों को घायल कर दिया। उनके आश्रम में पांच महिलाओं और एक 18 महीने के बच्चे के शव मिले थे।

रामपाल को 19 नवंबर 2014 की रात को उनके 900 से अधिक अनुयायियों के साथ देशद्रोह, हत्या, हत्या के प्रयास, साजिश, अवैध हथियारों की जमाखोरी और आत्महत्या करने वालों को सहायता और उकसाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

कई अनधिकृत स्रोतों का दावा है कि रामपाल अफीम के आदी थे।

उन्होंने महिला अनुयायियों को कोड नाम दिए थे जिससे वह उन्हें संबोधित करते थे और उनमें बबीता कुमारी उनकी पसंदीदा अनुयायी थीं। वह उसकी दिनचर्या का प्रबंधन करती

थी और उसके निजी कक्ष में प्रवेश की अनुमति भी देती थी। सूत्रों का यह भी दावा है कि बबिता के बैंक खाते में उनके द्वारा जमा किए गए 10 लाख हैं।

आज रामपाल आजीवन कारावास की सजा काट रहे है लेकिन उनके अनुयायी अभी भी आंख मूंदकर उसका और उसके झूठे और गलत विचारों का अनुसरण कर रहे हैं। अब वह रामपाल को कबीर का अवतार ही नही बल्कि कबीर भगवान ही कहने लगे है।

आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि रामपाल कल्ट में कल्ट की सभी विशेषताएँ आसानी से मेल खा रही है।

इस कल्ट के एकमात्र नेता तथाकथित संत रामपाल थे और उनके अनुयायी आँख बंद करके उनका और उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर रहे थे और अभी भी कर रहे है। उन्हें उनकी शिक्षा पर सवाल उठाने या उनका विरोध करने की अनुमति नहीं है अन्यथा उनकी सदस्यता खारिज कर दी जाएगी और उन्हें आश्रम से बाहर कर दिया जाएगा। साथ ही उन्हें धमकी भी दी गई कि ऐसा करने से वे एक विधर्मी के रूप में नरक में पड़ जाएंगे, जिसकी वजह कबीर भगवान और रामपाल को छोड़ दिया जाना होगा।

इस कल्ट के सदस्य अभी भी विभिन्न झूठे तथ्यों का प्रचार कर रहे हैं जिन पर इस पुस्तक में विस्तार से चर्चा की जाएगी और इस पुस्तक में आप इस कल्ट को बारीकी से समझ सकेंगे ताकि आप इनसे बच सके और विरोध कर सके।

भाग 2: पूर्वपक्ष

जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि रामपाल कल्ट पूरी तरह से झूठे दावे और सभी धर्मों और मजहबों के गलत तथ्यों पर निर्भर है।

रामपाल कल्ट के धर्मशास्त्र ज्ञान गंगा को समझने के लिए, हमें पहले यह सीखना होगा कि उनकी मान्यताएँ क्या हैं और बाद में हम उनका खंडन करेंगे।

रामपाल कल्ट की पवित्र पुस्तक ज्ञान गंगा पिछले कबीर संप्रदायों (गरीबदास संप्रदाय की पुस्तक) के कई ग्रंथों और विभिन्न धर्म ग्रंथों और उनने वर्णित पात्रों पर आधारित है।

हिंदू धर्म जो भारत में सबसे बड़ा और प्राथमिक धर्म है, उनके ज्ञान खजाने में मुख्य रूप से ग्रंथों की 3 पीढ़ियां शामिल हैं।

हिंदू धर्म की पहली पीढ़ी के ग्रंथ वेद थे। ये गिनती में 4 हैं और इनके नाम हैं ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद में वैदिक लोगों के अनुभव, कथाएं हैं, सामवेद में वैदिक देवताओं के लिए भजन हैं, यजुर्वेद में धार्मिक अनुष्ठानों के लिए निर्देश हैं और अथर्ववेद में विज्ञान, चिकित्सा और अन्य तत्व शामिल हैं।

दूसरी पीढ़ी के ग्रंथ उपनिषद हैं जो बाद में हिंदू धर्म के 6 रूढ़िवादी दर्शन की प्रेरणा बने।

108 उपनिषद हैं जिनमें से 18 उपनिषद महत्वपूर्ण या प्राथमिक हैं। इन उपनिषदों को वेदों का दार्शनिक भाग भी कहा जाता है और प्रत्येक उपनिषद को प्रत्येक वेदों से व्युत्पन्न कहा जाता है।

हम आपका ध्यान एक ऐसे दर्शन (दर्शन) की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जो हिंदू धर्म के 6 रूढ़िवादी दर्शन शाखा में से एक है। दर्शन के इस शाखा का नाम सांख्य है।

सांख्य सबसे प्रसिद्ध दर्शन है जो बाद में शैव धर्म पुराण (देवी भागवत, शिव महापुराण आदि), भागवत गीता आदि जैसे कई ग्रंथों का स्रोत बन गया।

इस दर्शन में विश्व की रचना का कारण दो प्रमुख कारकों या द्वैत द्वारा की जाती है। एक को पुरुष कहा जाता है जो दिव्य स्व या शुद्ध चेतना है। यह अन्य किसी माध्यम से अधिक पूर्ण, स्वतंत्र, स्वतंत्र, अगोचर, अज्ञेय है, मन या इंद्रियों के किसी भी अनुभव से ऊपर और किसी भी शब्द या स्पष्टीकरण से परे है। यह शुद्ध रहता है, "गैर-जिम्मेदार चेतना"। पुरुष न तो उत्पन्न होता है और न ही नष्ट होता है।

दूसरा है प्रकृति। प्रकृति प्रकट भौतिक ब्रह्मांड का पहला कारण है - यानी पुरुष को छोड़कर सब कुछ। प्रकृति जो कुछ भी भौतिक है, मन और पदार्थ-सह-ऊर्जा या बल दोनों के लिए जिम्मेदार है। चूंकि यह ब्रह्मांड का पहला सिद्धांत (तत्व) है, इसलिए इसे प्रधान कहा जाता है, लेकिन, जैसा कि यह अचेतन और बुद्धिहीन सिद्धांत है, इसे जड़ (जड़) भी कहा जाता है। यह तीन आवश्यक विशेषताओं (त्रिगुण) से बना है। ये हैं:

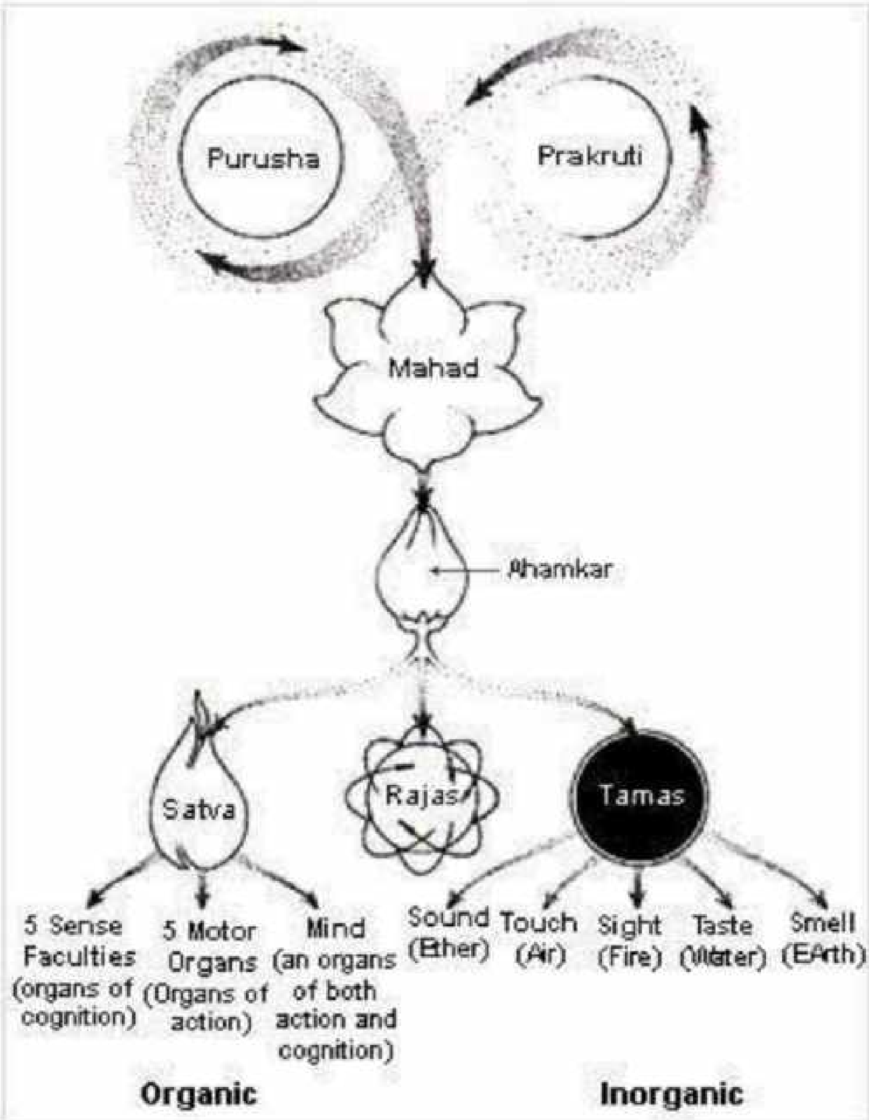
सत्व (सत्व) - शिष्टता, सुंदरता, हल्कापन, रोशनी और आनंद;

रजस (रजस) - गतिशीलता, गतिविधि, उत्तेजना और दर्द;

तमस (तमस) - जड़ता, खुरदरापन, भारीपन, रुकावट और सुस्ती।

सभी भौतिक घटनाओं को प्रकृति, या आदिम प्रकृति के विकास की अभिव्यक्ति माना जाता है (जिससे सभी भौतिक शरीर व्युत्पन्न होते हैं)। प्रत्येक प्राणी या जीव, पुरुष और प्रकृति का एक जोड़ है, जिसके अंदर आत्मा और मन समाए रहते है। इस जीव को माया या बंधन तब उत्पन्न होता है जब उसके मन के पास विवेकपूर्ण ज्ञान नहीं होता है और इसलिए अपनी पहचान के बारे में गुमराह हो कर खुद को अहंकार के साथ भ्रमित करता है और एक विलासी और विमुक्त आचरण युक्त जीवन जीता है। जब चेतन पुरुष और अचेतन प्रकृति के बीच अंतर का विवेकपूर्ण ज्ञान मन द्वारा महसूस किया जाता है, तो आत्मा बंधन मुक्त हो जाती है और जीव को अनंत सुख की प्राप्ति होती है।

कृपया नीचे दी गई इस छवि को ध्यान से देखें क्योंकि हम आगे के अध्यायों में इसके रहस्य का खुलासा करेंगे।



एक और याद रखने वाली बात यह है कि सांख्य दर्शन भी कारण और प्रभाव सिद्धांत (causality) में विश्वास करता है। कारण और प्रभाव सिद्धांत हमें सिखाता है कि प्रकृति में हुआ हर प्रभाव या घटना एक कारण से जुड़ी होती है। अतैव जीव को अपने हर कर्म का फल जरूर मिलता है, ऐसा सांख्य दर्शन सिखाता है।

पुराण हिंदू धर्म ग्रंथ की तीसरी पीढ़ी के ग्रंथ हैं जो मुख्य रूप से हिंदू धर्म के पौराणिक और संप्रदाय आधारित पाठ हैं। दूसरी पीढ़ी के पाठ उपनिषद के लोकप्रिय होने के बाद, कई लोगों ने पहले से ही पुराने वैदिक धर्म के अलग-अलग संप्रदाय बनाए हैं। उस समय भारत में प्रमुख रूप से ५ प्रकार के संप्रदाय हैं। ब्राह्मण संप्रदाय जिसका मुख्य देवता ब्रह्म है,

वैष्णव संप्रदाय जिसका मुख्य देवता विष्णु है, शैव संप्रदाय जिसका मुख्य देवता शिव है, सूर्य संप्रदाय जिसका मुख्य देवता सूर्य और शक्ति संप्रदाय है जिसकी मुख्य देवी देवी हैं।

इन सभी संप्रदायों ने अपने दावों का समर्थन करने के लिए कई ग्रंथों या पुराणों का निर्माण किया है कि प्रमुख देवता सर्वोच्च निर्माता हैं और सबसे ऊपर हैं। इसलिए हिंदू धर्म में 18 पुराण हैं और सभी इन संप्रदायों से विभाजित हैं। इन संप्रदायों ने बहस की है और इतिहास में अन्य संप्रदायों पर अहिंसा और हिंसक कृत्य से जीत दर्ज की है जिसके परिणामस्वरूप ब्राम और सूर्य संप्रदाय विलुप्त हो गए हैं। इसलिए अंत में 3 प्रमुख संप्रदाय (वैष्णव, शैव, शक्ति) और उनके अनुयायी विजयी और फले-फूले।

Brāhma:[33]	Brahma Purana, Padma Purana
Surya:[33]	Brahma Vaivarta Purana[note 3]
Agni:[33]	Agni Purana[note 4]
Śaiva:[33]	Shiva Purana, Linga Purana, Skanda Purana, Varaha Purana,[note 5][note 6] Vāmana Purana,[note 5] Kūrma Purana,[note 5] Mārkandeya Purana,[note 7] , Brahmānda Purana
Vaiṣṇava:[33]	Vishnu Purana, Bhagavata Purana, Nāradeya Purana, Garuda Purana, Vayu Purana, Varaha Purana[note 6]Matsya Purana, Bhavishya Purana[note 5]
Śakta:	Devi-Bhagavata Purana, Markandeya Purana, Brahmanda Purana, Skanda Purana[note 8]

रामपाल कल्ट की पुस्तक ज्ञान गंगा में जिन अन्य मजहब की पुस्तकों का उल्लेख, जिक्र किया गया है, वे इस्लाम के पवित्र कुरान या ईसाई धर्म की बाइबिल हैं।

ये दोनों पुस्तकें अब्राहमिक मजहब का हिस्सा हैं जिसमें एक सर्वोच्च ईश्वर होता है।

ईसाई जहां एक ही यहूदी भगवान यानी याहवे की पूजा करते है जिनके कई नाम हैं जैसे एली, अडोनाई एलियाह आदि। बाइबिल एक किताब है जो पुराने नियम या यहूदी धर्म के

तोराह से कुछ तत्वों (जैसे उत्पत्ति, पिछले भविष्यवक्ताओं का विवरण) और कुछ प्रवचनों और जीवन को उधार लेती है और ईसाई मजहब के प्रवर्तक यीशु के जीवन से समय के तत्व को बताती है। वही कुरान इस्लाम की पवित्र पुस्तक है, जिसे पैगंबर मुहम्मद के द्वारा अल्लाह नाम के उनके खुदा का कलाम कहा गया है। कुरान में ईसाई बाइबल और यहूदी तोराह के कई अंश जोड़े गए है, जैसे फरिश्ते, कयामत का दिन, एक खुदा, मूर्तियों से नफरत, इत्यादि। ईसाई बाइबल पहले हिब्रू भाषा में थी और अब अनेकों भाषाओं में आसानी से उपलब्ध है, वही कुरान सिर्फ अरबी भाषा में उपलब्ध है।

सभी कल्ट की तरह, रामपाल कल्ट में भी एक देवता है जिसकी वे पूजा करते हैं जो कबीर हैं। रामपाल कल्ट यह दावा करता है की कबीर का उल्लेख सभी ग्रंथों में अलग-अलग नामों से किया गया है, जिसके लिए उन्होंने हर धर्म या मजहब की किताबो में से नाम जोड़े है। इसलिए कबीर वेदों में कवि, वामादेव, कवि, ज्ञान गंगा में सतपुरुष, कुरान में हक्का कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर, बाइबिल में एली आदि बन गए। इस पर हम आगे चर्चा करेंगे।

इस कल्ट ने अपने भगवान कबीर का एक कट्टर दुश्मन भी बना दिया है जो काल निरंजन है जिसे भी कई नाम हैं। इसके लिए भी रामपाल कल्ट ने विभिन्न जगहों से इधर उधर के नाम काल निरंजन को दे दिए जैसे की सिख धर्म के राधा स्वामी संप्रदाय की पुस्तक से जोती निरंजन नाम लिया है, काल नाम भगवत गीता से लिया गया है, ब्रह्म नाम वेदों और गीता से लिया गया है। यह काफी ध्यान देने योग्य बात है कि रामपाल अपने कल्ट देवता (कबीर) को बड़ा बनाने के लिए अपने मनघड़ंत ब्रह्मांड में कई देवताओं को हीन (हिंदू त्रिमूर्ति) और कुछ को खलनायक (ब्रह्म) बना देते हैं। इसी पुस्तक में हम इस चरित्र काल निरंजन उर्फ ज्योति निरंजन की चर्चा आगे करेंगे।

रामपाल कल्ट ने अपने तथ्यों को सही और वैध साबित करने के लिए सभी पवित्र ग्रंथ को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। उन्होंने पहले से ही लोकप्रिय पुराण, बाइबिल जैसी विभिन्न पुस्तकों की कहानियों का उपयोग किया है और कभी-कभी रूपांतरित तथ्य और संदर्भ भी दिए हैं जिनकी चर्चा हम इस पुस्तक में करेंगे।

भाग **3 :** क्या कबीर भगवान हर युग में आए है**??**

ज्ञान गंगा पुस्तक का हिंदी अनुवाद अपने पृष्ठ संख्या 90 से 106 पर हमें बताती है कि कबीर परमेश्वर (रामपाल कल्ट के देवता) सभी युगों में धरती पर सशरीर आए थे और लोगों को दर्शन दे चुके है। हम यह बताना चाहते हैं कि युग, चार समय काल यानी सतयुग (सत्य का युग), त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग (अंधेरे का युग) में समय के विभाजन की एक हिंदू अवधारणा है।

पुस्तक का दावा है की कबीर भगवान सतयुग में सत सुकृत, त्रेतायुग में मुनिंद्र, द्वापरयुग में करुणामय और कलयुग में संत कबीर (15वीं शताब्दी के रहस्यवादी संत) के रूप में आए, ऐसा कल्ट का मानना है।

अब हम यहां चर्चा करेंगे कि रामपाल कल्ट ने कितनी खूबसूरती से अपने कल्ट भगवान के बारे में एक-एक करके झूठी कहानियों को जोड़-तोड़ कर गढ़ा है।

सबसे पहले हम सतयुग अवतार की चर्चा करेंगे जिसका उल्लेख ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 90 पर किया गया है।

ज्ञान गंगा के अनुसार रामपाल कल्ट के भगवान कबीर सतयुग में सत सुकृत के रूप में प्रकट हुए थे। उन्होंने गरुड़ (हिंदू पुस्तक पुराण का एक पौराणिक पक्षी), शिव, विष्णु और ब्रह्मा (हिंदू धर्म के पौराणिक देवता) को दिव्य ज्ञान का वर्णन किया। उन्होंने मनु को इस ज्ञान को समझाने की भी कोशिश की लेकिन उन्होंने सत सुकृत का मजाक उड़ाया और उसका नाम वामदेव (संस्कृत में विपरीत अर्थ) या विपरीत भगवान रख दिया था। यजुर्वेद (हिंदू धर्म का पवित्र ग्रंथ) में वामदेव का उल्लेख है जिसमें ब्रह्म ज्ञान जानने के लिए उनकी प्रशंसा की जाती है।

ज्ञान गंगा के अनुसार वामदेव ही सत सुकृत या कल्ट भगवान कबीर है।

आगे बढ़ने से पहले, कृपया यह भी ध्यान दें कि उसी ज्ञान गंगा में, पृष्ठ 90 के पैराग्राफ 2 में संदर्भित है, कि कबीर भगवान (रामपाल के कल्ट देवता) कभी भी किसी स्त्री से पैदा नहीं हुए और सीधे इस दुनिया में खुद को प्रकट कर सकते हैं।

> *वास्तव में परमात्मा आकार में है। मनुष्य सदृश शरीर युक्त हैं। परंतु परमेश्वर का शरीर नाड़ियों के योग से बना पांच तत्व का नहीं है। एक नूर तत्व से बना है। पूर्ण परमात्मा जब चाहे यहाँ प्रकट हो जाते हैं वे कभी मां से जन्म नहीं लेते क्योंकि वे सर्व के उत्पत्ति कर्त्ता हैं।*

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि ऊपर वर्णित वामदेव को कभी भी किसी भी वेदों में सत सुकृत के रूप में संबोधित नहीं किया गया है, न ही रामपाल कल्ट ने इसके बारे में कोई सबूत

प्रदान किया है। यह भी जानने की जरूरत है कि वामदेव जिन्हें रामपाल कल्ट द्वारा सत सुकृत के रूप में दावा किया जाता है, वे कभी किसी ऋषि मनु से नहीं मिले थे। यह घटना कल्ट द्वारा एक मनगढ़ंत झूठ है।

दूसरी बात यह समझने की है कि वास्तव में वामदेव कौन है? ज्ञान गंगा में वर्णित वामदेव वैदिक लेखों में वर्णित वामदेव से बिल्कुल विपरीत हैं। वामदेव ऋषि गौतम के पुत्र थे और ऋषि थे जिन्होंने ऋग्वेद के चौथे मंडल का खुलासा किया था। मिथक में उल्लेख किया गया है कि वह सामान्य बच्चे के रूप में पैदा नहीं होना चाहता थे, इसलिए उन्होंने अपनी मां के गर्भ को फाड़ने का फैसला किया लेकिन देवताओं से परामर्श के बाद, उसने उस विचार को छोड़ दिया और श्येन पक्षी (बाज) के रूप में गर्भ से बाहर आए।

कृपया ऋग्वेद मण्डल 4, सूक्त संख्या 27 श्लोक क्रमांक 1 का निम्न श्लोक देखें, जिसमें इस घटना का स्पष्ट उल्लेख है।

[सूक्त - २७]

[ऋषि - वामदेव गौतम । देवता - श्येन अथवा इन्द्र । छन्द - त्रिष्टुप्, ५ - शक्वरी ।]

३३५३. गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा ।
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नध श्येनो जवसा निरदीयम् ॥१ ॥

(तत्वज्ञानी ऋषि वामदेव का कथन) गर्भ (समाधि अवस्था) में रहकर ही मैंने इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं के जन्मों को भली-भाँति जान लिया था । सैकड़ों लोहे की पुरियों ने गर्भावस्था में मेरी सुरक्षा की थी । उसके बाद मैं श्येन पक्षी के समान वेग के साथ बाहर निकल आया था ॥१ ॥

इस श्लोक में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि वामदेव ने माता के गर्भ में दुनिया और देवताओं के बारे में जान लिया था। वह हजार पुर (महलों) द्वारा संरक्षित थे और बाद में वह एक शयेन पक्षी की तरह गर्भ से बाहर निकल गये।

यह प्रमाण यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि वामदेव का जन्म एक महिला या माँ के गर्भ से हुआ है, जो आम तौर पर रामपाल कल्ट की उस मान्यता का खंडन करता है कि उनके भगवान कबीर को जन्म लेने के लिए एक महिला की आवश्यकता नहीं होती है।

इसलिए हम देख सकते हैं कि कोई सत सुकृत जैसे चरित्र असल में नहीं था और रामपाल कल्ट के भगवान कबीर भी वामदेव के जैसे नहीं हैं जैसा कि वैदिक पाठ में वर्णित है।

अब हम त्रेता युग में कबीर परमेश्वर के दूसरे अवतार मुनिन्द्र के रूप में चर्चा करेंगे।

त्रेता युग या दूसरा युग वही युग है जिसमें पौराणिक हिंदू महाकाव्य रामायण का वर्णन हुआ था।

ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 94 में एक कथा के अनुसार मुनींद्र या भगवान कबीर का दूसरा अवतार नल-नील के सामने प्रकट हुए थे ।

कल्ट की कहानी इस प्रकार है कि नल-नील चचेरे भाई थे और उनका असली नाम अनल-अनिल था। वे तीव्र शरीर और मानसिक बीमारी से ग्रसित थे। उनके माता-पिता मर चुके थे। उन्होंने कई संतों और ऋषियों से परामर्श किया था, लेकिन वे सभी उनकी मदद नहीं कर सके क्योंकि उनका दावा था कि यह बीमारी उनके पिछले जन्म के कृत्यों के कारण है। अब वे मुनिंद्र से उनके आश्रम में मिलते हैं और उन्होंने उनके सिर पर स्पर्श करके उनकी बीमारी को गायब कर दिया। वे दोनों बहुत उत्साहित हो गए और खुशी से रो पड़े और मुनींद्र को अपना स्वामी मान लिया। अब वे मुनिन्द्र मुनि के साथ रहने लगते हैं और उनकी और मुनिन्द्रा आश्रम में आने वाले लोगों की सेवा करने लगते हैं। वे ऋषि मुनिन्द्र के लिए नदी में बर्तन और कपड़े धोने जैसी सेवा करते हैं, लेकिन अपनी मासूमियत के कारण वे हमेशा नदी में बर्तन और कपड़े डूबा आते हैं। इस बात से सारे आगंतुकों ने इसकी शिकायत मुनींद्र से की और उन दोनों को आश्रम से निकालने के लिए कहा। नल-नील काफी रोये और मुनींद्र से विनती की कि उन्हें निष्कासित न करें। मुनिंद्र ने उन पर दया की और उन्हें वरदान दिया कि अब उनके द्वारा कोई भी चीज नदी में डूबकर नही बहेगी और पानी के ऊपर तैरने लगेगी।

अब उसके बाद, जब राम और वानर की सेना समुद्र के पार आए और उन्हें समुद्र पार करने की आवश्यकता थी, तो राम ने समुद्र देवता से उन्हें एक पास प्रदान करने का अनुरोध किया। परन्तु समुद्र देव ने उनकी एक न सुनी।

श्रीराम ने तब उसे अपना क्रोध दिखाते हुए धमकी दी कि वह अपने घातक अग्नि बाणों से समुद्र को जला देंगे, जिस पर समुद्र देवता ने तुरंत उत्तर दिया कि वह सीधे राम की मदद नहीं कर सकते क्योंकि ऐसा करने से समुद्र में रहने वाले प्राणीयो को नुकसान होगा। इसलिए उनका कहना है कि श्रीराम को नल-नील से मदद लेनी चाहिए क्योंकि उन्हें वरदान है कि अगर वे किसी चीज को छूएंगे तो वह चीज नहीं डूबेगी। इस प्रशंसा पर नल-नील अहंकार से भर गए और अपने गुरु मुनींद्र को याद करना भूल गए और अपनी शक्ति दिखाने के लिए तुरंत एक पत्थर समुद्र में गिरा दिया। लेकिन उनका वरदान रद्द कर दिया गया और इसलिए पत्थर तुरंत डूब गया। तब मुनींद्र वहां आए और नल-नील को उनकी गलती समझाई। फिर राम ने मुनिंद्र से मदद मांगी और फिर मुनींद्र ने कहा कि उनके द्वारा चिह्नित एक विशिष्ट पत्थर का उपयोग करें जो डूबेगा नहीं और इससे राम सेतु का निर्माण हुआ।

यह थी मुनीन्द्र की ज्ञान गंगा वाली कहानी, जिसपर अब हम मुनिन्द्र मुनि के इस दावे का प्रतिवाद करेंगे।

सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि रामायण हिंदू महाकाव्य है जिसे पहले ऋषि वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में बताया था और बाद में इसे कई लोगों द्वारा कई भाषाओं में लिखा गया था। उन सभी ने रामायण का अपना-अपना संस्करण बनाया था और इसकी सभी घटनाओं को अपने-अपने तरीके में वर्णित किया था। लेकिन जैसा कि हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि पहला संस्करण ही हमेशा सही होता है और सटीकता के करीब होता है। हम इस घटना को

वाल्मीकि के रामायण संस्करण से देखेंगे। गरीबदास द्वारा ज्ञान गंगा में वर्णित दोहा जिसमें कबीर ने राम को पुल बनाने में मदद की थी, वह भी बाद में स्वयं निर्मित संस्करण में से एक है जिसका स्पष्ट इरादा वास्तविक वाल्मीकि रामायण कहानी को अपने अनुसार आकार देने के लिए था उसे हम किसी भी तरह से सटीक और सबसे पहला नहीं मानते।

वाल्मीकि रामायण में ध्यान देने वाली दूसरी बात यह है कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित एकमात्र पात्र नल ही था जिसने राम को सेतु बनाने में मदद की, उसमें उसके भाई नील जैसा कोई पात्र था ही नहीं। नल विश्वकर्मा के पुत्र थे, वास्तुकला के देवता थे और पौराणिक कथाये हमें बताती है कि देवता अमर होते हैं। अब आप वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड, २२वें सर्ग, श्लोक ४३ को देख सकते हैं।

राघवं सर्वशास्त्रज्ञमिदं वचनमब्रवीत ।

अयं सौम्य नलो नाम तनुजो विश्वकर्मण ।।

उपरोक्त श्लोक का अनुवाद इस प्रकार है: समुद्र देवता राघव (श्रीराम) से कहते हैं, जो की सभी शास्त्रों के ज्ञाता है, *की हे राम! यह नल है जो की विश्वकर्मा देव के पुत्र है।*

अब यह बात तो सर्वविदित है की विश्वकर्मा तो एक हिन्दू धर्म के देवता है और हिन्दू धर्म की विचारधारा के अनुसार तो देवता अमर होते है *इसलिए ज्ञान गंगा का यह दावा है कि नल के माता-पिता मर चुके थे, हास्यास्पद रूप से नकली है।*

अब पूरी वाल्मीकि रामायण में एक भी कहानी ऐसी नहीं है जो हमें किसी मुनिंद्र नामक ऋषि और नल के साथ उनकी मुलाकात के बारे में सुराग देती हो। यह भी स्पष्ट है कि नल किसी प्रकार की मानसिक या शारीरिक बीमारी का सामना नहीं कर रहा था। इसलिए मूल कहानी के इसी तत्व में ज्ञान गंगा भी पड़ी है।

अब नल के वरदान के बारे में वाल्मीकि रामायण स्पष्ट रूप से कहती है कि नल अपने पिता विश्वकर्मा के समान ही प्रतिभाशाली थे और वास्तुकला यानि कंस्ट्रक्शन में माहिर भी थे। और हम पहले ही चर्चा कर चुके थे कि विश्वकर्मा वास्तुकला के देवता थे, इसलिए नल को भी यह ज्ञान उनके जरिये प्राप्त हुआ था। इस संदर्भ को हम वाल्मीकि रामायण युद्धकांड, 22वें सर्ग, श्लोक संख्या 44 और 50 में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। इसलिए ज्ञान गंगा ने फिर हमसे झूठ बोला कि पुल बनाने की इस घटना से संबंधित कोई वरदान था और यह वरदान मुनींद्र नाम के किसी व्यक्ति ने दिया था। .

इस प्रकार हमने मुनिंद्र के रूप में कबीर भगवान के दूसरे दावे को आसानी से खारिज कर दिया, जो स्पष्ट रूप से रामायण का मनघडत और रूपांतरित संस्करण है, जिसमें जबरदस्ती उनके कल्ट भगवान कबीर हैं।

अब हम तीसरे संदर्भ अर्थात करुणामय पर चर्चा करेंगे। द्वापर युग के करुणामय का उल्लेख पृष्ठ संख्या 97-102 में किया गया है। यह एक बहुत बड़ी कहानी है जिसे संक्षेप में बताया जाएगा। यदि आपको वास्तव में इसे पढ़ने की आवश्यकता है तो इसे उल्लिखित पृष्ठ में जाकर पढ़ सकते हैं।

कल्ट पुस्तक ज्ञान गंगा में इस कहानी के अनुसार द्वापर युग में एक रानी थी जिसे आदत थी कि वह एक संत को खाना खिलाकर अपना भोजन करती थी। एक बार जब उन्हें 4 दिनों तक कोई संत नहीं मिला, तो कबीर परमेश्वर खुद अपने धाम सतलोक से उतरकर रानी की मदद करने के लिए करुणामय ऋषि के भेष में प्रकट हुए। तब उन्होंने भोजन ग्रहण किया और इस प्रकार रानी के व्रत और जीवन की रक्षा की। करुणामय उस रानी को ज्ञान देने की कोशिश करता है लेकिन रानी उस पर विश्वास नहीं करती है लेकिन अंततः वह उस (कबीर भगवान) पर विश्वास करना शुरू कर देती है। भगवान कबीर उनके जीवन को काल निरंजन से बचाते है। इसलिए वह उनके कल्ट में शामिल होकर उनकी भक्त बन जाती है। बाद में वह अपने पति राजा को भी मृत्यु से बचाकर अपनी तरह दास बना लेती है।

चूंकि करुणामय की यह पूरी कहानी स्वयं रचित यानी खुद से घडी हुई है इस लिए ज्ञान गंगा इसके लिए एक भी प्रमाण या संदर्भ किसी पुराण से नहीं देती है। वह बस इस कहानी को ऐसे ही बता देती है जैसे की बच्चो को बताने के लिए मनघडंत कहानिया रची जाती है तो हम इस न तो इसका कोई सबूत दे सकते है और न ही इस पर विश्वास करने में इच्छुक हैं। यह कहानी रामपाल कल्ट की सभी मान्यताओं और मिथकों को गूंथकर बनाई गयी है जैसे कि मृत्यु का अवतार होना और केवल कल्ट भगवान कबीर ही मौत से बचा सकते हैं, भगवान कबीर कोई भी रूप ले सकते हैं, यह दुनिया वास्तविक नहीं है आदि आदि। इसीलिए हम कहानी इस पर कोई कदम नहीं उठाएंगे। अगर रामपाल कल्ट के लोग ऐसी कहानियों पर एतबार करते है तो उन्हें चम्पक या पंचतंत्र की कहानियों पर भी श्रध्दा लाकर उनके लेखकों को भी भगवान बना कर पूजना शुरू कर देना चाहिए। जब तक वह इस कहानी के किसी पुराण से सबूत नहीं देंगे, तब तक इस कहानी को मनगढ़ंत या स्वयं निर्मित माना जाएगा।

अब हम ज्ञान गंगा के कबीर परमेश्वर के बारे में अंतिम संदर्भ या दावा पर चर्चा करेंगे जिसमे कहा गया है की वो 15 शताब्दी में संत कबीर के रूप में आए थे।

ज्ञान गंगा पृष्ठ 102-104 के अनुसार ये दावा इस प्रकार है कि कबीर भगवान कमल के ऊपर लहरताल तालाब में निःसंतान मुस्लिम दंपत्ति नीरू और नीमा को शिशु रूप में प्रकट होते हैं।

मुस्लिम दंपति नीरू और नीमा पहले हिंदू ब्राह्मण थे लेकिन मुस्लिमों ने जबरदस्ती उनका धर्म परिवर्तन कराया। फिर उन्होंने इस बच्चे को गोद ले लिया और उसका नाम कबीर रखा।

पृष्ठ संख्या 72 से 82 पर यह उल्लेख है कि कबीर अपने गुरु रामानंद से कैसे मिले। ज्ञान गंगा में बहुत ही गलत तरीके से आरोप लगाया गया है कि रामानंद एक जातिवादी, झूठे देवताओं के उपासक (ज्ञान गंगा और रामपाल कल्ट के अनुसार) थे और उल्टे कबीर ने उन्हें वास्तविक ईश्वर का सही तरीका और ज्ञान बताया।

आप इस पूरी कहानी को ज्ञान गंगा पुस्तक के ऊपर बताए गए पन्नों में पढ़ सकते हैं।

रामपाल कल्ट के कई सदस्य प्रचार करते हैं कि संत कबीर ने तैमूर लंगड़े और सिकंदर लोधी को उनके छोटे-छोटे कर्मो के लिए उपकार के बदले में 7 पीढ़ी का राज और बीमारी से रिहाई दी थी। जिसके दावे के साक्ष्य आपको उनकी वेबसाइट और नीचे दिए गए कल्ट के अनुयायियों द्वारा बांटे जाने वाले फोटोज में मिल जायेगी।



YouTube

Watch

पूर्ण परमात्मा ने Taimur Lang को दिया था 7 पीढ़ी तक राज करने का वरदान | SATLOK...

Uploaded by: Satlok Ashram, Oct 5, 2018

16K Views · 1.48K Likes

... | SANT RAMPAL JI MAHARAJ1.तैमुरलंग 2.बाबर3.हुमायूँ4.अकबर5.जहाँगीर6.शाहज...

enhancing trade during his reign. A great victor, Sikandar Lodi made several attempts to save the depravity of the Delhi Sultanate. Several such historical facts regarding Sikandar Lodi's valour are well known to people but what is unknown to masses will be explained in this write-up.

Very few people are aware of the fact that the merciful Almighty Kabir met Sikandar Lodi 600 years ago when God Kabir had descended in Kashi, Varanasi, and was playing the divine spectacle of a weaver; to whom people believe He was just a poet. God Kabir took Sikandar Lodi in His refuge and made him eligible for the attainment of salvation.

Let us know more about what happened 600 years ago when God Kabir met Sikandar Lodi.

- God Kabir restored a dead cow to life, killed by Sikandar Lodi
- Almighty Kabir cured the chronic disease of Sikandar Lodi
- God Kabir Restored Life of Swami Ramanand Ji

एक अंतिम बात का उल्लेख और किया गया है कि कबीर जी की मृत्यु स्वाभाविक रूप से नहीं हुई थी और उनका शरीर तुरंत गायब हो गया था और उनके शरीर की जगह केवल फूल शेष रह गए थे। इसलिए वह भगवान की तरह अशरीरी पैदा हुए और भगवान की तरह मर गए।

इस कहानी में ध्यान देने वाली पहली बात संत कबीर के जन्म के बारे में है। अब इस बात का कोई पूर्ण प्रमाण नहीं है कि संत कबीर के वास्तविक माता-पिता कौन थे। बस इतना ही पता चला कि निःसंतान दंपत्ति नीरू और नीमा ने उन्हें लहरताल तालाब के किनारे अकेला पाया था। तो हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि कबीर तालाब के किनारे के पास अकेले मिले थे। इससे यह साबित नहीं होता कि कोई दिव्य भगवान थे जो की सीधे प्रगट हुए थे। यहां तक कि अगर हम ये स्वीकार करते हैं कि इस तरह से अंजान जगह पर मिले संत कबीर भगवान थे, तो फिर तो हमें यह स्वीकार भी करना चाहिए कि वो सभी अनाथ बच्चे भी देवता हो सकते हैं, जिनके मां बाप उन्हे त्याग कर कही चले जाते है।

ऐसे कई मामले हैं जहां एक अनाथ बच्चे को जानवरों द्वारा संरक्षित किया गया था, या फिर वह अत्यंत विषम स्थिति में पाया गया *(*एक बच्चा जिसे बाद में उत्तर प्रदेश की सीता नाम दिया गया था, जो वर्ष *2019* में बर्तन में कब्रिस्तान में मटके के अंदर जमीन के नीचे पाई गई थी*)* लेकिन उसे कोई नुकसान नहीं हुआ। तो क्या रामपाल कल्ट इन बच्चों को भी कबीर भगवान मानने को तैयार है या नहीं*???*

गुरु रामानंद और कबीर जी द्वारा उन्हें ही उपदेश देने की दूसरी बात भी रामपाल कल्ट के कई झूठों में से एक है।

रामानंद *15*वीं शताब्दी के महान संत कवि थे। वह प्रसिद्ध कवि थे जिन्होंने हिंदू जन में भक्ति के ज्ञान को एक ऐसे समय में लामबंद किया जब तुर्क बर्बर हिंदू जन को प्रताड़ित और परेशान कर रहे थे। रामानंद संत कबीर के *ही गुरु* नहीं थे, बल्कि धन्ना, पीपा, रविदास, सुखानंद, सेन आदि जैसे *11* अन्य महान संतों के भी शिक्षक थे। फिर सवाल उठता है कि इतने प्रसिद्ध और बुद्धिमान संत का गुरु जातिवादी या मूर्ख कैसे हो सकता है*?*

आप इस कथा का *मिलान* ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *72* से *82* तक कर सकते हैं, जहां ज्ञान गंगा ने कई बार गरीबदास के दोहों का उल्लेख किया है जिसमें रामानंद के चरित्र को नीचा दिखाया गया *है* और उन्हें जानबूझकर फंसाया गया *है।*

यह ध्यान दिया जाए की गरीबदास भी कबीरकल्टी या कबीर जी के पक्के अनुयायी थे इसलिए उन्होंने संत कबीर को *यानी* अपने गुरु *के नाम पर ही कई दोहे रचे।*

यह काफी संदेहास्पद है कि गरीबदास जो की संत कबीर और रामानंद जी लगभग ३०० साल बाद पैदा हुए थे, हम उन पर कैसे भरोसा कर सकते हैं कि उन्होंने संत कबीर को भगवान के

रूप में दिखाने के लिए कोई मिश्रण या चरित्र अतिशयोक्ति नहीं की थी। गरीबदास यह बताने के लिए एक विश्वसनीय स्रोत नहीं है कि क्या रामानंद वही थे जो ज्ञान गंगा *में उनका वर्णन है!!*

एक और बात जो काफी महत्वपूर्ण और ध्यानयोग्य है कि कैसे रामपाल कल्ट कपोल कहानियों को गढ़ने और बातों को घुमाने में चतुर है। उन्होंने उल्लेख किया है कि कबीर भगवान तैमूर लंगड़ा और सिकंदर लोधी जैसे ऐतिहासिक बर्बर लोगों को वरदान देते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि असली संत कबीर वास्तविक जीवन में तैमूर लंगड़े से कभी नहीं मिले और सिकंदर लोधी के साथ उनकी कम ही बातचीत हुई थी।

1398 ईसवी में, तैमूरलंग या तैमूर लंगड़े ने दिल्ली सल्तनत पर हमला किया और *1* लाख निर्दोष लोगों को मार डाला और यौन सुख के लिए कई महिलाओं को गुलाम बना लिया था।

दूसरी ओर सिकंदर लोधी ने भी अपने समय के दौरान कई ब्राह्मणों को मारा और मुस्लिम मौलवियों को खुश करने के लिए कई मंदिरों को नष्ट कर दिया था।

तो आप देख सकते हैं कि तैमूरलंग और सिकंदर लोधी कौन और कैसे लोग थे, लेकिन फिर भी रामपाल कल्ट के भगवान ने न केवल इन बर्बर लोगों का पक्ष लिया, बल्कि उन्हें मोक्ष और राजत्व देकर उनका पालन-पोषण भी किया। यह बहुत मज़ेदार है कि कबीर किस तरह के भगवान हैं जो बलात्कारियों और हत्यारों का समर्थन करते हैं *??* बल्कि ये बात भी यही से साबित होती है, की कबीर सर्वज्ञ यानी अंतर्यामी नही थे, क्यूंनक उन्होंने ऐसे लोगो का भला किया जिन्होंने आगे चलकर हिंसा और अधर्म किया, अगर कबीर सब कुछ जानने वाले होते तो उन्होंने किस लिए हत्यारों और बलात्कारियों को वरदान दिए*???*

अंत में हम संत कबीर मृत्यु के बारे में चर्चा करेंगे। उनके जन्म की तरह ही उनकी मृत्यु भी अलिखित है और इसलिए बिना किसी प्रमाण के सिर्फ मौखिक रूप में उपलब्ध है। कुछ का कहना है कि उन्हें काफिरों *(*हिंदुओं*)* की तरह होने के चलते सिकंदर लोधी के द्वारा हाथी के पैर तले कुचल कर मार डाला गया था, कुछ का कहना है कि उनकी मृत्यु मगहर, काशी में हुई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उनके हिंदू और मुस्लिम अनुयायी उनके शरीर के अंतिम क्रिया को लेकर लड़ने लगते हैं, लेकिन अंत में उन्होंने शरीर को जलाने के बाद उनके अवशेषों के हिस्सों को वितरित करके उनका मामला सुलझाया जाता है, जिससे मुस्लिमो ने एक जगह पर कबीर जी की मजार ,मगहर में बना दी थी और हिंदुओ ने एक मंदिर बना दिया था। हिंदू रीति-रिवाजों में इन शरीर के अधजले भागों को ही फूल कहा जाता है जिससे हर उत्तर भारतीय भली भांति परिचित है और जली हुई चिता से हड्डियों को इकट्ठा करने के इस कार्य को फूल चुनना कहा जाता है, जो बाद में कबीर जी के जादुई रूप से शरीर के बदलने वाले फूल के चमत्कार वाली कहानी का स्रोत बन गया।

अंत में हम देख सकते हैं कि कबीर के जन्म को न तो चमत्कारी कहा गया और न ही उनकी मृत्यु मनुष्य की तरह सामान्य थी। फिर भी उनके जीवन को किसी भी प्रकार से किसी कल्ट के देवता का आगमन नही किया गया। संत कबीर जब तक जीवित रहे, पाखंड और अनाचार के

खिलाफ बोलते रहे और ईश्वर और मानवता का संदेश देते रहे। उनका स्वयं की पूजा करवाने का कभी भी कोई आदेश उनके किसी लिखित दोहे या पद शब्द में नहीं मिलता।

हम अंत में यही कहेंगे कि हमने सिद्ध कर दिया है कि रामपाल कल्ट के भगवान कबीर पर ज्ञान गंगा का दावा सरासर झूठ है और मनगढ़ंत कहानियों से भरा हुआ है।

भाग 4 : क्या कबीर ही सभी धर्मों के असली भगवान है?

जैसा कि आप पिछले अध्यायों में देख चुके हैं कि रामपाल कल्ट का कल्ट देवता कौन है और कैसे यह कल्ट नकली कहानियों को गढ़ने और पवित्र पुस्तकों को अपने हथियार की तरह इस्तेमाल करने में माहिर है।

अब हम रामपाल कल्ट और उनकी पुस्तक ज्ञान गंगा के उस दावे के बारे में चर्चा करेंगे, जिसमें वे कहते हैं कि उनके कल्ट भगवान कबीर ही सभी प्राणियों के सर्वोच्च और अकेले भगवान हैं और उनका उल्लेख प्रत्येक धर्म के पवित्र ग्रंथ में भी है। इस भाग में हम देखेंगे कि रामपाल और उनके कल्ट के अनुयायी कितने अज्ञानी या धोखेबाज हैं और वे अपने एजेंडे के लिए किसी भी पुस्तक के अर्थ को कैसे भ्रष्ट करते हैं?

आगे बढ़ने से पहले कुछ ध्यान देने योग्य कुछ आसान बिंदु हैं: -

1. किसी भी भाषा की अपनी पूर्वज भाषा या मातृभाषा हो सकती है, जो उन्हें उनके शब्द समूह, लिपि या व्याकरण के कारण जोड़ती है। उदाहरण के लिए अरबी, हिब्रू एक ही परिवार की है क्यूंनकि पुरानी अरमेक भाषा से ये दोनों जुड़े हुए है। अंग्रेजी भाषा ग्रीक, लैटिन, रोमन आदि की वंशज है, हिंदी संस्कृत, अवधी, प्राकृत आदि की वंशज है और उर्दू अवधी, फारसी, अरबी आदि की वंशज है।

2. यह संभव है कि दो भाषाओं में ध्वन्यात्मक या अक्षर गणना में समान दिखने वाले शब्द हो सकते हैं लेकिन आपको उनका अर्थ देखना होगा क्योंकि यह भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए हिंदी भाषा में राज शब्द और उर्दू भाषा में राज एक जैसे लगते है लेकिन राज का अर्थ है राज्य पर शासन करना और राज का अर्थ है गुप्त।

हम सबसे पहले कबीर शब्द की व्युत्पत्ति से शुरू करेंगे।

कबीर शब्द की उत्पत्ति ओरिएंटल अरबी-हिब्रू आधारित भाषा में हुई है जिसमें इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है महान, बड़ा इत्यादि।

अब ज्ञान गंगा और रामपाल कल्ट की वेबसाइट का दावा है कि यहूदी पुराने नियम की पुस्तक अयोह अध्याय 36 श्लोक संख्या 5 में लिखा है कि एल कबीर है। इसीलिए यहूदियों का खुदा एल दरअसल कल्ट भगवान कबीर है।

सबसे पहले आपको ये समझना होगा की ये एल (El) कौन है??

यहूदी धर्म में, उनके पास अपने भगवान का वास्तविक नाम नहीं लेने का एक लंबे समय तक चला आया रिवाज था और वे अलग-अलग विशेषण या शब्द का उपयोग करते हैं जैसे की आमतौर पर अडोनाई (मेरे प्रभु), एलोहीम (ईश्वर), एल, एला (जो बाद में अल्लाह बन गए)।

इसलिए जब यह अयोह 36:5: में एल लिखा गया है, तो यह स्पष्ट रूप से यहूदी ईश्वर का नाम है जो यहोवा है।

हमने पुराने नियम की किताब अयोह की जाँच की और पाया कि वहां पर भी el is kabir लिखा हुआ है लेकिन उसका मतलब बिलकुल अलग है।

यहाँ कबीर शब्द (כַּבִּיר) का अर्थ है बड़ा या महान लेकिन यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि कबीर शब्द यहां पर कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि एक विशेषण है, जिसको जोड़ कर देखने पर मालूम होता है की अयोह 36:5 में एल कबीर है का सीधा सा मतलब बनता है कि यहोवा महान है या एल बड़ा है। लेकिन रामपाल कल्ट पागलपन और झूठ से ग्रसित है और वे लगातार तर्क देते है कि इस पंक्ति का अर्थ है कि कबीर ही यहोवा है।

Job Chapter 36 אִיּוֹב

וַיֹּסֶף אֱלִיהוּא, וַיֹּאמַר.	א	1 {S} Elihu also proceeded, and said:
כַּתַּר-לִי זְעֵיר, וַאֲחַוֶּךָּ: כִּי עוֹד לֶאֱלוֹהַּ מִלִּים.	ב	2 Suffer me a little, and I will tell thee; for there are yet words on God's behalf.
אֶשָּׂא דֵעִי, לְמֵרָחוֹק; וּלְפֹעֲלִי, אֶתֵּן-צֶדֶק.	ג	3 I will fetch my knowledge from afar, and will ascribe righteousness to my Maker.
כִּי-אָמְנָם, לֹא-שֶׁקֶר מִלָּי; תְּמִים דֵּעוֹת עִמָּךְ.	ד	4 For truly my words are not false; one that is upright in mind is with thee.
הֶן-אֵל כַּבִּיר, וְלֹא יִמְאָס: כַּבִּיר, כֹּחַ לֵב.	ה	5 Behold, God is mighty, yet He despiseth not any; He is mighty in strength of understanding.
		6 He preserveth not the life of the wicked; but giveth to

हम इन पागल कल्ट वालो से कहते है कि यदि पंक्ति *5* में लिखा है कि एल कबीर है, और आप अभी भी अपने मनघड़ंत अनुवाद पर विश्वास करना चाहते हैं, तो उन्होंने इस पंक्ति को चुनकर बहुत बड़ी गलती की है। आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि इस पंक्ति में आगे भी कबीर शब्द *(כַּבִּיר)* आया है, जिसमे कहा गया है *"*समझ की शक्ति में वह कबीर है*" ??*

क्या यह लाइन हास्यास्पद और हास्यास्पद नहीं लगती ??

क्या इसका मतलब यह है कि रामपाल कल्ट के भगवान कबीर समझने की शक्ति है ?? यह बिल्कुल बेतुका अर्थ है, जो कि इन कल्टवादियों से बिल्कुल उम्मीद भी है जो पुराने नियम और बाइबिल के अंतर को भी नहीं जानते हैं !!!

कृपया इन कल्टवादियों के स्क्रीनशॉट को यह दावा करते हुए देखें कि इयोह पुस्तक यहूदी बाइबिल से है, लेकिन उन्हें कम ही पता है कि यहूदी धर्म में बाइबिल जैसा कुछ नहीं है। यहूदी धर्म मे तोराह, तल्मूड इत्यादी किताबे हुई है, जबकि बाइबिल ईसाई मजहब की किताब है।



अब हम कुरान, इस्लाम या मोहम्मदवाद के पवित्र ग्रंथ कुरान में कबीर ईश्वर के दावे को देखेंगे।

ज्ञान गंगा का दावा पृष्ठ 83 पर है, कि कुरान सूरह फुरकान, आयत 52 में कहा गया है कि अल्लाह (इस्लाम के देवता) अपने अलावा एक अलग ईश्वर की ओर जाने को कहते हैं जिसे इस आयत में कबीर कहा गया है।

पवित्र शास्त्र भी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) के साक्षी

इसी प्रकार कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने मुसलमानों को बुरा नहीं कहा है, न ही पवित्र कुरान शरीफ को गलत कहा है, केवल उन काजी व मुल्लाओं को लताड़ा है जो सर्व समाज को कुरान शरीफ के वास्तविक ज्ञान के विपरीत मनमानी साधना करवा रहे हैं।

जैसे पवित्र वेदों के बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव के विषय में कोई जन्म लेकर अवतार रूप में आना मानते हैं, कोई कभी जन्म न लेने वाला निराकार कहते हैं। उसकी जानकारी तो (धीराणाम्) तत्वदृष्टा संत ही बताएगें। मैं (ब्रह्म) नहीं जानता (यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10)। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में भी है। जब तक वह तत्वदर्शी संत नहीं मिलेगा तब तक जीव का कल्याण असम्भव है। वह संत अब आ गया है, इन तत्वदर्शी संत रामपाल जी को पहचानों।

"पवित्र कुरान शरीफ में प्रमाण"

इसी प्रकार पवित्र कुरान शरीफ के अध्याय सूरत फुर्कानी सं. 25, आयत 52, से 59 में कहा है कि वास्तव में (इबादइ कबीरा) पूजा के योग्य कबीर अल्लाह है। यह कबीर वही पूर्ण परमात्मा है जिसने छः दिन में सृष्टी रची तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, उसकी खबर किसी बाखबर से पूछ देखों।

पवित्र कुरान शरीफ को बोलने वाला अल्लाह स्वयं किसी और कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है तथा कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कबीर के विषय में मैं भी नहीं जानता, उसके विषय में किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो।

कविर्देव ने यही कहा था कि मैं स्वयं पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर/अकबिरु) हूँ। अपने स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक रूप में मैं स्वयं ही आया हूँ, मुझे पहचानो। परन्तु ऐसे ही आचार्यों ने पहले भी परमेश्वर के वास्तविक ज्ञान को जनता तक नहीं जाने दिया। कहा करते थे कि कबीर तो अशिक्षित है, यह संस्कृत तो जानता ही नहीं, हम शिक्षित हैं। इस बात पर पहले तो भक्तजन गुमराह हो गए थे, परन्तु अब सर्व समाज शिक्षित है, इन मार्ग भ्रष्ट आचार्यों की दाल नहीं गल रही, न ही गलेगी।

सल्लि अला :- ज-स-दि मुहम्मदिन फिल् अज्सादि अल्लाहुम म सल्लि अला कबिर् (कबीर) मुहम्मिद फिल् कुबूरि॰ फजाईले जिक्र

⑤ عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم ما قال عبد لا اله الا الله قط مخلصا الا فتحت له ابواب السماء حتی تفضی الی العرش ما اجتنب الكبائر رواه الترمذی وهكذا فی المشكوة لكن ليس فيها حسن بل غريب فقط قال القاری و رواه النسائی وابن حبان وعزاه السيوطی فی الجامع الی الترمذی و رقم له بالحسن وحكاه السيوطی فی الدر من طريق ابن مردويه عن ابی هريرة وليس فيهما اجتنب الكبائر وفی الجامع الصغير برواية الطبرانی عن معقل ابن يسار لكل شیء مفتاح ومفتاح السموات قول لا اله الا الله ورقم له بالضعف۔

5. हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई बन्दा ऐसा नहीं कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाहह' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जायें, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे।

फ–कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है और कुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलिमा बराहे रास्त अर्शे मुअल्ला तक पहुँचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक्त भी खाली नहीं।

मुल्ला अली कारी रह॰ फरमाते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त कुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाजे खुलने के एतबार से है, वरना सवाब और कूबूल से कबाइर (कबीर) के साथ भी खाली नहीं।

बाज उलेमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फरमाया है कि ऐसे शख्स के वास्ते मरने के बाद उस की रूह के एजाज में आसमान के सब दरवाजे खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलिमे ऐसे हैं कि उनमें से एक के लिए अर्श के नीचे कोई मुन्तहा नहीं।' दूसरा आसमान और जमीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे– एक 'लाइला-ह इल्लल्लाह' है, दूसरा 'अल्लाहु अकबर' (कबीर) है,

"पवित्र वेदों में प्रमाण"

सबसे पहली बात जो समझने योग्य है वो यह है कि इस्लाम मे सबसे बड़ा गुनाह शिर्क माना गया है यानी अल्लह के अलावा किसी और कि इबादत करना, तो अल्लाह क्यों दूसरे की तरफ अपने मोमिनों को भेजने लगे!

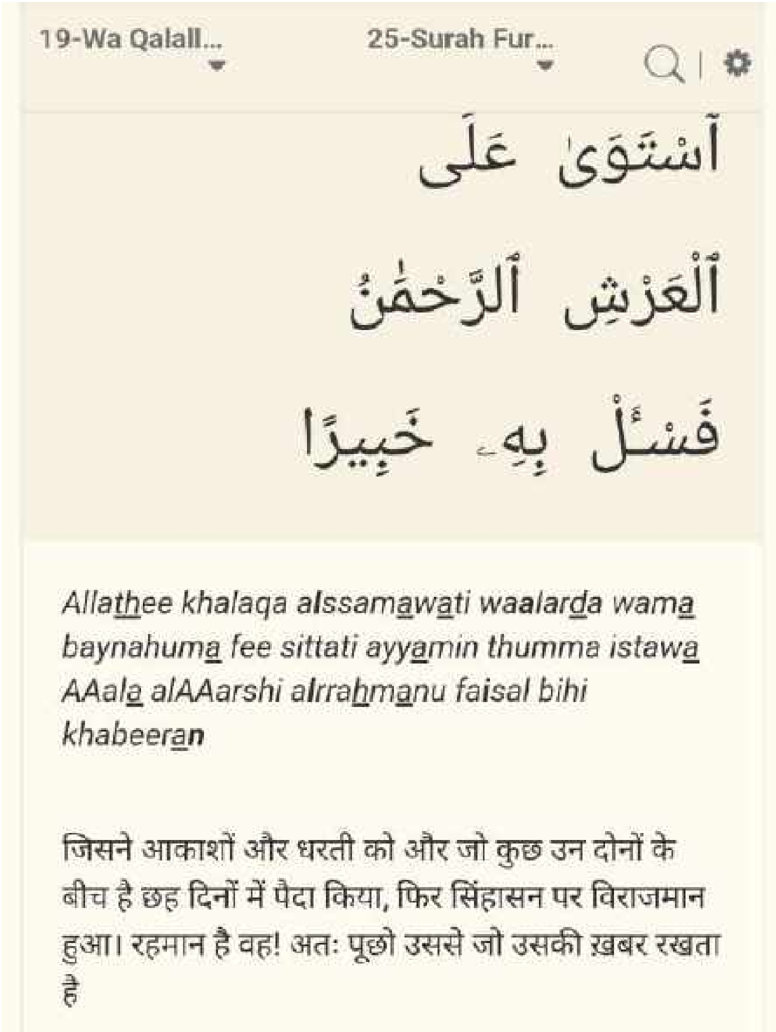
अब ये देखिए सूरह फुरकान का असली मतलब जो कि कल्ट के मनघड़ंत अनुवाद की पोल खोलता है।



कुरान से इस आयत को पढ़ने के बाद, अरबी जानने वाला बच्चा भी जान सकता है कि कुरान की यह आयत (पंक्ति) स्पष्ट रूप से मुसलमानों को काफिरों (गैर-मुस्लिम) के खिलाफ महान (कबीर का अर्थ महान) जिहाद करने का निर्देश दे रही है। यहाँ कबीर शब्द फिर से वही अर्थ (महान, बड़ा) है जो हिब्रू शब्द कबीर के समान है, क्योंकि अरबी और हिबरानी दोनों की मूल भाषा आर्मेक एक ही है।

लेकिन रामपाल कल्ट ने कबीर शब्द को फिर से एक व्यक्ति में बदल दिया है, विशेषण नहीं।

कल्ट किताब ज्ञान गंगा ने फिर से अल्पज्ञान वाले लोगों के दिमाग से खेलने की कोशिश की और सूरह फुरकान आयत संख्या 59 के बारे में ज्ञान गंगा कहती हैं, जिसमें लिखा है कि उन लोगों से पूछो जो रहमान के बारे में जानते हैं।



यहां रामपाल कल्ट का दावा है कि यह जानने वाला, रामपाल ही है जो सब कुछ जानता है और रहमान कबीर हैं न कि अल्लाह।

लेकिन हम कहेंगे कि आप रामपाल कल्ट की बातों से गुमराह न हों। यहाँ कुरान आपको नबी मुहम्मद की ओर निर्देशित कर रहा है और रहमान अल्लाह है।

अब जरा नीचे दिए गए इस्लामिक किताब हदीस सही बुखारी का एक अनुवाद देखे जो की इसी सूरह फुरकान की आयत का है।

> He who created the heavens and the earth and what is between them in six days and then established Himself above the Throne[1] - the Most Merciful, so ask about Him one well informed [i.e., the Prophet (ﷺ)].
>
> — Saheeh International

यह काफी उल्लेखनीय है कि अल्लाह के 100 नाम हैं जिनमें अल कबीर भी उसका नाम है, जिस पर कल्ट का दावा है की यही पर्याप्त प्रमाण है कि अल्लाह ही कबीर है।

किसी व्यक्ति के नाम के साथ विशेषण को नाम बताना सबसे मूर्खतापूर्ण बात है। अगर हम इन कल्टियों से पूछें, तो वे कैसे कह सकते हैं कि यह कबीर उनके कल्ट भगवान कबीर ही कैसे हैं, और अगर ये कबीर ही असली कुरान ज्ञान दाता है तो अल्लाह कौन है फिर, फिर वे इस तर्क से भाग खड़े होंते है???

एक बार पर और गौर किया जा सकता है की अल्लाह का एक नाम अल रफ़ी भी है (जिसका मतलब है कि वह जो हैसियत बढ़ाता है), तो क्या हम यह कहना शुरू कर दें कि महान भारतीय गायक मोहम्मद रफ़ी भी भगवान हैं, उनकी पूजा करना शुरू करें। अल्लाह का एक नाम अल वक़ील (वकील) है, तो क्या हम सभी अच्छे वकीलों की पूजा शुरू कर दें ???

ये कल्ट वालों के लॉजिक इतने मज़ेदार और बचकाने हैं कि सही इल्म के साथ एक समझदार बच्चा भी इन्हें मात दे सकता हैं।

आप उनकी मानसिकता और उनकी चतुर योजनाओं को देख सकते हैं कि कैसे वे शब्दों के साथ खेलते हैं और भारतीयों और कई विदेशियों को भी बेवकूफ बनाते हैं जो यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम के बारे में नहीं जानते हैं।

अब हम पूर्वी धर्मों जैसे सिख धर्म, हिंदू धर्म और उनके धार्मिक पाठ यानी की ओर आगे बढ़ेंगे।

सबसे पहले हमें सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब के इतिहास के बारे में जान लेना चाहिए।

गुरु ग्रंथ साहिब की रचना सबसे पहले 1604 में आदि ग्रंथ के रूप में सिख धर्म के 5वें गुरु अर्जुन देव जी ने की थी। आदि ग्रंथ में कई रहस्यवादी और एकेश्वरवादी हिंदू संतों और अखिल भारतीय महाद्वीप के सूफी मुसलमानों की सभी रहस्यवादी कविताएँ थीं। गुरु ग्रंथ साहिब में योगदान देने वाले संतों और पीरों की इस सूची में 10 सिख गुरु, फरीद, नामदेव, रामानंद, पीपा, धन्ना आदि नाम शामिल हैं।

यहाँ तक कि इस पुस्तक में रामानंद (संत कबीर के गुरु) और खुद संत कबीर की कविताएं और दोहे भी जोड़े गए थे। इस पवित्र पुस्तक में फारसी, अरबी, अवधी, खड़ी बोली जैसी कई भाषाओं के पाठ शामिल हैं जो उनके मूल कवियों की भाषाएं थीं।

चूँकि इस पुस्तक में मुस्लिम पीर या सूफी संतों की कविताएँ और गीत जोड़े गए थे, इसलिए इस पुस्तक में फ़ारसी और अरबी भाषा से अल्लाह और कबीर के नाम भी शामिल है जो ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 71 में दिखाया गया है। ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 64 और 71 में बताती है कि गुरु ग्रंथ साहिब राग तरंगा पृष्ठ संख्या 721 में कहा गया है कि कबीर ईश्वर हैं क्योंकि इस श्लोक में कबीर नाम का एक शब्द है और वे सभी सृष्टि के खुदा हैं। कल्ट का दावा है की इस बारे में गुरु नानक देव जी को भी पता था और वे भी संत कबीर के शिष्य थे। (हालांकि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि गुरु नानक संत कबीर से असल जिंदगी में कहां मिले थे)

इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार।
नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29

शब्द – एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब (प्रभु) एक ही है तथा उनका (श्री नानक जी का) कोई मनुष्य रूप में वक्त गुरु भी था जिसके विषय में कहा है कि पूरे गुरु से तत्वज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरे गुरु जी ने मुझे (अमृत नाम) अमर मन्त्र अर्थात् पूर्ण मोक्ष करने वाला उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही मेरा गुरु नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी काशी नगर में विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका कर रहा है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

अब हम इस दावे को देखेंगे असली अनुवाद से जो कि गुरु ग्रन्थ साहिब से लिया गया है।

ये कविता असल मे फारसी भाषा मे रची गयी थी, जिसमे भी कबीर शब्द अरबी शासन की वजह से था। इसके पीछे का कारण अरबी शासकों का फारस पर कब्जा और राज करना था, जिसकी वजह से असली फारसी में काफी बदलाव आए, वरना फारसी में बड़ा और महान के लिए बुज़ुर्ग और आली शब्द है, कबीर नही।

੭੨੧

ਰਾਗੁ ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ਯਕ ਅਰਜ ਗੁਫਤਮ ਪੇਸਿ ਤੋ ਦਰ ਗੋਸ ਕੁਨ ਕਰਤਾਰ ॥ ਹਕਾ ਕਬੀਰ ਕਰੀਮ ਤੂ ਬੇਐਬ ਪਰਵਦਗਾਰ ॥੧॥ ਦੁਨੀਆ ਮੁਕਾਮੇ ਫਾਨੀ ਤਹਕੀਕ ਦਿਲ ਦਾਨੀ ॥ ਮਮ ਸਰ ਮੂਇ ਅਜਰਾਈਲ ਗਿਰਫਤਹ ਦਿਲ ਹੇਚਿ ਨ ਦਾਨੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਜਨ ਪਿਸਰ ਪਦਰ ਬਿਰਾਦਰਾਂ ਕਸ ਨੇਸ ਦਸਤੰਗੀਰ ॥ ਆਖਿਰ ਬਿਅਫਤਮ ਕਸ ਨ ਦਾਰਦ ਚੂੰ ਸਵਦ ਤਕਬੀਰ ॥੨॥ ਸਬ ਰੋਜ ਗਸਤਮ ਦਰ ਹਵਾ ਕਰਦੇਮ ਬਦੀ ਖਿਆਲ ॥ ਗਾਹੇ ਨ ਨੇਕੀ ਕਾਰ ਕਰਦਮ ਮਮ ਈ ਚਿਨੀ ਅਹਵਾਲ ॥੩॥ ਬਦਬਖਤ ਹਮ ਚੁ ਬਖੀਲ ਗਾਫਿਲ ਬੇਨਜਰ ਬੇਬਾਕ ॥ ਨਾਨਕ ਬੁਗੋਯਦ ਜਨੁ ਤੁਰਾ ਤੇਰੇ ਚਾਕਰਾਂ ਪਾ ਖਾਕ ॥੪॥੧॥

ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੨ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਭਉ ਤੇਰਾ ਭਾਂਗ ਖਲੜੀ ਮੇਰਾ ਚੀਤੁ ॥ ਮੈ ਦੇਵਾਨਾ ਭਇਆ ਅਤੀਤੁ ॥ ਕਰ ਕਾਸਾ ਦਰਸਨ ਕੀ ਭੂਖ ॥ ਮੈ ਦਰਿ ਮਾਗਉ ਨੀਤਾ ਨੀਤ ॥੧॥ ਤਉ ਦਰਸਨ ਕੀ ਕਰਉ ਸਮਾਇ ॥ ਮੈ ਦਰਿ ਮਾਗਤੁ ਭੀਖਿਆ ਪਾਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥ ਕੇਸਰਿ ਕੁਸਮ ਮਿਰਗਮੈ ਹਰਣਾ ਸਰਬ ਸਰੀਰੀ ਚੜ੍ਹਣਾ ॥ ਚੰਦਨ ਭਗਤਾ ਜੋਤਿ ਇਨੇਹੀ ਸਰਬੇ ਪਰਮਲੁ ਕਰਣਾ ॥੨॥ ਘਿਅ ਪਟ ਭਾਂਡਾ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥ ਐਸਾ ਭਗਤੁ ਵਰਨ ਮਹਿ ਹੋਇ ॥ ਤੇਰੈ ਨਾਮਿ ਨਿਵੇ ਰਹੇ ਲਿਵ ਲਾਇ ॥ ਨਾਨਕ ਤਿਨ ਦਰਿ ਭੀਖਿਆ ਪਾਇ ॥੩॥੧॥੨॥

ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੩ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਇਹੁ ਤਨੁ ਮਾਇਆ ਪਾਹਿਆ ਪਿਆਰੇ ਲੀਤੜਾ ਲਬਿ

अब इस अनुवाद को देखिए जो कि रामपाल ने किया था और उनकी *official* वेबसाइट पर मिल जाएगा।

Translation: - (Kun Kartar) O Shabd Swaroopi! the doer means the creator of the universe by word power (gosh) came in the form of a Nirguni Saint (Kareem) merciful (Hakka Kabir) Satya Kabir (tu) you (Beaeb Parvadagaar) are the flawless (eternal) God. (Pesh to dar) in front of you ie. at your door (tahkeek) fully knowledgeable (yak arj guftam) it is a special prayer from a heart that (dildaani) O Mehboob! (Duniyaan mukaame), this world-like residence (faani) is perishable. (Mm sar mui) after the creature abandons the body (Ajraail), an angel named Ajraail – Yamdoot (giraft dil hech na daani) ruthlessly captures and takes this being along with. At that time (Kas) no (dastM geer) companion (Jan) person like (Pisar) son (Padar) father (biraadraan) relatives (Nestan) does not accompany. (Aakhir beyaftam). In the end, all measures (takbeer), duty means (kas), no rituals/action works (na daarad choon savad), and the voice also stops. (Shab roj) Everyday (gashtam) Like 'gasat' does not stops (dar hawa) like the non-stop blowing

Yamdoot (giraft dil hech na daani) ruthlessly captures and takes this being along with. At that time (Kas) no (dastM geer) companion (Jan) person like (Pisar) son (Padar) father (biraadraan) relatives (Nestan) does not accompany. (Aakhir beyaftam). In the end, all measures (takbeer), duty means (kas), no rituals/action works (na daarad choon savad), and the voice also stops. (Shab roj) Everyday (gashtam) Like 'gasat' does not stops (dar hawa) like the non-stop blowing wind (Badi khayaal) evil thoughts (Kardem) keep patrolling (neki kaar kardam) doing meritorious acts (mm een chini) I have not found any (Ahwaal) Jariya i.e. Means (Gaahe na) not found (Badbakht). In such a bad time (Hum Chu) like us (Bakheel) innocent (Gaafil) reckless (Benazar Bebaak) because of not having the real knowledge of devotion and God were blind and dumb and used to tell wrong knowledge - Uva-Bai. (Nanak Bugoyad) Nanak Ji is saying that, O God Kabir, by your grace (tere chaakra paakhaak), drowning in the dust of the feet of your servants (Janu Tura) the being transcended.



Translation: Oh Creator, the Master, the unqualified Saint, kind "**Sat Kabir" (Eternal Kabir)**, **You are flawless God**. There is a request before you from the heart that of Beloved, this residence of world is destructible. I have realised this completely. Oh benefactor, on death of this living being, a messenger of Yam named Ajrail, capturing mercilessly takes this being away. No companion like, son, father, relative gives company. In the end, all the schemes, obligations, and rituals/actions are useless. Everyday, evil thoughts keep patrolling like non-stop blowing wind. I did not get any means of doing meritorious acts. In such a bad time, i.e. Kalyug, the ignorant and careless like us, because of not having knowledge of the true path, were blind and dumb.

Says Nanak, I am your humble servant, the dust of the feet of your servants.

The Gist - Shri Guru Nanak Sahib Ji is saying, O Hakka Kabir (Sat Kabir)! You are

अब इस असली अनुवाद को देखिए जिसमे कबीर शब्द को आदमी की तरह नही बल्कि विशेषण की तरह लिया गया है।


ਯਕ ਅਰਜ ਗੁਫਤਮ ਪੇਸਿ ਤੋ ਦਰ ਗੋਸ ਕੁਨ ਕਰਤਾਰ ॥ (721-4)
yak araj guftam pays to dar gos kun kartaar.
I offer this one prayer to You; please listen to it, O Creator Lord.
ਹਕਾ ਕਬੀਰ ਕਰੀਮ ਤੂ ਬੇਐਬ ਪਰਵਦਗਾਰ ॥੧॥ (721-4)
hakaa kabeer kareem too bay-aib parvardagaar. ||1||
You are true, great, merciful and spotless, O Cherisher Lord. ||1||

अब यदि आप इस अनुवाद में देखें तो आप पाएंगे की कल्ट नेता रामपाल ने फ़ारसी भाषा पर अपनी पकड़ दिखाने के लिए बहुत ही चतुराई से सभी कविताओं का शब्द-दर-शब्द अनुवाद किया, लेकिन बेहद चालाकी से हमें कबीर शब्द और उसके वास्तविक अर्थ के बारे में नहीं बताया। इसके बजाय वह इस विशेषण शब्द कबीर को किसी के नाम के रूप में बनाते हैं और बहुत धोखे से उसे कबीर भगवान कर देते हैं।

ज्ञान गंगा में गुरु ग्रंथ साहिब का दूसरा संदर्भ पृष्ठ संख्या 64 और 71 पर गुरु ग्रंथ साहिब के बारे में एक और कविता या बानी, राग सिरी मेहला पृष्ठ 24 है। इस कविता में, शब्द धानक है, जिसके लिए कल्ट नेता रामपाल कहते हैं कि यह शब्द का मतलब बुनकर है, इसलिए गुरु नानक देव जी ने दावा किया कि भगवान एक बुनकर हैं (संत कबीर भी एक बुनकर थे) और कहते हैं कि कबीर भगवान हैं।

इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार।
नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग "सिरी" महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29

शब्द – एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब (प्रभु) एक ही है तथा उनका (श्री नानक जी का) कोई मनुष्य रूप में वक्त गुरु भी था जिसके विषय में कहा है कि पूरे गुरु से तत्वज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरे गुरु जी ने मुझे (अमृत नाम) अमर मन्त्र अर्थात् पूर्ण मोक्ष करने वाला उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही मेरा गुरु नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी काशी नगर में विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका कर रहा है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

पहले हम आपको दिखाएंगे कि धनक शब्द का अर्थ बुनकर होता भी है या नहीं???

धनक या धाणक या साहँसी भारत की एक प्राचीन जनजाति होती थी जो की मूल रूप से जंगल में निवास करते थे। वे मूल रूप से शिकारी थे और अपने आदिम समय में शिकार करके रहते थे लेकिन आधुनिक समय में, उन्होंने आदिवासीपन छोड़ दिया था। उन्हें भील जाति के उप

जाती के रूप में देखा जाता है, लेकिन भारत की *2001* की जनगणना, धनक जनजाति को उन जनजातियों में से एक के रूप में गिना जाता है, जिनकी राजस्थान भारत के भील और मीना की तुलना में बैकवर्ड कास्ट कहा जाता है। यह उल्लेखनीय है कि कई धानक लोग संत कबीर जी के अनुयायी बन गए थे, यही वजह है कि कल्ट नेता रामपाल ने अपनी कहानी बनाने के लिए इस नाम का इस्तेमाल किया।

तो हम देख सकते हैं कि धनक एक जनजाति है जो भारत में बहुत पहले शिकारियों के रूप में जंगल में रहती थी और गुरु ग्रंथ साहिब में यह धनक शब्द बुनकर के लिए प्रयोग नहीं हुआ है, जैसा कि कल्ट के नेता रामपाल कहते हैं।

यहाँ इस कविता और इस शब्द धाणक का मूल अनुवाद है जिसमें इसका अर्थ बहादुर जनजाति है जो काफी प्रासंगिक है।

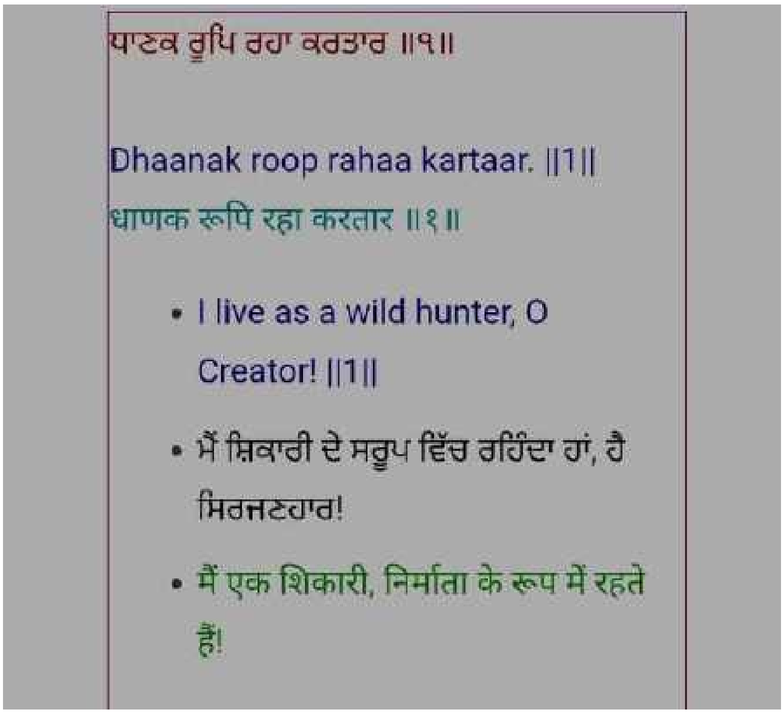

है तो दाना-पानी यहीं का यहीं धरा धराया रह जाता है (सो, मौत के डर से बचने के लिए रब के डर में टिका रह)।4।28।

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥

पद्अर्थ: सुआनु = कुत्ता, लोभ। दुइ = दो। सुआनी = कुत्तियां (आशा और तृष्णा)। भलके = नित्य। बइआलि = सवेरे। कूड़ु = झूठ। मुठा = माया में ठगा जा रहा हूँ। धाणक = सांहसी कबीला। रूपि = रूप वाला, भेस वाला।1।

अर्थ: हे कर्तार! मैं सहंसियों वाले रूप में रहता हूँ। मेरे साथ एक कुत्ता (लोभ) है, दो कुत्तियां (आशा और तृष्णा) हैं। (मेरे हाथ में) झूठ रूपी छुरा है, मैं माया में ठगा जा रहा हूँ (और पराया हक) मुरदार (खाता हूँ)।1।

यह दूसरा अनुवाद देखे जिसमे स्पष्ट तौर पर धानक के लिए शिकारी का अनुवाद किया गया है।



ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥

Dhaanak roop rahaa kartaar. ||1||

धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥

- I live as a wild hunter, O Creator! ||1||
- ਮੈਂ ਸ਼ਿਕਾਰੀ ਦੇ ਸਰੂਪ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹਾਂ, ਹੈ ਸਿਰਜਣਹਾਰ!
- मैं एक शिकारी, निर्माता के रूप में रहते हैं!

एक महत्वपूर्ण बात ध्यान देने योग्य है कि पृष्ठ ७१ ज्ञान गंगा और कल्ट नेता रामपाल का दावा है कि राग तिरंगा ७२१ पृष्ठ, राग श्री पृष्ठ २४, राग असावरी घोषणा करते हैं कि नानक का एक अलग गुरु है और वह कबीर थे लेकिन हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि कबीर और गुरु नानक असल जिंदगी में कभी नहीं मिले। फिर नानक कबीर के शिष्य कैसे बने। इसके बजाय यह सिख धर्म संत कबीर को ही संत मानते हैं, वे उन्हें कभी भी रामपाल कल्ट की तरह भगवान नहीं मानते हैं।

एक बार फिर रामपाल और उनके कल्ट ने झूठ बोला और अपने फायदे के लिए एक शब्द का अर्थ गलत बनाने की कोशिश की।

अब हम हिंदू धर्म के वेदों के अंतिम संदर्भ में आगे बढ़ेंगे जिसमें रामपाल कल्ट अपने कल्ट भगवान कबीर को दिखाना चाहते हैं।

सबसे पहले हम यह बताना चाहते हैं कि वेद क्या हैं?

वेद हिंदू धर्म की *4* पुस्तकों का सेट है जिसमें सभी का उल्लेख हिंदू धर्म जैसे विश्वास प्रणाली, अभ्यास, अनुष्ठान, देवताओं के लिए भजन है। इन पुस्तकों की रचना विश्वमित्र, वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, अंगिरा, वामदेव और कई अन्य संतों या कवियों ने की थी। यह पुस्तक

संस्कृत भाषा में लिखी गई है क्योंकि सभी ऋषि संस्कृत बोलने वाले थे और इसमे कोई अन्य विदेशी भाषा नहीं थी और इसमें कभी भी इसका शब्द नहीं जोड़ा गया था *(जैसे गुरु ग्रंथ साहिब और फारसी भाषा आदि के मामले में)*। वैदिक देवता गिनती में *(33 अधिक विशिष्ट)* हैं जैसे इंद्र *(राजा)*, अग्नि *(अग्नि)*, वरुण, सोम, रुद्र आदि।

वेदों में भी ब्रह्म का उल्लेख है, जो उच्चतर सिद्धांत है या हम उसे परम सत्य कह सकते हैं। वह भगवान नहीं बल्कि ब्रह्मांड की बाध्यकारी एकता है।

ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या ८४,५४ में दवा किया गया है कि यजुर्वेद अध्याय १४ श्लोक ४ में उल्लेख है कि एक और देवता है जिसकी ब्रह्म और अन्य देवता पूजा करते हैं।

यहां उल्लेखित श्लोक है जहां मनुष्यों को यह स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि जो प्रकाश के स्रोत (हिरंगर्भ) का कारण है, उसकी पूजा करें। यहाँ कबीर नाम के किसी अन्य देवता की पूजा करने वाले किसी देवता या ब्रह्म का कोई उल्लेख नहीं है।

हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भ इति॑ हिरण्यऽग॒र्भः। सम्। अ॒व॒र्त्त॒त॒। अग्रे॑। भू॒तस्य॑। जा॒तः। पतिः॑। एकः॑। आ॒सी॒त्। सः। दा॒धा॒र॒। पृ॒थि॒वीम्। द्याम्। उ॒त। इ॒माम्। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धे॒म॒॥४॥

पदार्थः-(**हिरण्यगर्भः**) हिरण्यानि सूर्यादीनि तेजांसि गर्भे मध्ये यस्य सः। **ज्योतिर्वै हिरण्यम्॥** शत०[६.७.२.१]। **हिरण्यं कस्माद् ध्रियत आयम्यमानमिति वा, ह्रियते जनाज्जनमिति वा, हितरमणं भवतीति वा, हर्यतेर्वा स्यात् प्रेप्साकर्मणः॥** निरु०२।१०॥ (**सम्**) (**अवर्त्तत**) (**अग्रे**) सृष्टेः प्राक् (**भूतस्य**) उत्पन्नस्य (**जातः**) जनकः (**पतिः**) पालकः (**एकः**) असहायोऽद्वितीयः (**आसीत्**) (**सः**) (**दाधार**) धृतवान् (**पृथिवीम्**) प्रकाशरहितं भूगोलादिकम् (**द्याम्**) प्रकाशमयं सूर्यादिकम् (**उत**) (**इमाम्**) वर्त्तमानां सृष्टिम् (**कस्मै**) सुखस्वरूपाय प्रजापतये (**देवाय**) प्रकाशमानाय (**हविषा**) आत्मादिसामग्र्या (**विधेम**) परिचरेम। **विधेमेति परिचरणकर्मा०॥** निघं०३.५॥ निरुक्तकार एवमाह-**हिरण्यगर्भो हिरण्यमयो गर्भो हिरण्मयो गर्भोऽस्येति वा, गर्भो गृभेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा, यदा हि स्त्री गुणान् गृह्णाति गुणाश्चास्या गृह्यन्तेऽथ गर्भो भवति। समभवदग्रे भूतस्य जातः पतिरेको बभूव, स धारयति पृथिवीं दिवं च कस्मै देवाय हविषा विधेमेति व्याख्यातं विधतिर्दानकर्मा॥** निरु०१०।२३। [अयं मन्त्रः शत०७.४.१.१९ व्याख्यातः]॥४॥

अन्वयः-हे मनुष्याः! यथा वयं योऽस्य भूतस्य जातः पतिरेको हिरण्यगर्भोऽग्रे समवर्त्ततासीत् स इमां सृष्टिं रचयित्वोतापि पृथिवीं द्यां दाधार तस्मै कस्मै सुखस्वरूपाय देवाय परमेश्वराय हविषा विधेम तथा, यूयमप्येनं सेवध्वम्॥४॥

भावार्थः-हे मनुष्याः! युष्माभिरस्याः व्यक्तायाः सृष्टेः प्राक् परमेश्वर एव जागरूक आसीत्। जीवा मूर्छिता इवासन्। कारणं चाकाशवत् सुस्थिरं चासीत्। येन सर्वा सृष्टी रचिता, धृता प्रलयसमये भिद्यते, तमेवोपास्यं मन्यध्वम्॥४॥

पदार्थः-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग जो इस (**भूतस्य**) उत्पन्न हुए संसार का (**जातः**) रचने और (**पतिः**) पालन करने हारा (**एकः**) सहाय की अपेक्षा से रहित (**हिरण्यगर्भः**) सूर्यादि तेजोमय पदार्थों का आधार (**अग्रे**) जगत् रचने के पहिले (**समवर्त्तत**) वर्त्तमान (**आसीत्**) था (**सः**) वह (**इमाम्**) इस संसार को रच के (**उत**) और (**पृथिवीम्**) प्रकाशरहित और (**द्याम्**) प्रकाशसहित सूर्यादि लोकों को (**दाधार**) धारण करता हुआ, उस (**कस्मै**) सुखरूप प्रजा पालने वाले (**देवाय**) प्रकाशमान परमात्मा की (**हविषा**) आत्मादि सामग्री से (**विधेम**) सेवा में तत्पर हों, वैसे तुम लोग भी इस परमात्मा का सेवन करो॥४॥

भावार्थः-हे मनुष्यो! तुम को योग्य है कि इस प्रसिद्ध सृष्टि के रचने से प्रथम परमेश्वर ही विद्यमान था, जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत् का कारण अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एकरस स्थिर था, जिसने सब जगत् को रच के धारण किया और जो अन्त्य समय में प्रलय करता है, उसी परमात्मा को उपासना के योग्य मानो॥४॥

इसके बाद ज्ञान गंगा हमें विभिन्न वैदिक ग्रंथों से कुछ श्लोक प्रस्तुत करती है जिसमें कवि शब्द दिखाया गया है और कहा जाता है कि यह कवि शब्द वास्तव में कबीर भगवान है।

हम कविर शब्द और उसके वास्तविक अर्थ का वर्णन करना चाहते हैं। संस्कृत में कविर का शाब्दिक अर्थ कवि होता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वैदिक ग्रन्थों के मण्डल को बताने वाले भिन्न-भिन्न ऋषि थे जो कवि थे, इन बुद्धिमान और दार्शनिक कवियों ने एक कवि के रूप में ईश्वर की कल्पना की थी। यह सरल है कि वे कवि थे इसलिए उन्होंने अपने प्रतिबिंब में ईश्वर की दिव्य कवि के रूप में कल्पना की है।

तो कविर का मतलब संस्कृत में दिव्य कवि है। लेकिन जैसा कि हम पहले ही कई बार पढ़ चुके हैं कि अरबी-हिब्रू शब्द कबीर का अर्थ कवि नहीं है जो व्याकरण की दृष्टि में रामपाल कल्ट के दावे को गलत और बेधंगा साबित करता है।

लेकिन ज्ञान गंगा ने एक नकली तर्क के साथ अपने बयान का मुकाबला करने की कोशिश की कि महर्षि दयानंद सरस्वती (आर्य समाज के संस्थापक) ने भी देवर-काम शब्द को देवर कामना में बदलकर अपनी पुस्तक में एक बदलाव किया था। अतः व्याकरण अपने आप में त्रुटिपूर्ण रहता है।

कृपया इस दावे को ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *91* पर पढ़ें।

कि पलवल को कैसे परवर सिद्ध कर दिया। वहां कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया कहना मात्र है। जैसे क्षेत्रिय भाषा में पलवल शहर को परवर कहते हैं। इसी प्रकार कविर् को कबीर बोलते हैं, प्रभु वही है। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास 4 पृष्ठ 100 पर (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित पर) ''देवृकामा''का अर्थ देवर की कामना करने किया है देवृ को पूरा '' र '' लिख कर देवर किया है। कविर् को कविर फिर भाषा भिन्न कबीर लिखने व बोलने में कोई आपत्ति या व्याकरण की त्रुटि नहीं है। पूर्ण परमात्मा कविर्देव है, यह प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 तथा सामवेद संख्या 1400 में भी है जो निम्न है :-

यजुर्वेद के अध्याय नं. 29 के श्लोक नं. 25 (**संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य**) :-

समिद्धोऽद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

इधर रामपाल और ज्ञान गंगा ने अनजाने में एक गंभीर और आत्म-विनाशकारी गलती की है।

देवृ शब्द हिंदी में लिखा है देवर को अक्षर द + ऐ + व + ऋ में विच्छेदित किया जा सकता है जो पति के भाई के लिए संस्कृत भाषा में सही है, वही शब्द देवर (देवर) के रूप में लिखा गया है

जब हम संस्कृत शब्दकोष में देवृ शब्द खोजते हैं तो इसका अर्थ वैसा ही होता है जैसा स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था।



तो प्रमाण के साथ हमने निष्कर्ष निकाला है कि दयानंद सरस्वती देवरकाम वर्तनी के बारे में नकली दावा इस कल्ट पुस्तक की सबसे बड़ी गलती है। जिधर दयानंद सरस्वती की वर्तनी सही थी और ज्ञान गंगा कबीर शब्द और कवि शब्द के बारे में गलत दावा अभी भी संदिग्ध है क्योंकि अरबी हिब्रू मूल के कबीर शब्द को क+ब+ई+र में विभाजित किया जा सकता है, जबकि संस्कृत शब्द कविर को क+इ+व+र के रूप में विच्छेदित किया जा सकता है। इधर व और ई दोनों शब्दों में दो अक्षर भिन्न हैं। अगर अभी भी पागल रामपाल के कल्ट वाले कहेंगे कि इसका मतलब यह नहीं है कि हम यह नहीं कह सकते कि कबीर और कविर अलग हैं, यह सिर्फ एक शब्द है। लेकिन भाषा के मामले में यह मजाक नहीं चलता। जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि किन्हीं दो भाषाओं में कुछ शब्द हो सकते हैं जो ध्वन्यात्मक या अक्षर के मामले में समान हो सकते हैं लेकिन आपको उनका अर्थ देखना होगा नही तो गंभीर त्रुटि हो सकती है। इन समान दिखने वाले शब्दों को भाषा विज्ञान में होमोफोन्स नाम दिया गया है।

उदाहरण के लिए कृपया विभिन्न भाषाओं में समान दिखने वाले कुछ शब्दों को देखें।

संस्कृत में राज (राज) का अर्थ है राज्य पर शासन और उर्दू में राज (राज) का अर्थ है गुप्त।

उदहारण के तौर पर अगर मैं अयोध्या में राम का राज जैसी कोई पंक्ति कहूं (अयोध्या में राम का राज है) तो आसानी से समझा जा सकता है कि यहाँ उर्दू के शब्द राज का प्रयोग नहीं हुआ है क्योंकि यदि बाद का शब्द होता तो यह अनुवाद होता (अयोध्या में राम का रहस्य है)।

हम आपको भाषा की गलती का एक ऐतिहासिक संदर्भ देंगे जो घातक साबित हुई थी।

महाराष्ट्र में पेशवा नारायण राव के शासनकाल के दौरान, उनके चाचा रघुनाथ राव उनके लिए कार्यकारी राजा के तौर पर कार्य कर रहे थे। किंवदंती और कुछ संदर्भ कहते हैं कि उनके चाचा रघुनाथ राव की महत्वाकांक्षी पत्नी ने कुछ शाही सिपाहियों को अपने महल में जवान नारायण राव को पकड़ने का आदेश दिया। रघुनाथ राव ने अपने सिपाहियों को एक संदेश भेजा और संदेश मराठी भाषा में नारायण रावना धरा (नारायण राव को पकड़ो) था, लेकिन बीवी ने इस संदेश को बीच मे ही शब्द बदल दिया और फिर संदेश नारायण रावना मारा (नारायण राव को मारो) बन गया। और इसलिए सिपाहियों ने गलतफहमी के कारण नारायण राव की हत्या कर दी।

अब आप समझ सकते हैं कि संदर्भ को समझने के लिए सही अक्षर उपयोग के साथ शब्द का अर्थ क्यों बहुत आवश्यक है..

यह कुछ अलग अलग भाषाओं के बीच कुछ होमोफोन्स की सूची है।

राज (संस्कृत में राज्य पर शासन) और राज (उर्दू में रहस्य)

पता (उर्दू में पता) और पत्ता (उर्दू में पत्ता)

हरि (भगवान का नाम संस्कृत में हिंदू पाठ में) और हरी (उर्दू में रंग हरा)

सागर (फारसी में प्याला) और सागर (संस्कृत में समंदर)

कविर (फारसी में रेगिस्तान) और कविर (संस्कृत में कवि)

अब आप समझ सकते हैं कि पवित्र पुस्तको में शब्द के अपने अनुवादों को कॉपी करने का यह कारनामा उन्हें भ्रष्ट और अपवित्र करने के समान है और ऐसे छल पूर्ण काम कौन लोग करते है??

अब आप यहाँ यजुर्वेद अध्याय २९ मंत्र २५, ज्ञान गंगा के उपरोक्त मंत्र में आप देख सकते हैं कि यह शब्द कविर्देव (जो मूल मंत्र (कवीरसी) में केवल कविरासी है) और कबीर शब्द या भगवान कबीर से जुड़े शब्दों के साथ जोड़ा गया है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वहिन मरूतो गणेन।

कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।। 17।।

शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मृजन्ति शुम्भन्ति वहिन मरूतः गणेन।

कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।।

अनुवाद - पूर्ण परमात्मा (हर्य शिशुम्) विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में (जज्ञानम्) जान बूझ कर प्रकट होता है तथा अपने तत्वज्ञान को (तम्) उस समय (मृजन्ति) निर्मलता के साथ (शुम्भन्ति) उच्चारण करता है। (वहि) प्रभु प्राप्ति की लगी विरह अग्नि वाले (मरुतः) भक्त (गणेन) समूह के लिए (काव्येना) कविताओं द्वारा कवित्व से (पवित्रम् अत्येति) अत्यधिक वाणी निर्मलता के साथ (कविर गीर्भि) कविर वाणी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (रेभन्) ऊंचे स्वर से सम्बोधन करके बोलता है, (कविर् सन्त् सोमः) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही संत अर्थात् ऋषि रूप में स्वयं कविर्देव ही होता है। परन्तु उस परमात्मा को न पहचान कर कवि कहने लग जाते हैं। परन्तु वह पूर्ण परमात्मा ही होता है। उसका वास्तविक नाम कविर्देव है।

प्रमाण - 1. पवित्र यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 -

समिद्धोऽअद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।

आ च वह मित्रामहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।। 25।।

समिद्धः-अद्य-मनुषः-दुरोणे-देवः-देवान्-यज्-असि- जात-वेदः-आ- च-वह- मित्रामहः-चिकित्वान्-त्वम्-दूतः- कविर्-असि-प्रचेताः।

अनुवाद - (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्रा विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, अग्नि जला कर भस्म कर देती है ऐसे साधक का जीवन शास्त्राविरूद्ध साधना नष्ट कर देती है। उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु , (मित्रामहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा के (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात् यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर) कबीर (असि) है।

अब असली अनुवाद देखिए।

धर्मात्मा लोग क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

समिद्धोऽअद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः।

आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः॥ २५॥

समिद्ध इति समऽइद्धः। अद्य। मनुषः। दुरोणे। देवः। देवान्। यजसि। जातवेद इति जातऽवेदः। आ। च। वह। मित्रमह इति मित्रऽमहः। चिकित्वान्। त्वम्। दूतः। कविः। असि। प्रचेता इति प्रऽचेताः॥ २५॥

पदार्थः-(**समिद्धः**) सम्यक् प्रकाशितः (**अद्य**) इदानीम् (**मनुषः**) मननशीलः (**दुरोणे**) गृहे (**देवः**) विद्वान् (**देवान्**) विदुषो दिव्यगुणान् वा (**यजसि**) सङ्गच्छसे (**जातवेदः**) प्राप्तप्रज्ञ (**आ**) (**च**) (**वह**) प्राप्नुहि (**मित्रमहः**) मित्राणि महयति पूजयति तत्सम्बुद्धौ (**चिकित्वान्**) विज्ञानवान् (**त्वम्**) (**दूतः**) यो दुनोति तापयति दुष्टान् सः (**कविः**) कान्तप्रज्ञो मेधावी (**असि**) (**प्रचेताः**) प्रकृष्टञ्चेतः संज्ञानमस्य सः॥ २५॥

अन्वयः-हे जातवेदो मित्रमहो विद्वंस्त्वमद्य समिद्धोऽग्निरिव मनुषो देवः सन् यजसि, चिकित्वान् दूतः प्रचेताः कविर्दुरोणेऽसि, स त्वं देवांश्चावह॥ २५॥

भावार्थः-यथाऽग्निर्दीपादिरूपेण गृहाणि प्रकाशयति, तथा धार्मिका विद्वांसः स्वानि कुलानि प्रदीपयन्ति, ये सर्वैः सह मित्रवद्वर्तन्ते त एव धार्मिकाः सन्ति॥ २५॥

पदार्थः-हे (**जातवेदः**) उत्तम बुद्धि को प्राप्त हुए (**मित्रमहः**) मित्रों का सत्कार करने वाले विद्वन्! जो (**त्वम्**) आप (**अद्य**) इस समय (**समिद्धः**) सम्यक् प्रकाशित अग्नि के तुल्य (**मनुषः**) मननशील (**देवः**) विद्वान् हुए (**यजसि**) सङ्ग करते हो (**च**) और (**चिकित्वान्**) विज्ञानवान् (**दूतः**) दुष्टों को दुःखदाई (**प्रचेताः**) उत्तम चेतनता वाला (**कविः**) सब विषयों में अव्याहतबुद्धि (**असि**) हो सो आप (**दुरोणे**) घर में (**देवान्**) विद्वानों वा उत्तम गुणों को (**आ, वह**) अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये॥ २५॥

भावार्थः-जैसे अग्नि दीपक आदि के रूप में घरों को प्रकाशित करता है, वैसे धार्मिक विद्वान् लोग अपने कुलों को प्रकाशित करते हैं। जो सब के साथ मित्रवत् वर्त्तते हैं, वे ही धर्मात्मा हैं॥ २५॥

अंत में हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि पवित्र पुस्तकों के अर्थ को रूपांतरित करने और इन अर्थ का अनर्थ कर डालने में रामपाल कल्ट कितना चतुर है। वे सहजता से अर्थों में हेरफेर कर रहे हैं और अपनी सहजता के लिए उन लोगों को मूर्ख बना रहे हैं जो भाषा में इस तरह की जटिलता को नहीं समझते हैं।

भाग **5 :** रामपाल एक मसीहा **???**

रामपाल का कल्ट और उनकी पुस्तक ज्ञान गंगा दो दावे पेश करते हैं। सबसे पहले, कि उनके कल्ट भगवान कबीर ही हर धर्म के असली भगवान हैं लेकिन हम इससे पहले ही हर आधार पर इस दावे का भंडाफोड़ कर चुके हैं।

उनका दूसरा दावा यह है कि रामपाल इस सर्वोच्च परमेश्वर कबीर के प्रतिनिधि हैं और यह भी कि वे वही मसीहा हैं जिनका उल्लेख कई भविष्यवाणियों में किया गया है। अब हम रामपाल के इस दावे को खारिज करेंगे और साबित करेंगे कि कैसे एक बार फिर रामपाल कल्ट ने न सिर्फ ग्रंथों के अर्थ को बदल दिया, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की मदद से भी झूठे पात्रों और किताबों को भी बनाया।

सबसे पहले हम न्यू जर्सी के चरित्र फ्लोरेंस (Florence) के बारे में देखेंगे जिसका उल्लेख ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 9 पर है। फ्लोरेंस का उल्लेख रामपाल के सत्संग के एक वीडियो में किया गया है।

ज्ञान गंगा के अनुसार अमेरिका के न्यू जर्सी की एक महिला जिनका नाम फ्लोरेंस था उनका दावा था कि वह एक पैगंबर थीं जो आने वाले भविष्य को देख सकती थी। कृपया ध्यान दें कि ज्ञान गंगा का दावा है कि फ्लोरेंस ने दो किताबें "द फॉल ऑफ संसेशनल कल्चर" और "गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा" लिखी थीं।

फ्लोरेंस ने एक आगामी भविष्य में एक दुखद दुनिया के बारे में भविष्यवाणी की थी जो 2000 साल बाद शुरू होगी। इस दुनिया में हिंसा, पागलपन, ईर्ष्या और अपराध जैसे सभी तत्व होंगे। लेकिन भारत के संत के एक नए दर्शन के कारण यह पागलपन रुक जायेगा और वो दुनिया में शांति लाएंगे। यह संदर्भ फ्लोरेंस की पुस्तक द फॉल ऑफ संसेशनल कल्चर से है।

ज्ञान गंगा अपने पृष्ठ 10 पर फ्लोरेंस के बारे में बताती है की उसने एक भविष्यवाणी की थी कि भारत के इस संत के हुलिया कुछ इस प्रकार होगा "बिना दाढ़ी और मूंछें कम, सफेद बालों वाला, रोशन चेहरे वाला"। फ्लोरेंस ने यह भी कहा कि यह संत वैज्ञानिक तरीके से अपना काम करेगा और यह संत प्राकृतिक प्रक्रिया में हेरफेर भी कर सकता है।

अगर आप फ्लोरेंस की यह पूरी फर्जी कहानी पढ़ना चाहते हैं तो आप इसे ज्ञान गंगा पेज 9 पर पढ़ सकते हैं।

लेकिन क्या होगा अगर मैं आपसे कहूं कि फ्लोरेंस नाम की कोई महिला कभी दी ही नहीं*?????*

जी हां यह एक चौंकाने वाला तथ्य है लेकिन यह *100%* सच है कि फ्लोरेंस नाम की इस महिला की पूरी कहानी एक नकली और फ्रॉड कहानी है।

कैसे*?*

आज का दौर आधुनिक इंटरनेट का दौर है जिसमे किसी भी तथ्य को ढूंढा भी जा सकता है और इसी इंटरनेट के जरिए किसी को भी मूर्ख भी बनाया जा सकता है। मैंने फ्लोरेंस पर उपलब्ध सभी जानकारी को ऑनलाइन *(*गूगल*)* पर क्रॉस चेक किया है और जानते है की मुझे क्या मिला*??*

कुछ भी नही*!!!!!*

एक भी ऑनलाइन परिणाम मुझे फ्लोरेंस नाम की एक महिला तक नहीं ले जा सका जो न्यू जर्सी में रहती थी या वह एक पैगंबर थी जो भविष्य देख सकती है।

उसके बाद मैं ने फ्लोरेंस की लिखी किताबें यानी *"*द फॉल ऑफ सेंसेशनल कल्चर*"* और *"*गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा*"* को प्रत्येक राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय शॉपिंग प्लेटफॉर्म *(*फ्लिपकार्ट, अमेज़ॅन आदि*)* पर खोज करी और जानते है की मेरे हाथ क्या लगता है*?*

फिर से मुझे कुछ नहीं मिला *!!!!!*

फ्लोरेंस नाम के लेखक वाली किसी भी किताब का कोई भी वजूद नहीं था। और क्या आप जानते हैं कि जब मैंने फ्लोरेंस या उसकी किताबों के नाम की खोज की तो मुझे वास्तव में क्या मिला *??*

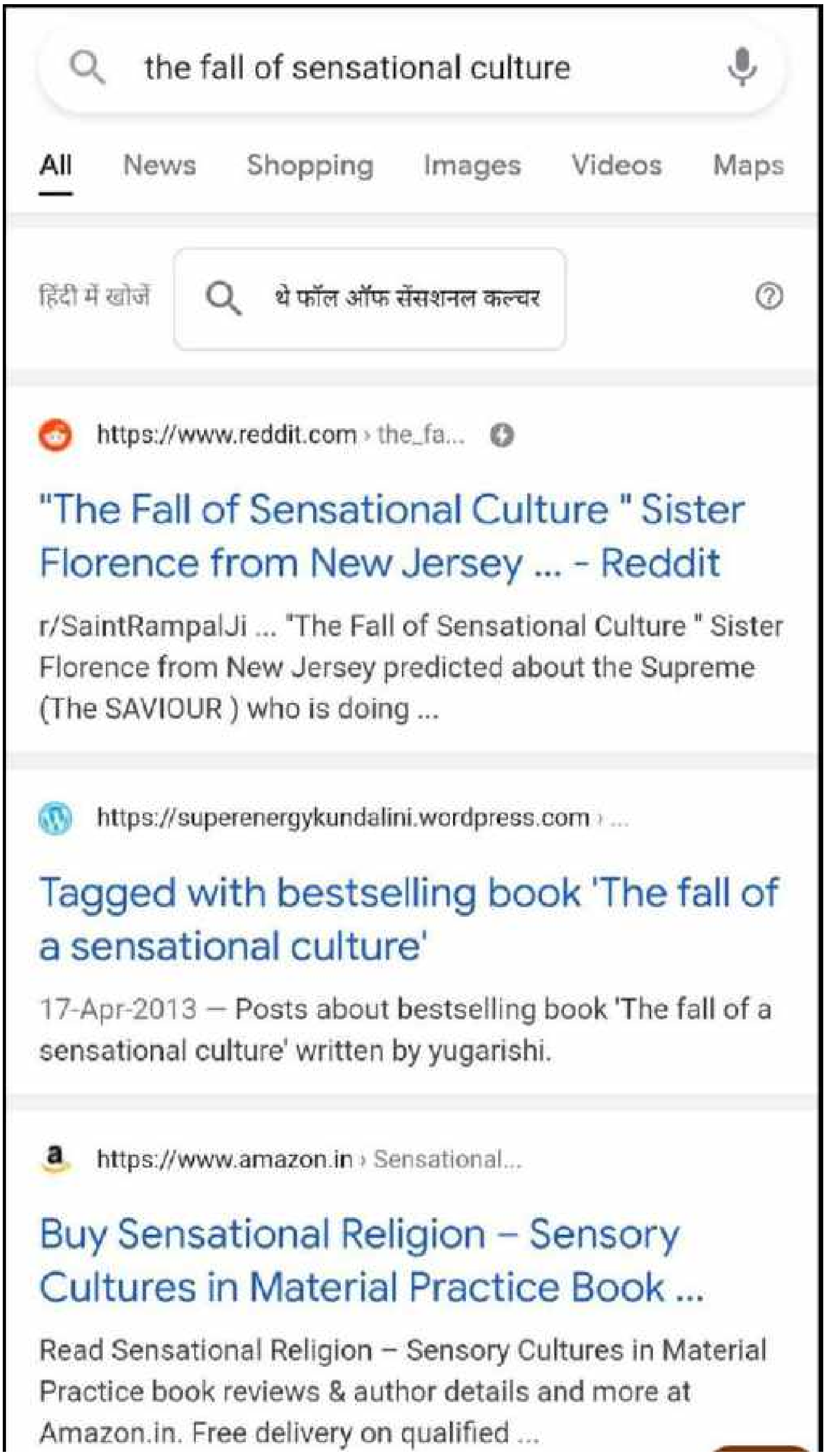
मैंने पाया कि कुछ रेडिट ब्लॉग, फेसबुक पोस्ट, ट्विटर ट्वीट, वर्डप्रेस ब्लॉग और बहुत सारे सोशल नेटवर्किंग साइट के संदर्भ खुद रामपाल कल्ट के सदस्यों द्वारा ही लिखे गए हैं, जो फ्लोरेंस के बारे में एक ही शब्द बार बार दोहरा कर स्पैमिंग कर रहे थे।

इसका मतलब साफ़ है की फ्लोरेंस नाम के चरित्र के लिए सारे सबूत सोशल नेटवर्किंग साइट्स के ही पोस्ट्स है जो की किसी के भी द्वारा लिखे जा सकते है और फ्लोरेंस नाम का किरदार कभी भी असली नहीं था, बल्कि एक खुद से घड़ा हुआ नकली किरदार था।

मेरा अब कल्ट सदस्यों और अन्य लोगों के लिए बहुत छोटा सा सवाल है कि अगर फ्लोरेंस असली नहीं है, तो ज्ञान गंगा ने उसकी भविष्यवाणी के बारे में दावा क्यों किया *??*

अगर वह असली है तो उसके अस्तित्व का कोई भी सबूत क्यों नहीं है *??*

कृपया मेरी खोज के नीचे स्क्रीनशॉट देखें।



the fall of sensational culture
All
News
Shopping
Images
Videos
Maps
हिंदी में खोजें
थे फॉल ऑफ सेंसशनल कल्चर
https://www.reddit.com › the_fa...
"The Fall of Sensational Culture " Sister Florence from New Jersey ... - Reddit
r/SaintRampalJi ... "The Fall of Sensational Culture " Sister Florence from New Jersey predicted about the Supreme (The SAVIOUR) who is doing ...
https://superenergykundalini.wordpress.com › ...
Tagged with bestselling book 'The fall of a sensational culture'
17-Apr-2013 — Posts about bestselling book 'The fall of a sensational culture' written by yugarishi.
https://www.amazon.in › Sensational...
Buy Sensational Religion – Sensory Cultures in Material Practice Book ...
Read Sensational Religion – Sensory Cultures in Material Practice book reviews & author details and more at Amazon.in. Free delivery on qualified ...

amazon.in prime

the golden light of new era

Filters

RESULTS

Price and other details may vary based on size and colour

The New Golden Era of Light: Completion NOW! (I AM Somebody Book 3)
by Lisa Manfrede Smith

1

Kindle Edition

₹0

Free with Kindle Unlimited membership

Or ₹209 to buy

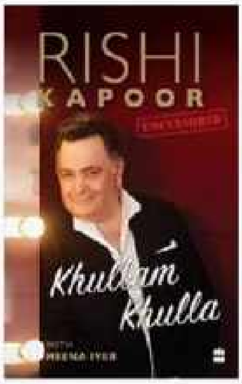
1 Other format: Paperback

I Am Somebody (New Golden Era of Light)
by Lisa Lillian Manfrede

2

Paperback

1 Other format: Kindle Edition



Khullam Khulla: Rishi Kapoor Uncensored
by Rishi Kapoor

642

Kindle Edition

₹284.05 Save ₹194.95 (41%)

Available instantly

3 Other formats: Audible Audiobook, Hardcover, Paperback

Twitter app · *Installed*

Kushal on Twitter ...

26-Dec-2019 — ... has predicted in her book " Golden Light of New Era": A great saint will be born in India, who will establish peace in the world. And that ...

Twitter app · *Installed*

Himani Singh on Twitter: "#SaviorOfTheWorld The world ...

28-Apr-2018 — In her book 'Golden light of a new era' she wrote about an Indian Saint.. In...

---

https://www.kooapp.com › -PQQF

The prophet Florence wrote in his book "Golden light of New Era" that the ...

The prophet Florence wrote in his book "Golden light of New Era" that the ideology of a saint would bring peace to the whole world and would also curb ...

उसके बाद हम ज्ञान गंगा का अगला दावा देखेंगे जो ज्ञान गंगा पृष्ठ 12 पर है। इस दावे में ज्ञान गंगा ने हमें भाई बाला की साखी के संदर्भ के बारे में बताया जिसमें नानक और मरदाना भगत प्रह्लाद के लोक में जाते हैं और प्रह्लाद उन्हें एक मसीहा के बारे में बताते हैं, जो संत कबीर और गुरु नानक देव की तरह फिर से अपना ज्ञान प्रकाश फैलाएंगे। वह जाट जाति से होगा और बटाला शहर में पैदा होगा। यहां रामपाल पंथ की पुस्तक ज्ञान गंगा का दावा है कि बटाला गलत छपा है और यह बरवाला होना चाहिए। ज्ञान गंगा के अनुसार इसके पीछे का कारण यह है कि बरवाला प्रसिद्ध स्थान नहीं था और बटाला था तो कहानीकार ने बटाला को चुना था।

इसके बाद ज्ञान गंगा ने घोषणा की कि भाई बाला साखी में रामपाल का उल्लेख है, क्योंकि वह जाति से जाट है और रोहतक, हरियाणा में पैदा हुआ था जो पहले पंजाब का हिस्सा था और उनके ज्ञान प्रसार का एक केंद्र बरवाला है।

मुख्य बिंदु पर जाने से पहले, हम भाई बाला साखी में उपरोक्त सभी व्यक्तियों पर चर्चा करना चाहते हैं।

सबसे पहले हम साखी *(किंवदंती)*, भाई बाला के लेखक को देखेंगे। भाई बाला जो गुरु नानक के बचपन के दोस्त माने गए है और उनकी यात्रा में गुरु नानक के लंबे जीवन साथी थे।

दूसरे व्यक्ति हैं मर्दाना, जो गुरु नानक के साथी और भक्त भी थे।

तीसरा प्रहलाद है, जो पुराणों जैसे कई हिंदू ग्रंथों के अनुसार नारायण का भक्त और राक्षस हिरण्यकश्यप का पुत्र था। हिरण्यकश्यप से उसके जीवन को बचाने के लिए, नारायण स्वयं भगवान नरसिंह के रूप में प्रकट हुए और राक्षस को मार डाला। प्रहलाद को आज भी भगवान के सबसे बड़े भक्तों में गिना जाता है।

अब हम आगे बढ़ेंगे और सिख साहित्य विशेषज्ञ की सलाह को देखेंगे। सिख जानकारों के मुताबिक असल जिंदगी में कोई भाई बाला नहीं था।

चौंक गए न *????*

हाँ लेकिन यह सच है।

भाई मणि सिंह पुस्तक भगत रत्नावली सूची और भाई गुरदास सूची के अनुसार, हम कह सकते हैं कि वे दोनों भाई बाला नाम के किसी भी व्यक्ति को नहीं जानते थे। डॉ कृपाल स्टडी द्वारा इस विषय पर बहुत चर्चा की गई है। यह इसके लिए लिंक है

https://web.archive.org/web/20120301121457/http://sikhnerd.com/downloads/sikh/janamsakhi_tradition_dr_kirpal_singh.pdf

सिख इतिहास साहित्य विशेषज्ञों के अनुसार, भाई बाला जन्म साखी को सिख परंपरा को बदनाम करने के लिए गुरु गोविंद सिंह के समय में बनाया गया था जिसकी वजह थी जादू मंत्र और अन्य अन्धविश्वास को सिख परम्परा का हिस्सा बनाना था।

इसलिए सिख विशेषज्ञ भाई बाला के अस्तित्व को नकारते हैं। यह रामपाल पंथ के सदस्यों के लिए काफी चौंकाने वाला तथ्य है *!!!!!*

लेकिन पंथ के सदस्य फिर भी कहेंगे कि ये विशेषज्ञ नकली हैं और यह साखी असली है।

तो अब चर्चा करेंगे इस साखी की बात की ...

सबसे पहले इस सखी में प्राथमिक त्रुटि यह है कि जिस प्रहलाद के ऊपर प्रहलाद के लिए एक अलग लोक बताया गया है, जो हिंदू पवित्र ग्रंथ पुराणों के अनुसार गलत है। प्रहलाद जी अपने अंत समय के बाद निर्वाण *(*भगवान नारायण का निवास*)* में चले जाते है। निर्वाण वैष्णव या हिंदू भगवान नारायण में आस्था रखने वाले सभी लोगों के लिए एक जगह है।

विष्णु पुराण अध्याय 2 से नीचे दिया गया संदर्भ देखें।

श्रीपराशर उवाच

इत्युक्त्वान्तर्दधे विष्णुस्तस्य मैत्रेय पश्यतः ।
स चापि पुनरागम्य ववन्दे चरणौ पितुः ॥ २९
तं पिता मूर्ध्न्युपाघ्राय परिष्वज्य च पीडितम् ।
जीवसीत्याह वत्सेति बाष्पार्द्रनयनो द्विज ॥ ३०
प्रीतिमांश्चाऽभवत्तस्मिन्ननुतापी महासुरः ।
गुरुपित्रोश्चकारैवं शुश्रूषां सोऽपि धर्मवित् ॥ ३१
पितर्युपरतिं नीते नरसिंहस्वरूपिणा ।
विष्णुना सोऽपि दैत्यानां मैत्रेयाभूत्पतिस्ततः ॥ ३२
ततो राज्यद्युतिं प्राप्य कर्मशुद्धिकरीं द्विज ।
पुत्रपौत्रांश्च सुबहूनवाप्यैश्वर्यमेव च ॥ ३३
क्षीणाधिकारः स यदा पुण्यपापविवर्जितः ।
तदा स भगवद्ध्यानात्परं निर्वाणमाप्तवान् ॥ ३४
एवं प्रभावो दैत्योऽसौ मैत्रेयासीन्महामतिः ।
प्रह्लादो भगवद्भक्तो यं त्वं मामनुपृच्छसि ॥ ३५
यस्त्वेतच्चरितं तस्य प्रह्लादस्य महात्मनः ।

श्रीपराशरजी बोले—हे मैत्रेय! ऐसा कह भगवान् उनके देखते-देखते अन्तर्धान हो गये; और उन्होंने भी फिर आकर अपने पिताके चरणोंकी वन्दना की ॥ २९ ॥ हे द्विज! तब पिता हिरण्यकशिपुने, जिसे नाना प्रकारसे पीड़ित किया था उस पुत्रका सिर सूँघकर, आँखोंमें आँसू भरकर कहा—'बेटा, जीता तो है!' ॥ ३० ॥ वह महान् असुर अपने कियेपर पछताकर फिर प्रह्लादसे प्रेम करने लगा और इसी प्रकार धर्मज्ञ प्रह्लादजी भी अपने गुरु और माता-पिताकी सेवा-शुश्रूषा करने लगे ॥ ३१ ॥ हे मैत्रेय! तदनन्तर नृसिंहरूपधारी भगवान् विष्णुद्वारा पिताके मारे जानेपर वे दैत्योंके राजा हुए ॥ ३२ ॥ हे द्विज! फिर प्रारब्धक्षयकारिणी राज्यलक्ष्मी, बहुत से पुत्र-पौत्रादि तथा परम ऐश्वर्य पाकर, कर्माधिकारके क्षीण होनेपर पुण्य-पापसे रहित हो भगवान्का ध्यान करते हुए उन्होंने परम निर्वाणपद प्राप्त किया ॥ ३३-३४ ॥

हे मैत्रेय! जिनके विषयमें तुमने पूछा था वे परम भगवद्भक्त महामति दैत्यप्रवर प्रह्लादजी ऐसे प्रभावशाली हुए ॥ ३५ ॥ उन महात्मा प्रह्लादजीके इस चरित्रको जो पुरुष

सवाल अब ये उठता है की अगर प्रह्लाद निर्वाण में चले जाते है तो वह एक अलग लोक कैसे हो गया, निर्वाण यानि विष्णु लोक जहा पर अनेको विष्णु भक्त जाते है। लेकिन ज्ञान गंगा के अनुसार जहां केवल 3 व्यक्ति ही आए थे , नानक मरदाना और प्रह्लाद ???

हम कल्ट के लोगों से यह भी पूछते की वह अपने ज्ञान गंगा के लोक वाले फर्जी नक्शे में भी जरा यह लोक दिखाए।

ध्यान देने वाली दूसरी बात यह है कि ज्ञान गंगा आपको यह मानने के लिए मजबूर करती है कि बटाला शब्द बदल गया है और इसका कारण यह है कि बटाला प्रसिद्ध स्थान था और बरवाला नहीं था। मैंने अब तक का सबसे बेतुका और मजेदार तर्क यही सुना है!!!!!

इस उदाहरण की इस मदद से समझ करें कि मैं एक ऐसे क्षेत्र में रह रहा हूं जो बहुत दूर है और साफ-सुथरा नहीं है, इसलिए मैं अपने मित्र को पास के शहर में मुझसे मिलने का सुझाव देता हूं और फिर अपने मित्र को यह दावा करता हूं कि यह शहर ही मेरा असली और परमानेंट निवास है। क्या इससे उस शहर का पता ही मेरा स्थायी पता बन जाएगा और मेरी बात सच्ची और जायज बन जाएगी ?

वादा किए गए मसीहा से संबंधित भविष्यवाणी इतनी गलत कैसे हो सकती है।

मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि रामपाल पंथ इस तरह के बकवास तर्क कहां से गढ़ता है। भले ही हम मान लें कि बटाला शब्द बदल गया था, फिर भी रामपाल बरवाला में पैदा नहीं हुआ था, वह सोनीपत में पैदा हुआ था जैसा कि ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *13* पर लिखा है, और इस बात का कोई प्रमाण नहीं की बरवाला और सोनीपत कभी एक जिले होते थे,कम से कम गुरु नानक के ज़माने में तो नहीं।

इनके बाद हम पृष्ठ 144 पर दिए गए कुछ और संदर्भ देखेंगे, जहां ज्ञान गंगा दावा करते हैं कि प्रसिद्ध भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस भी रामपाल के बारे में वादा किए गए मसीहा के रूप में संकेत देते हैं।

पृष्ठ संख्या 144 -149 पर, एक संक्षिप्त और विविध संदर्भ है जिसमें एक चरित्र शायरन (chyren) का उल्लेख किया गया है। ज्ञान गंगा बहुत जोर देकर दावा करती है हैं कि शायरन एक महान संत होंगे और सभी को गहन ज्ञान प्रदान करेंगे। शायरन रामपाल (मध्यम आयु का आदमी, सफेद बाल आदि) की तरह दिखेगा। chyren से सभी दुनिया के प्रमुख डरेंगे और वह भारत (तीन जल चिन्ह वाली भूमि) में पैदा होगा। अगर आप वाकई इस बकवास को पढ़ना चाहते हैं, तो ज्ञान गंगा किताब पढ़ सकते हैं।

मैं इसे बकवास क्यों कह रहा हूँ *??* सबसे पहले मैं यह बताना चाहता हूं कि नास्ट्रेडम्स की पुस्तक में शायरन शब्द केवल *5* बार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से *4* बार आता है।

यहां नास्त्रेदमस की किताब द प्रोफेसिस विद ओरिजिनल फ्रेंच ट्रांसलेशन का हिस्सा है जिसमे शब्द शायरन के साथ सीधा संदर्भ दिखता है*:-*

Century 2:79 -

The beard frizzled and black through skill

Will subjugate the cruel and proud people:

The great Chyren will remove from far away

All those captured by the banner of Selin

Century 4:34 -

The great one of the foreign land led captive,

Chained in gold offered to King Chyren:

He who in Ausonia, Milan will lose the war,

And all his army put to fire and sword.

Century 6:27 -

Within the Isles of five rivers to one,

Through the expansion of the great Chyren Selin:

Through the drizzles in the air the fury of one,

Six escaped, hidden bundles of flax.

Century 6:70 -

Chief of the world will the great Chyren be,

Plus Ultra behind, loved, feared, dreaded:

His fame and praise will go beyond the heavens,

And with the sole title of Victor will he be quite satisfied.

Century 8:54 -

Under the color of the marriage treaty,

a magnanimous act by the Chyren Selin:

St. Quintin and Arras recovered on the journey;

By the Spanish a second butcher's bench is made.

आप आसानी से देख सकते हैं कि नास्त्रेदमस ने कभी भी शायरन की उम्र के बारे में घोषणा नहीं की, बल्कि वह कहता है कि शायरन दाढ़ी और काले रंग के साथ होगा (रामपाल की कोई दाढ़ी नहीं है और न ही वह काले रंग का है) लेकिन रामपाल और उनकी कल्ट पुस्तक शायरेन के बारे में झूठ बोलते हैं और इसमें इस भाग को जबरन जोड़ते है।

नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियां कहती हैं कि शायरेन एक राजा होगा और भयभीत करने वाला होगा लेकिन हम सभी जानते हैं कि रामपाल एक राजा नहीं है और यहां तक कि उनसे कोई भी नहीं डरता है। वह अभी जेल में है और अपने कल्ट के अंध अनुयायियों के अलावा किसी का नेतृत्व नहीं कर रहा है। सभी शयरन भविष्यवाणी रामपाल के पक्ष में नहीं बल्कि उसके विपक्ष में है।

ये वे अप्रत्यक्ष प्रमाण हैं जहाँ रामपाल दावा देते हैं कि शायरन वही है।

Century 10:80 or 10:86 -

Like a griffin will come the King of Europe,

Accompanied by those of Aquilon:

He will lead a great troop of red ones and white ones,

And they will go against the King of Babylon.

Century 4:77 -

Selin monarch Italy peaceful,

Realms united by the Christian King of the World:

Dying he will want to lie in Blois soil,

After having chased the pirates from the sea.

Century 1:50 -

From the three water signs will be born a man

who will celebrate Thursday as his holiday.

His renown, praise, rule and power will grow

on land and sea, bringing trouble to the East.

Century 5:74 -

Of Trojan blood will be born a Germanic heart

Who will rise to very high power:

He will drive out the foreign Arabic people,

Returning the Church to its pristine pre-eminence.

यहाँ भी हम देख सकते हैं कि इस बात का कोई संकेत नहीं है कि शायरन कैसा दिखेगा, लेकिन हर तरफ कुछ बेतुकी बातें हैं।

तीन जल से घिरी भूमि संकेत भविष्यवाणी जिसके बारे में ज्ञान गंगा का दावा है कि यह भारत के संदर्भ में है (जैसा कि आप जानते है की भारत पानी से तीन तरफ से घिरा हुआ है जिसे भूगोल में प्रायद्वीप के रूप में जाना जाता है) लेकिन दुनिया में 100 से अधिक प्रायद्वीप हैं (जैसे अरबी प्रायद्वीप , अफ़्रीकी प्रायद्वीप इत्यादि) तो यह भविष्यवाणी स्थान मानचित्र पर कहीं भी हो सकता है।

और यह भविष्यवाणी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करती है जो गुरुवार को अपनी छुट्टी के रूप में मनाएगा। क्या रामपाल या उनके कल्ट वाले गुरुवार को छुट्टी के रूप में मनाते हैं ????

उसपर ज्ञान गंगा एक और झूठ बोलती है की इधर *thrusday* यानी हिंदी में गुरुवार फिर से एक प्रिंटिंग मिस्टेक है जिसका असली शब्द होने चाहिए था *teacher* या गुरु ????

सोचिये की कल्ट के अंधे अनुयायियों का भाषा ज्ञान कितना हास्यास्पद है ?? असली नोस्ट्राम्दामूस की किताब फ्रेंच में थी जिसमे शब्द अंग्रेजी के टीचर जैसा तो कभी था ही नहीं, और अगर मान भी ले की इधर गुरु शब्द है तो भी इस भविष्यवाणी का अर्थ एक मजाक जैसे बनेगा की तीन सागरो से घिरे पानी में एक आदमी पैदा होगा जो अपने गुरु को अपनी छुट्टी मानेगा। रामपाल शायद अपने बेहूदे मजाक को तत्व ज्ञान समझते है लेकिन भाषा के साथ ये मजाक नहीं चलते।

ये सभी संदर्भ बहुत अस्पष्ट और भ्रमित करने वाले हैं लेकिन फिर भी इनमें से कोई भी रामपाल या उनके कल्ट से संबंधित नहीं हो सकता है।

अंत में हम विभिन्न भविष्यवक्ताओं द्वारा ज्ञान गंगा पृष्ठ *149* पर उल्लिखित सभी भविष्यवाणियां देखेंगे।

मैंने फिर से इन लोगों की खोज की और पाया कि उनमें से ज्यादातर *(*इज़राइल के प्रोफेसर हरारे*,* हंगरी से बोरिश्का आदि*)* न्यू जर्सी के फ्लोरेंस जैसे ही मामले हैं। मेरा मतलब केवल रामपाल के कल्ट सदस्यों द्वारा ब्लॉग और ट्वीट में मौजूद है।😂😂😂😂


https://www.pinterest.com › pin
Divine greatman of India Prophecy of Professor Harare of Israel ... - Pinterest
Kabir Quotes. Divine greatman of India Prophecy of Professor Harare of Israel about Sant Rampal Ji Maharaj The entire world would be bound ...
in.pinterest.com/pin/84822491
जीने की राह
Saint Rampal Ji Maharaj | Satlok Ashram
SatlokHans
THE GREAT CHYREN
JagatguruRampalji.org
WHAT
YUVIKA
EPISODE-1243
SAINT RAMPAL JI MAHARAJ
Shraddha 01-10-2020 || Episode: 1243 || Sant...
Yajurved Chapter 5 Mantra 32 describes God Kabir as the one who is the giver of Supreme Peace / Happiness. He can destroy all the sins.
To know more, Get Free Book "Gyan Ganga"
धरती पर अवतार

कीरो जैसे अन्य जो वास्तविक और मूल भविष्यवक्ता थे, रामपाल ने भारत के लिए सिर्फ नाम और उनकी भविष्यवाणियों को जोड़ा और उन्हें अपने मसीहा के रूप में चित्रित करने के लिए एक प्रलोभन के रूप में जोड़ा।

अंत में हम यही कहेंगे कि रामपाल पंथ झूठ बोलने, शब्दों के अर्थ बदलने और नकली साख बनाने में बहुत माहिर है। सिर्फ तर्क के द्वारा ही व्यक्ति इनके झूठ को पकड़ सकता है नहीं तो इनके जाल में फंस जाएंगे।

भाग **6 :** अथर्ववेद के अंदर सृष्टि रचना के प्रमाण का खंडन

हम पहले ही रामपाल कल्ट के भगवान कबीर अवतार की कहानियों पर चर्चा कर चुके हैं और उन्हें और उसके दूत यानी रामपाल के ऊपर की गई विभिन्न भविष्यवाणियों के बारे में रामपाल का दावे का खंडन कर चुके है । अब हम ब्रह्मांड निर्माण की कहानी पर चर्चा करेंगे जिसका उल्लेख ज्ञान गंगा पुस्तक पृष्ठ संख्या 20 पर किया गया है।

इस कहानी में 3 मुख्य पात्र हैं, एक है कल्ट भगवान जिसे पूर्ण ब्रह्म, कबीर, हक्का कबीर इत्यादि के नाम से भी जाना जाता है।

दूसरा पात्र है काल निरंजन उर्फ ज्योति निरंजन उर्फ कैल उर्फ मौत उर्फ शैतान आदि।

तीसरा पात्र है प्रकृति।

अब हम इस कहानी पर चर्चा करेंगे लेकिन चूंकि यह कहानी बहुत लंबी है, इसलिए हम आपको संक्षेप में बताएंगे।

तो शुरुआत में कल्ट भगवान कबीर मौजूद थे और उन्होंने सतलोक की रचना की। फिर उसने 16 द्वीप बनाए और फिर 16 लड़के पैदा किए। उन्होंने अपने शरीर से आत्माओं को भी बनाया (पृष्ठ संख्या 21)।

फिर इन लड़कों में से एक अचिंत ने अक्षर पुरुष नाम के एक व्यक्ति को बनाया जिसने आगे क्षर पुरुष की रचना की।

इस क्षर पुरुष ने तब कल्ट भगवान कबीर से 21 ब्रह्मांड प्राप्त की। उन्होंने क्षर पुरुष उर्फ ज्योति निरंजन को 3 गुण (स्तव, रजस, तमस) प्रदान किए।

तब क्षर पुरुष ने कल्ट भगवान कबीर से कुछ आत्माओं के लिए अनुरोध किया। लेकिन कल्ट भगवान ने मना कर दिया और कहा कि अगर कोई आत्मा स्वेच्छा से जाना चाहता है तो वह अनुमति दे देंगे। तब एक आत्मा ने स्वेच्छा से उत्तर दिया और बाद में कई आत्माएं ने भी इस आत्मा का अनुसरण किया।

यह पहली आत्मा का नाम प्रकृति रखा गया था और उसे सृजन के लिए विशेष शक्तियां प्रदान की गई थीं। प्रकृति का पालन करने वाली वे आत्माएं उसके शरीर में घुस गई थीं।

इसके बाद प्रकृति जवान हो गई और ज्योति निरंजन उर्फ क्षर पुरुष उसके प्रति आकर्षित हो गए। उसने उसके आत्मा में एक योनि जोड़ दी और उसका यौन शोषण करने की कोशिश की। उसने अपना रूप बदल लिया और क्षर पुरुष उर्फ ज्योति निरंजन के पेट में चली गई और कल्ट

भगवान कबीर को बुलाया। कल्ट भगवान कबीर जोगजीत (उनके पुत्र) के रूप में आए और ज्योति निरंजन के पेट से प्रकृति को बाहर निकाला। फिर उन्होंने ज्योति निरंजन को यौन प्रजनन प्रक्रिया शुरू करने के लिए शाप दिया। उसने उसे श्राप दिया कि वह प्रतिदिन हजार आत्मा खाएगा और उसका नाम काल निरंजन (अदृश्य मृत्यु) रखा और उन दोनों को सतलोक से बाहर निकाल दिया। (ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 24-25 देखें)

इसके बाद ज्योति निरंजन उर्फ काल निरंजन ने प्रकृति के साथ दुष्कर्म किया। काल निरंजन ने कसम खाई कि वह सभी के लिए अदृश्य रहेगा और कभी किसी को अपना चेहरा नहीं दिखाएगा। इस बीच प्रकृति उर्फ दुर्गा ने तीन बच्चों, विष्णु, शिव, ब्रह्मा (हिंदू धर्म त्रिदेव देवताओं) को जन्म दिया और वे पूछना शुरू कर देते हैं कि उनके पिता कौन हैं। प्रकृति उर्फ दुर्गा ने मना कर दिया क्योंकि काल निरंजन ने उसे उसके बारे में कुछ नहीं कहने के लिए धमकी दी थी।

इसलिए तीन देवताओं ब्रह्मा, विष्णु महेश ने अपने पिता को खोजने की कोशिश की, लेकिन नहीं मिले।

इसके बाद सभी त्रिदेव आत्माओं को उत्पन्न करना शुरू कर देते हैं और काल निरंजन उन्हें प्रतिदिन खा रहे हैं।

तो यह वह कहानी है जिसे ज्ञान गंगा पृष्ठ २२ से २५ तक पढ़ा जा सकता है। जाहिर है इन कहानियों का किसी पवित्र ग्रंथ से कोई सिर या पैर नहीं है बल्कि रामपाल कल्ट ने अलग अलग कहानियों को इधर उधर से चुनकर कई संदर्भों के माध्यम से जोड़ने की कोशिश की। इस तरीके को चेरीपिकिंग (cherrypicking) कहते है जो की कुतर्क की तकनीक है जहां कुछ हिस्सा किसी स्रोत से लिया जाता है लेकिन उसी स्रोत के दूसरे हिस्से की उपेक्षा की जाती है, जो कुतर्क को संदिग्ध या आधा सच बनाती हो।

अब हम इस कहानी को सच साबित करने के लिए रामपाल कल्ट द्वारा दिए गए सबूत पर चर्चा करेंगे।

सबसे पहले उन्होंने इस कहानी को अथर्ववेद अध्याय 4 मंत्र 1 से 7 के सन्दर्भ से दिखाने का प्रयास किया जिसमें ज्ञान गंगा हमें बताती है कि कबीर ने सतलोक को बुनकर की तरह बनाया और फिर क्षर पुरुष और अक्षर पुरुष की रचना की।

यहाँ रामपाल कल्ट यह दिखाना चाहता है कि वेन का अर्थ है बुनकर और सत का अर्थ अक्षर पुरुष और असत का अर्थ क्षर पुरुष है।

"पवित्र अथर्ववेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

हालाँकि यह पूरी तरह से गलत अनुवाद है जो रामपाल कल्ट ने किया है। सबसे पहले वेन का मतलब संस्कृत में बुनकर नहीं है। कृपया संस्कृत शब्दकोश का स्क्रीनशॉट देखें जहां वेन का मतलब इच्छा बताया है। लेकिन रामपाल ने बड़ी चतुराई से वेन को वेण वाले शब्द से बदल कर इस अर्थ को जुलाहा बना दिया। शायद अब वह यह कहेंगे की वेन भी गलती से प्रिंट हो गया है।



साथ ही सत और असत शब्द का अर्थ भी वैसा नहीं है जैसा ज्ञान गंगा ने आपको बताया था।

सत का अर्थ है अस्तित्व (जो सभी समय और स्थान में सत्य रहता है) और असत का अर्थ है गैर अस्तित्व (जो सभी समय और स्थान में असत्य रहता है)। लेकिन रामपाल कल्ट ने उन्हें विशेषण नहीं व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है।

और यहाँ भी आप देख सकते हैं कि इस श्लोक में कबीर या कविर जैसा कोई शब्द नहीं लिखा है बल्कि यहाँ ब्रहम लिखा हुआ है। साथ ही यहां सतलोक जैसा कोई शब्द नहीं लिखा है। बस रामपाल की कल्पना और शब्दों का खेल !!!!

तो क्या है इस मंत्र का वास्तविक अर्थ ???

यदि हम इस मंत्र का एक-एक शब्द में अनुवाद करें तो यह इस प्रकार हो जाएगा:

ब्रह्म (सर्वोत्तम सिद्धांत) जज्ञान (ज्ञान के साथ प्रबुद्ध) प्रथम (पहला) पुरस्ताद (शुरू) वि सिमतः (कोने से अलग) सुरुचो (उज्ज्वल प्रकाश) वेन (इच्छा) आवः (आया)

स (यह) बुध्न्या (गहराई से आ रहा है) उपमा (समान) अस्य (यह) विष्ठा (स्थिति) सतश्च योनिमसतच (अस्तित्वगत और गैर अस्तित्वगत उतपन्न) वि वः (इनके अलावा)

अनुवाद : ब्रह्म पहले ज्ञान से प्रबुद्ध हुआ है और इसीलिए इच्छा के उज्ज्वल प्रकाश की वजह समझ से परे हो जाता है। यह (इच्छा) ब्रह्म की तरह गहराई से उत्पन्न होती है और सत-असत को एक-दूसरे से अलग करती है।

यहां हम आसानी से देख सकते हैं कि किसी कबीर भगवान या किसी अन्य भगवान का कोई संदर्भ नहीं है बल्कि एक दार्शनिक विचार है कि इच्छा के कारण ब्रह्मांड कैसे अस्तित्व में आया और कैसे इच्छा की कारण सत और असत की सत्ता बनी है।

रामपाल कल्ट फिर अथरववेद के उसी अध्याय ४ के अन्य ७ मंत्रों का भी बड़ी चतुराई से और अपने ही शब्दों में अनुवाद करता है।

दूसरे मंत्र में देखें ज्ञान गंगा पुस्तक पृष्ठ संख्या 38 का अनुवाद।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :–

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्–पित्र्या–राष्ट्रि–एतु–अग्रे–प्रथमाय–जनुषे–भुवनेष्ठाः–तस्मा–एतम्–सुरुचम् – हवारमह्यम्–धर्मम्–श्रीणान्तु–प्रथमाय–धास्यवे

अनुवाद :– (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना

की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

यहां रामपाल ने फिर से अनुवाद किया कि विश्व के पिता ने राष्ट्र शक्ति (एक महिला शक्ति) का निर्माण किया और उनकी मदद से एक दूसरे को गुणों के साथ आकर्षित करने वाली दुनिया बनाई।

यहाँ आप समझ सकते हैं कि राष्ट्रीय शक्ति नाम की एक नारी शक्ति का संदर्भ है जिसका उल्लेख ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 22 पर भी है जहाँ उसका उल्लेख स्त्री के रूप में किया गया है।

अब अगर हम एक-एक शब्द के अनुसार असली और मूल अनुवाद की ओर मुड़ें तो कहानी काफी अलग है और कल्ट के झूठ को उजागर कर रही है।

इयं (यह) पित्र्या (पैतृक) राष्ट्रयेत्वग्रे (प्रभुत्व शीर्ष) प्रथमाय (प्रथम से) जनुषे (जन्म से) भुवनेष्ठा (सभी मौजूदा चीजों में)

तस्मा (इसीलिए) एतम (यह) सुरुचं (उज्ज्वल प्रकाश) ह्वारह्यं घर्म (गर्मी) श्रीणन्तु (आइए शुभ करें) प्रथमाय (पहले से) धास्यवे।।

अनुवाद: यह पितृतव सर्वोच्च प्रभुत्व सभी मौजूदा चीजों में जन्म से पहले आया था। इसलिए आइए हम इस तेज रोशनी वाली शुभ गर्मी को मुख्य रूप से उतपन्न करें।

यहां एक बात ध्यान देने वाली है कि संस्कृत में राष्ट्रय शब्द नपुंसक लिंग *(*यानी न तो पुरुष वाची न ही स्त्री वाची आभास देता है *)* लेकिन संस्कृत नहीं जानने वाले रामपाल ने अपनी मूर्खता में इसे स्त्रीलिंग बना कर नारी बना दिया। साथ ही उन्होंने घार्मम *(*घर्म -गर्मी*)* शब्द का धर्म के रूप में अनुवाद किया है*,* जबकि घ और ध में बहुत फर्क है*!!*

फिर उन्होंने उसी अध्याय *4* के तीसरे श्लोक का अनुवाद इस प्रकार किया*:* कल्ट भगवान कबीर अपने दास को अपनी रचना के बारे में बताता है कि दुनिया कैसे बनाई जाती है और यह भी की काल कौन है और लोक क्या हैं*?*

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :–

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र–यः–जज्ञे–विद्वानस्य–बन्धुः–विश्वा–देवानाम्–जनिमा–विवक्ति–ब्रह्मः–ब्रह्मणः–उज्जभार–मध्यात्–निचैः–उच्चैः–स्वधा–अभिः–प्रतस्थौ

अनुवाद :– (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक–ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म–क्षर पुरुष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

लेकिन फिर से अगर हम इस श्लोक का शब्द-दर-शब्द अनुवाद करें तो आप फिर से हैरान हो जाएंगे।

प्र *(अधिक, आगे, ऊपर)* यो जज़े *(जानने के लिए)* विद्वानस्य *(बुद्धिमान व्यक्ति)* बन्धुर् विश्वा *(भाई, शुभचिंतक ब्रह्मांड)* देवनं *(देवताओं के)* जनिमा *(मूल जन्म)* विवक्ति *(साथ संघर्ष, इनकार)*।

ब्रह्म *(ब्रह्म)* ब्रह्मण *(ब्रह्म का)* उज्जभ मध्यमानीचैरुचे *(मध्य, नीचे, और ऊपर)* स्वधा *(आत्म शक्ति, आत्म स्थिति)* अभि *(सामने, निकट)* प्र *(अधिक, आगे, ऊपर)* तसथौ *(खड़े)*।

अनुवाद: ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में अधिक जानने के लिए, देवताओं (वैदिक देवताओं इंद्र, वरुण, अरुण, बृहस्पति आदि) और दुनिया के बुद्धिमान व्यक्तियों और शुभचिंतकों ने एक-दूसरे के साथ संघर्ष (वाद विवाद) किया।

ब्रह्म और जो ब्रह्म के हैं, वे अपनी स्वयं की शक्ति से मध्य, नीचे और ऊपर (लोकों) के निकट और आगे खड़े हैं।

यहाँ रामपाल कल्ट का अनुवाद असली वैदिक मंत्रो के शब्दों को आपने हिसाब से ढालने का एक प्रयास मात्र है। उन्होंने बड़ी चतुराई से यहां श्लोक का पूरा अर्थ बदल दिया। जहां पर शब्द प्र संस्कृत भाषा में उपसर्ग के रूप में भी जाना जाता है, इस शब्द का अर्थ अधिक / आगे है लेकिन रामपाल कल्ट इसे सर्व प्रथम (सर्वप्रथम) के रूप में अनुवाद करता है।

यहां रामपाल ने विद्वान का अर्थ साधक भक्त के रूप में अनुवाद कर दिया लेकिन विद्वान संस्कृत का मशहूर शब्द है जिसका अर्थ होता है बुद्धिमान न की साधक भक्त।

रामपाल ने ब्राह्मण (ब्रह्मण) की व्याख्या अपने कल्ट भगवान कबीर के रूप में की, लेकिन फिर से हर भारतीय हिंदू जानता है कि ब्राह्मण शब्द का क्या अर्थ है क्योंकि यह भी भारतीय जाति का एक नाम है जिसका शाब्दिक अर्थ ब्रह्म से संबंध रखने वाला या उसे जानने वाला है।

उन्होंने यहां विविक्ति शब्द की व्याख्या "स्वयं ही ठीक ठीक " में की थी , पर वास्तव में इसका अर्थ है आपस में तर्क वितर्क करना।

नीचे दी गई छवि में इसका अर्थ देखें।



अब कल्ट के लोग कहेंगे कि इस श्लोक में भी ज्ञान गंगा में वर्णित तीन लोकों का उल्लेख है। लेकिन यह प्रतिवाद बिल्कुल गलत है क्योंकि वैदिक पुस्तके अच्छे से बताती है कि ये तीन क्षेत्र क्या हैं। ये क्षेत्र हैं अंतरिक्ष, द्युलोक और भूमि जैसा कि ऋग्वेद *10.90.1* पुरुष सूक्त में वर्णित है। तो यहाँ इन तीनों का उल्लेख नकली सत्यलोक, काललोक और अक्षर ब्रह्म लोक के बारे में बिल्कुल भी नहीं है।

हम यह भी बताना चाहते हैं कि कई कल्ट सदस्य दावा करते हैं कि पुराण पुस्तक में एक सत्यलोक का उल्लेख है जो असल में उनका वाला ही सतलोक है। लेकिन फिर भी यह दावा फर्जी है क्योंकि वेदों में कभी भी पुराण के सत्य लोक का उल्लेख नहीं है बल्कि केवल पुराणों में ही ऐसे सतलोक का वर्णन है , जो की पुराणों तक ही सीमित है। यह सतलोक कबीर का नहीं बल्कि हिंदू देवता ब्रह्मा *(*हिंदू त्रिमूर्ति में से एक*)* का निवास है।

इसी अध्याय के आगे के चौथे श्लोक का अनुवाद इस प्रकार है:

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

सः–हि–दिवः–स–पृथिव्या–ऋतस्था–मही–क्षेमम्–रोदसी–अकस्भायत्–महान् –मही–अस्कभायद्–विजातः–धाम्–सदम्–पार्थिवम्–च–रजः

अनुवाद – (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर–अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के पृथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्मण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न–भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्मण्ड में छोटे–छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

यहां रामपाल ने फिर से इस श्लोक का अनुवाद किया है कि कल्ट भगवान कबीर ने चारों लोकों को सतलोक, अलख लोक, आगम लोक, अनामिका लोक बनाया था। उसके बाद उन्होंने परब्रह्म और ब्रह्म (काल निरंजन) का और क्षेत्र बनाया।

अब हम इस श्लोक का एक-एक करके अनुवाद करते हैं और आपको बताते है कि इसका असली मतलब क्या है।

स (यह) हि (निश्चित रूप से, वास्तव में) दिवाः (अंतरिक्ष) स (यह) पृथ्वी (पृथ्वी) ऋतस्थ (स्थापित दिव्य व्यवस्था) माही (पृथ्वी) क्षेम (सुरक्षा, सुरक्षा) रोडसी (स्वर्ग, पृथ्वी) अस्कयत (दृढ़ता से पकड़ें)

महान (महान) माही (पृथ्वी) अस्कभायद (दृढ़ता से पकड़ें) वि (अलग) जातो (प्रकट) दया सदम (निवास स्थान, घर) पार्थिव (स्थलीय, सांसारिक) च (और) रजः (छोटा कण) ।।

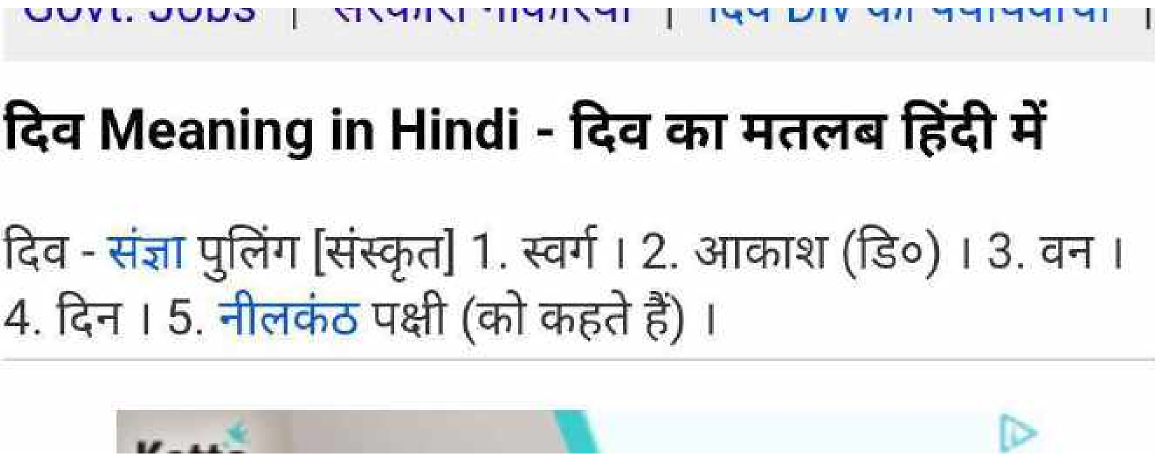
भावार्थ : यह निश्चय ही अंतरिक्ष है, वास्तव में यह पृथ्वी ही है जहां ऋत की स्थापना हुई, पृथ्वी ने सुरक्षा प्रदान की और स्वर्ग को मजबूती से थामे रखा। महान पृथ्वी दृढ़ता से पकड़ती है और एक छोटे से कण के रूप में निवास करने और स्थलीय रूप से अलग दिखाई देती है।

यहाँ फिर से रामपाल अनुवाद काफी अलग और सम्पूर्णता से गलत है। उन्होंने ऋत शब्द को भी नजरअंदाज कर दिया जो वेदों की एक सामान्य अवधारणा है और इसका अनुवाद सत्य के रूप में किया गया है।

ऋत या ईश्वरीय आदेश अन्यथा ऋग्वेद *4.21.3* और *10.121.1* और *10.133.6* में देखा जाता है जिसमें इसे दैवीय आदेश के रूप में परिभाषित किया जाता है जो गोलाकार या एक चक्र में चलता है।

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति पैदा हुआ, जवान हुआ, फिर बूढ़ा हुआ और आखिर में मर गया। यह चक्रीय है और इसलिए ऋत है। शब्द रितु *(मौसम)* भी ऋत से लिया गया है, जहां रितु वर्णन करती है कि रीत कैसे गोलाकार *(गर्मी, शरद ऋतु, सर्दी वसंत)* है।

उन्होंने दिव *(दिवः)* को ईश्वरीय लोकों के रूप में अनुवादित किया जैसे कि कल्ट देव क्षेत्र सतलोक, आगम लोक और अलख लोक आदि, लेकिन यह दिव्य *(अंतरिक्ष)* का सामान्य और सटीक अनुवाद नहीं है जो इस प्रकार है*:*



दिव Meaning in Hindi - दिव का मतलब हिंदी में

दिव - संज्ञा पुलिंग [संस्कृत] 1. स्वर्ग । 2. आकाश (डि०) । 3. वन । 4. दिन । 5. नीलकंठ पक्षी (को कहते हैं) ।

ज्ञान गंगा और रामपाल ने बड़ी चतुराई से अपने गलत दावे को सही ठहराने के लिए अक्षर *(स जिसका अर्थ है)* को *(स: जिसका अर्थ है वह)* से बदल दिया। यहाँ सही श्लोक स्क्रीनशॉट है।

५९४. स हि दिव: स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रज: ॥४॥

यहाँ आप देख सकते हैं कि ब्रह्म, काल या कबीर, सतलोक, अलख लोक आदि कोई भी शब्द इस श्लोक में नहीं आया लेकिन रामपाल कल्ट पुस्तक ज्ञान गंगा ने बिना किसी मतलब के इन शब्दों को अनुवाद में घुसेड़ दिया। वे केवल अपने स्वयं के अर्थ को लागू करना चाहते हैं और फिर दावा करते हैं कि ये वेदों के शब्द हैं।

अगला श्लोक 5वां फिर से अनुवाद के साथ है।आइए फिर से देखते हैं।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट् ।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः ।।5।।

सः–बुध्न्यात्–आष्ट्र–जनुषेः–अभि–अग्रम्–बृहस्पतिः–देवता–तस्य–सम्राट–अहः– यत्–शुक्रम्–ज्योतिषः–जनिष्ट–अथ–द्युमन्तः–वि–वसन्तु–विप्राः

अनुवाद :– (सः) उसी (बुध्न्यात) मूल मालिक से (अभि–अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया–दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

यहां रामपाल ने फिर से अनुवाद किया कि कल्ट भगवान कबीर ने आस्ट्र को बनाया जो दुर्गा (हिंदू देवी) है। यह कल्ट देवता परम देवता हैं जो काल निरंजन के कारण अलग हो गए, जिन्होंने अपने बीज को दुर्गा (अष्ट्र) में प्रत्यारोपित किया, जिन्होंने बाद में स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन किया।

अब हम फिर से एक-एक शब्द का अनुवाद करते हैं और फिर देखते हैं कि विश्व शिक्षक होने का दावा करने वाले व्यक्ति का अनुवाद कितना गलत और हास्यास्पद है...

स *(यह)* बुध्न्यादाष्ट्र *(गहराई से आकाश, वातावरण से आ रहा है)* जनुषो *(जन्म से)* अभि *(निकट)* अग्र *(आगे)* बृहस्पति *(देव बृहस्पति)* तस्य*(उसके)* सम्राट *(मुकुट, राजा) |*

अह*: (दिन का)* यत *(से, इसलिए)* शुक्रम *(बीज, शुक्र)* ज्योतिष *(खगोल विज्ञान)* जननिष्ठाथ *(जन्म, उत्पादित)* द्युमन्तो *(किरणें)* वि *(अलग)* वसंतु *(निवास)* विप्रा*: (उत्साही) ||*

भावार्थ: यह आकाश की गहराई से आ रहा है, जन्म से यह आगे और निकट है। भगवान बृहस्पति (ज्ञान के देवता) उनके राजा हैं। यही कारण है कि दिन का शुक्र (दिन का बीज), खगोल विज्ञान का जो अलग-अलग किरणों से पैदा हुआ था, जिसे जानने में विप्र उत्साह लेते है।

यह श्लोक हमें ज्योतिष (ज्योतिष) की उत्पत्ति और मानव जाति में ज्ञान के बारे उदय में भी सिखाता है जो दिव्य है।

यहाँ फिर से कल्ट नेता रामपाल लोगों को गुमराह करते हैं कि बृहस्पति का अर्थ कबीर है। लेकिन सभी जानते हैं कि बृहस्पति (बृहस्पति) एक ग्रह या वैदिक देवताओं के शिक्षक हैं। वह भक्ति और अध्ययन के देवता हैं। उन्होंने इस संस्कृत शब्द को दो शब्दों बृहद (बड़ा) और पति में विभाजित करके बृहस्पति शब्द की व्याख्या भी की है जिसका अर्थ है बड़ा और पति (मालिक) जिसका हिंदी में अर्थ पति होता है।

रामपाल इतना मूर्ख है कि उसे यह भी नहीं पता था कि पति शब्द का वास्तविक अर्थ संस्कृत में पति नहीं स्वामी है।

यदि हम उनके गूढ़ तर्क का पालन करें, तो वह सेनापति (सेनापति) शब्द का अनुवाद सेना के पति के रूप में और लखपति (लखपति) का अनुवाद लाख के पति के रूप में करेंगे।

यह शब्द सही होगा यदि हम हिंदी के बजाय संस्कृत भाषा के सही अर्थ के स्वामी का प्रयोग करें। अत: सेनापति = सेना का स्वामी और लखपति = लाख का स्वामी।

उन्होंने अष्ट शब्द का देवी अष्ट्र (अष्ट्र) के रूप में अनुवाद किया लेकिन फिर से यह शब्द किसी देवी से संबंधित नहीं है। रामपाल कल्ट ने इस नकली देवी को बनाया और इसके वास्तविक अर्थ की भी उपेक्षा की, जो आकाश या ईथर है। कृपया स्क्रीनशॉट देखें।

आष्ट्र	n.	ASTra	sky
आष्ट्र	n.	ASTra	ether
आष्ट्र	n.	ASTra	atmosphere
आष्ट्रा	f.	ASTrA	prick or goad for driving cattle
अष्ट्रा	f.	aSTrA	prick or goad for driving cattle
अस्त्र	n.	astra	bolt
अस्त्र	n.	astra	missile weapon
अस्त्र	n.	astra	warhead
अस्त्र	n.	astra	weapon in general

उन्होंने बुधन्य शब्द का अनुवाद मुख्य गुरु के रूप में किया है, लेकिन इस शब्द का अर्थ कभी भी गुरु या मूल मलिक नहीं होता है।

कृपया नीचे स्क्रीनशॉट देखें।



आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह रामपाल कितना शरारती और झूठा व्यक्ति है, जिसे हिंदी के टीचर बनने तक का ज्ञान भी नहीं है, लेकिन वह दावा करता है कि वह जगतगुरु है।

अब हम आगे बढ़ते हैं अगले श्लोक यानी 6, जिसमें रामपाल कल्ट इस श्लोक का इस प्रकार अनुवाद करता है:

वास्तव में यही कल्ट भगवान आपको उस घर में ले जाएगा जहां से आत्मा चली गई थी। वहां आत्माएं प्रसन्न होकर कल्ट देवता कबीर उर्फ सतपुरुष आदि की पूजा करती हैं।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे—विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद — (नूनम) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टी उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहा:-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकूँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अब हम इस श्लोक का शब्द-दर-अनुवाद करेंगे और कल्ट विश्वासियों के पागलपन और मूर्खता को देखेंगे।

नूनं *(वास्तव में, इसलिए)* तत अस्य*(वह)* काव्यो *(कविता, बुद्धि, ज्ञान)* हिनोति *(भेजें, लाएं, गति मान करे , उत्तेजित करें)* महो *(महान)* देवस्य *(देवता)* पूर्वस्य *(पहले)* धाम *(निवास)*।

एष*(यह)* जज्ञे *(प्रबुद्ध ज्ञान)* बहुभि*: (एकाधिक)* साकम इथा *(वास्तव में, वास्तव में)* पूर्वे *(पहले)* अर्धे*(आधा, मध्य)* विषिते *(छोड़ देना ,जारी)* ससन *(सोया हुआ)* नु *(बस, अभी भी, अभी)*

भावार्थ *:* वास्तव में ये, वही ज्ञान *(वैदिक काव्य)* है जो महानता को प्रगट करेगा, यह ज्ञान देवताओं का वास था। यह ज्ञानवर्धक ज्ञान पहले कई लोगों को प्रदान किया गया था और उन्हें राहत मिली और जिन्हे नही मिला , वह आधे अभी भी सो रहे है।

यह श्लोक सटीक रूप से दिखा रहा है कि रामपाल कल्ट के सदस्यों की वर्तमान स्थिति क्या है, वे अभी भी सो रहे हैं,एक झूठा सपना देख रहे हैं कि उनके कल्ट भगवान कबीर वास्तविक हैं और उन्हें कल्ट में शामिल होने का पुरस्कार मिलेगा। यहां रामपाल ने फिर से जाली और गलत अनुवाद की अपनी प्रतिभा दिखाई और कई शब्दों का गलत अनुवाद किया।

सबसे पहले उन्होंने तत *(तत)* का अनुवाद तत परमेश्वर *(तत् ईश्वर)* के रूप में किया। लेकिन यह शब्द तत् वास्तव में संज्ञा नहीं है जिसका अर्थ संस्कृत में है। रामपाल ने अहंकार से अंधा अनुमान लगाया कि खड़ी बोलि का शब्द तत ही इधर इस्तेमाल कर लिया गया होगा , जबकि वेद संस्कृत में है खड़ी बोली में नही। 😂😂😂😂😂

रामपाल इतनी छोटी सी बारीकी भूल जाते है की शब्द काव्य का मतलब कविता होते है। क्योंकि अनेक अनेक पुरातन ग्रंथ कविता की शैली में ज्यादा रचे गए थे, इसीलिए कवियों और भाट की इतिहास में अच्छी जगह रही थी। कविता शैली में ग्रंथ रचना इसीलिए की गई क्योंकि गद्य शैली में लंबी बात या कहानी को रटना आसान नहीं होता है लेकिन कविता को लय और काव्य श्रृंगार के जरिए रटना आसान है। चूंकि वेद भी संस्कृत में कविता शैली में है, इसलिए इस वेदमंत्र में काव्य का अर्थ ज्ञान कहा गया है, लेकिन रामपाल इसका अनुवाद भक्त आत्मा के रूप में कर के अपनी अज्ञानता का परिचय देते है। 😂😂😂😂😂😂.

उन्होंने शब्द बहुभि का अनुवाद भी अति प्रसन्न किया है जबकि इसका असली अर्थ बहुत ज्यादा होता है।

अंत में हम 7वा और अंतिम श्लोक देखते जो की रामपाल के पाखंड का भांडा फोड़ देगा।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः–अथर्वाणम्–पित्तरम्–देवबन्धुम्–बृहस्पतिम्–नमसा–अव–च– गच्छात्–त्वम्–विश्वेषाम्–जनिता–यथा–सः–कविर्देवः–न–दभायत्–स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक

16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

यहाँ रामपाल और ज्ञान गंगा अनुवाद करते हैं कि कल्ट भगवान कबीर (कविर्देव) सर्वोच्च देवता हैं, अविनाशी हैं, वे काल निरंजन / ब्रह्म की तरह धोखा नहीं दे रहे हैं, वह पिता, माता और भाई हैं। इसलिए कबीर भगवान की पूजा करें।

😂😂😂😂😂😂😂😂😂😂😂😂

अब असली अनुवाद पढ़िए।

य: *(वह / उन)* अर्थवाण *(अथर्वन, अथर्ववेद के ऋषि)* पितृं *(पूर्वज, पितृ)* देवबंधु *(देवताओं के मित्र / सहयोगी)* बृहस्पति *(भगवान बृहस्पति)* नमसाव *(बहुवचन में अभिवादन)* च *(और)* गच्छत *(बहुवचन में जाता है)* ।

त्वं *(आप)* विश्वेषां *(संसार)* जनिता *(जन्म, उत्पादित)* जन्म *(उदाहरण के लिए)* स *(यह)* कवि: *(कवि)* देवो *(देवताओं)* न दभायत *(धोखा नहीं, अपराजेय)* स्वधावन *(निरंतर, हितकारी)*।

अनुवाद: उन अथर्वों, पूर्वजों, देवताओं के मित्र, भगवान बृहस्पति, हम उनके पास जाते हैं और उन्हें नमस्कार करते हैं, आप दुनिया से पैदा हुए हैं। यह वह है कवि, देवता जो धोखा नहीं देते और सदैव हितकारी रहते हैं।

यहां आपको एक बहुत ही दिलचस्प डीटेल देखने की जरूरत है, इसलिए मैंने कहा कि यह रामपाल के ताबूत में आखिरी कील होगी।

ज्ञान गंगा पृष्ठ ४१ पर, रामपाल ७वें श्लोक के शब्द बृहस्पति का जगतगुरु *(जगतगुरु)* या विश्व शिक्षक के रूप में अनुवाद करते हैं और इसलिए उनका दावा है कि बृहस्पति ही कबीर या कल्ट वाले कबीर भगवान का एक नाम है ।

अब जैसा कि ज्ञान गंगा का दावा है कि कल्ट भगवान कबीर कभी मां के गर्भ से पैदा नहीं हुए लेकिन ऋग्वेद *4.40.1* साबित करते हैं कि बृहस्पति अंगिरस और सुरूपा के पुत्र थे। इसलिए रामपाल का दावा फिर से उनकी अपनी ही किताब द्वारा एक बड़ी गलती के रूप में दिखाई दे जाता है।

एक और ध्यान देने वाली बात यह है कि ज्ञान गंगा ने इस श्लोक का जिक्र करते हुए कहा कि कविर शब्द कबीर के समान है लेकिन फिर से रामपाल ने एक घातक गलती की है। यह गलती संस्कृत व्याकरण की संधि प्रणाली के ज्ञान के अभाव की है।

संस्कृत व्याकरण में जब स्वर से समाप्त होने वाला शब्द इ और ई या शब्द द से शुरू होने वाला दूसरा शब्द बीच में एक नया र से शुरू होने वाला एक नया शब्द बनाता है।

उदाहरण के लिए शब्द कवि *(कविः)* और शब्द देवो *(देवो)* जब जुड़ते हैं तो नया शब्द कविर्देवो बनाते हैं लेकिन फिर भी दोनों शब्द व्याकरण की दृष्टि से अलग अलग रहते हैं। लेकिन रामपाल कल्ट ने आपको ये दो शब्द दिखाए और बताया कि वेद घोषणा कर रहे हैं कि उनके कल्ट भगवान कबीर यहां कविर्देव के रूप में बताए गए हैं।😂😂😂😂😂😂😂

ये सभी प्रमाण गहराई से बताते हैं कि किस तरह से कल्ट मनघडंत कहानियां और पहले से उपलब्ध तथ्यों को अपने एजेंडे के अनुसार बनाते है, लेकिन जब आप अपने आधार पर क्रॉस-चेक करते है तो वे आसानी से रंगे हाथों पकड़े जाएंगे।

भाग **7 :** ऋग्वेद के अंदर सृष्टि रचना के प्रमाण का खंडन

हमने पिछले अध्याय में अथर्ववेद में ज्ञान गंगा के दावे के बारे में देखा था। अब हम आगे बढ़ेंगे और ज्ञान गंगा पेज नंबर 42 पर जाएंगे।

आगे बढ़ने से पहले हम ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के बारे में जानकारी साझा करना चाहते हैं। ऋग्वेद 4 वेदों में से है और पुरुष सूक्त पुरुष के ऊपर ऋग्वेद की चर्चा या ब्रह्मांड के निर्माण का ऋग्वैदिक दृष्टिकोण है।

पुरुष सूक्त ऋग्वेद मंडल 10 और सूक्त संख्या 90 पर स्थापित है, इस सूक्त में कुल 16 मंत्र हैं।

यहाँ पुरुष सांख्य दर्शन से थोड़ा भिन्न है क्योंकि इसमें बिना किसी प्रकृति के इस पुरुष का उल्लेख है। यह पुरुष सूक्त ऋग्वैदिक संस्करण का वर्णन करता है कि ब्रह्मांड और प्रमुख ऋग्वैदिक चीजों की रचना कैसे हुई? चूँकि ऋगवैदिक पुरुष सांख्य पर आधारित नहीं था, उल्टे सांख्य अवधारणा ऋग्वेद के पुरुष पर आधारित थी, इसलिए ऋग्वेद पुरुष सूक्त में सांख्य जैसे प्रकृति वाले चरित्र का अभाव है जो बाद में बनाया गया।

अब हम पुरुष सूक्त से ज्ञान गंगा और रामपाल कल्ट के दावे को देखेंगे।

पृष्ठ 42 पर ज्ञान गंगा कहती है कि ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 90 मंत्र 1 कहता है कि पुरुष (रामपाल कल्ट के अनुसार यह काल या ज्योति निरंजन है) हजार सिर और हजार आंखों और हजार पैरों का है। वह 21 ब्रह्मांडों के स्वामी हैं और उन्हें अपनी 10 अंगुलियों से ढके हुए हैं और इनसे ऊपर अपने अलग ब्रह्मांड में निवास कर रहे हैं।

का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

"पवित्र ऋग्वेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्राक्षः—सहस्रपात्—स—भूमिम्—विश्वतः—वृत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम्।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्मण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्मण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बैठा है।

सबसे पहली बात हम आपको बताना चाहते हैं कि ज्ञान गंगा इतनी फर्जी और पाखंड भरी किताब है कि उन्होंने इस असली ऋगवेदी मंत्र की दूसरी पंक्ति को ही बदल दिया।

आइए विभिन्न स्रोतों से मूल मंत्र देखें ताकि आपको यह न लगे कि मैं झूठ बोल रहा हूं।

सहस्त्रशीर्षा पुरुष:सहस्राक्ष:सहस्रपात्।

स भूमि सर्वत: स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥

पुरुष- सूक्त

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।1 ।।

उस विराट् पुरुष के सहस्र शिर, नेत्र और हाथ–पैर हैं। वह समस्त भूमि को सब ओर से व्याप्त करके इस ब्रह्माण्ड से दश अंगुल ऊपर उससे परे भी विद्यमान है।

Purusha Sukta

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिँसर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

॥ श्री पुरुष सूक्तम्॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुष:सहस्राक्ष:सहस्रपात्। स भूमि सर्वत:
स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्द्शाङ्गुलम् ॥

आप आसानी से तुलना कर सकते हैं कि जहां मूल मंत्र में सर्वत शब्द लिखा है, वहां ज्ञान गंगा में विश्वतो लिखा है। और जहां मूल मंत्र में स्पृत्त्वा लिखा है, वहां ज्ञान गंगा में गलत लिखा हुआ है और कल्ट इस गलत मुद्रित मंत्र का अनुवाद भी करता है।

यदि मैं यह भी कह दूं कि यह मंत्र गलत अंकित है, तो भी कल्ट के सदस्य कहेंगे कि इस तरह के और भी कई संस्करण हैं, जहां यह श्लोक दिया गया है। इसलिए हम दोनों श्लोकों का अनुवाद करने की कोशिश करेंगे और अंतर देखेंगे।

शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्रे महि व्राधन्त ओगणास इन्द्र ।
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्ताँ अभि ष्युः ॥ 15 ॥
पुरूणि हि त्वा सवना जनानां ब्रह्माणि मन्दन् गृणतामृषीणाम् ।
इमामाघोषन्नवसा सहूतिं तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ् ॥ 16 ॥
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम् ॥ 17 ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ 18 ॥

(16) **90** (म.10, अनु.7)

ऋषिः नारायणः	छन्दः अनुष्टुप् **1-15**, त्रिष्टुप् **16**	देवता पुरुषः

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ 1 ॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ 2 ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ 3 ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ 4 ॥
तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ 5 ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ 6 ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ 7 ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् । पशून् ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥ 8 ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ 9 ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ 10 ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥ 11 ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ 12 ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ 13 ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ 14 ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ 15 ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ 16 ॥

अब हम इस मंत्र का एक-एक करके अनुवाद करेंगे और आपको एक बार फिर कल्ट का झूठ दिखाएंगे। पहले हम मूल मंत्र का अनुवाद करेंगे

सहस्त्रशीर्षा (हजार सिर) पुरुषः (पुरुष) सहस्त्राक्ष:(हजार आंखें) सहस्त्रपात(हजार फीट)।

स (यह) भूमिं (भूमि) सर्वत: (चारों ओर, चारों ओर) स्प्त्व (मौजूद रहें) अत्यतिष्ठ (अत्यधिक खड़े रहें) दशांगुलम (दस अंगुल)।

भावार्थ : पुरुष हजार नेत्रों, सहस्रों सिरों और सहस्र पादों वाला यह चारों ओर की भूमि को घेरता है और दस अंगुल से अधिक खड़े होकर उपस्थित रहता है।

यदि हम दूसरा श्लोक लें जो ज्ञान गंगा में दिखाया गया है तो अनुवाद इस प्रकार होगा:

सहस्त्रशीर्षा (हजार सिर) पुरुषः (पुरुष) सहस्त्राक्ष:(हजार आंखें) सहस्त्रपात(हजार फीट)।

स (यह) भूमिं (भूमि) विश्वतोइन सभी दिशाओं में, सभी दिशाओं में) वृत्वा (अंतरिक्ष, आकाश) अत्यतिष्ठ (अत्यधिक खड़े हो जाओ) दशांगुलम (दस अंगुल)।

भावार्थ : पुरुष हजार नेत्रों, सहस्रों सिरों और सहस्र टांगों वाला यह भूमि और आकाश के चारों ओर दस अंगुल से अधिक खड़ा है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ इस मंत्र में काल या ब्रहम के रूप में कोई शब्द नहीं लिखा गया है ताकि हम यह जान सकें कि यह पुरुष काल ही है। साथ ही इस मंत्र में काल (मृत्यु) के 21 ब्रहमांडों के बारे में कभी भी चर्चा नहीं की गई है। यहां 21 ब्रहमांड जैसा एक शब्द भी नहीं बताया गया है!!!

एक और बात जो सामान्य है कि ज्ञान गंगा (स) को उसके मूल अर्थ (यह) के बजाय वह के रूप में अनुवादित करती है, ताकि पढ़ने वाले को लगे की इधर किसी चीज के बजाए किसी व्यक्ति की बात हो रही है। ऐसा ही छेड़छाड़ का मामला पहले अथर्ववेद मंत्र के अनुवाद के साथ भी किया गया था।

लेकिन ज्ञान गंगा और रामपाल का दावा है कि यह पुरुष काल ही है और वो गीता अध्याय 11 श्लोक 46 से संदर्भ देते, जहां धनुर्धर अर्जुन ने शिर कृष्ण में विश्वरूप को देखा था और हजार आंखों और हजार पैरों वाले एक ही संदर्भ का उल्लेख किया। लेकिन यह प्रमाण स्वयं इस तथ्य की उपेक्षा कर रहा है कि गीता वाले पुरुष को सृष्टि रचने के लिए प्रकृति का समर्थन चाहिए ,

जबकि ऋग्वैदिक पुरुष स्वयं ही सृष्टि की रचना कर रहा है!! इससे साफ जाहिर होता है की ऋगवेदिक पुरुष और गीता का पुरुष दो अलग अलग धारणा है।

हम ज्ञान गंगा पृष्ठ 42 और 43 पर दिए गए अगले श्लोक को देखेंगे। ज्ञान गंगा के इस अनुवाद में लिखा है कि इस पुरुष सूक्त में दूसरा मंत्र है कि कालब्रहम से अलग ब्रहम या अक्षरब्रहम है लेकिन वह भी सक्षम नहीं है की आपको मुक्ति दे। इसलिए मुक्ति केवल कल्ट भगवान कबीर द्वारा दी जा सकती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष–एव–इदम्–सर्वम्–यत्–भूतम्–यत्–च–भाव्यम्–उत–अमृतत्वस्य–इशानः–यत्–अन्नेन–अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से

43 **सृष्टी रचना**

(अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरुष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

अब हम एक-एक करके इस मंत्र का फिर से अनुवाद करेंगे

पुरुष (पुरुष रूप) एव (यही) इदम (यह) सर्व (हर) यत (जो कोई भी) भूतम (सृजित प्राणी) यत (जो) च (और) भाव्यम (प्रकट होगा)।

उत (उपरोक्त) अमृतत्व (अमरता) अस्य (है) इशान (गुरु, प्रकाश) यत (जो) अन्नेन (भोजन) अतिरोहति (ऊंचा बढ़ना, ऊंचा चढ़ना)।

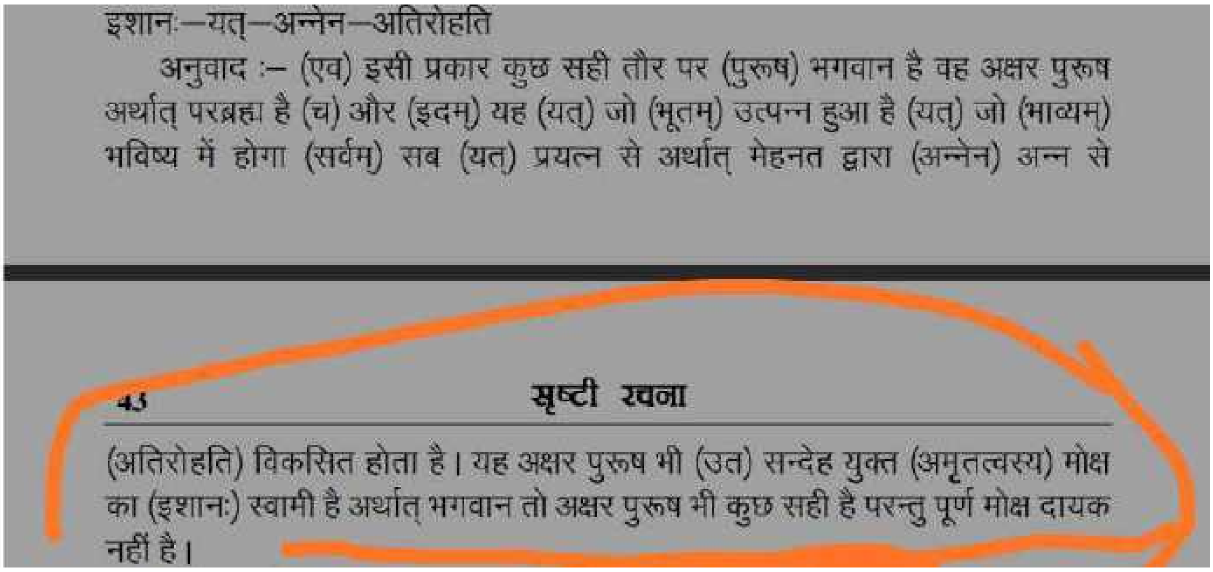
अनुवाद: इस प्रकार पुरुष वास्तव में यह प्रत्येक प्राणी है जो भूतकाल में बनाया गया था या जो को भविष्य में प्रकट होगा। यह ऊपर का प्रकाश/स्वामी है जो अन्न/फसल को ऊँचा करता है और अमरता का कारण है।

आप आसानी से देख सकते हैं कि मंत्र के इस सरल अनुवाद में रामपाल ने अपने कल्ट के कई तत्वों को अनावश्यक रूप से जोड़ दिया है। यहां अक्षर या ब्रह्म शब्द का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन रामपाल ने अपने अनुवाद करते हुए उन्हें जोड़ा और अपनी नकली कहानी के लिए अपने अनुवाद का इस्तेमाल किया।

रामपाल ने उत शब्द का अर्थ "संदेह से भरा हुआ" से बदल दिया, जबकि इसका वास्तविक अर्थ "ऊपर" था।नीचे संस्कृत शब्दकोश का स्क्रीनशॉट देखिए।

उत् : उप० [सं०√उ (शब्द करना)+क्विप्] एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों में लगकर ये अर्थ देता है-(क) ऊपर की उठना या जाना। जैसे—उत्कर्ष। (ख) अधिकता या प्रबलता। जैसे—उत्कट, उत्तप्त। (ग) भिन्न या विपरीत। जैसे—उत्पथ, उत्सूत्र। संधि के नियमों के अनुसार कही-कहीं इसका रूप उद् भी हो जाता है। जैसे—उदबुद्ध, उद्गमन आदि।
समानार्थी शब्द- उपलब्ध नहीं

आप देख सकते हैं कि रामपाल ने चालाकी से धोखा दिया कि उन्होंने स्वयं इस मंत्र के अपने अनुवाद की उपेक्षा की। नीचे दिए गए स्क्रीनशॉट को देखें जहां लिखा है कि अक्षर पुरुष *(*यह शब्द मंत्र में मौजूद नहीं है*)* संदिग्ध रूप से मुक्ति का स्वामी है।



इशानः—यत्—अन्नेन—अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से

43 **सृष्टी रचना**

(अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

ऊपर हम अपने अनुवाद में देख चुके हैं कि इस मंत्र में अक्षर ब्रह्म जैसा कोई शब्द नहीं है। साथ ही शब्दों के अर्थ को भी रामपाल ने बदल दिया है। यदि हम इस पंक्ति का अनुवाद करें, तो इसका वास्तविक अर्थ यह है कि पुरुष अमरता के सर्वोच्च गुरु/प्रकाश हैं। रामपाल के अनुवाद यहाँ बेतुके ढंग से विफल होते है।

हम अगले श्लोक यानि तीसरे श्लोक में चलते हैं और रामपाल कल्ट की सहज शरारत को देखते हैं।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

एतावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः—पादः—अस्य—विश्वा—भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरुष-अक्षर पुरुष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरुष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

इस अनुवाद में ज्ञान गंगा का कहना है कि यह मंत्र 3 वर्णन करता है कि पिछले मंत्र में वर्णित अक्षर ब्रह्म से तीसरा बड़ा कोई देवता है (हम पहले ही देख चुके हैं कि उस मंत्र में अक्षर ब्रह्म या अक्षर पुरुष का कोई उल्लेख नहीं है, केवल शब्दों का बुना बनाया जाल है, मूल मंत्र में ज्ञान गंगा के द्वारा) ।

इसमें ३ लोकों का उल्लेख है। गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में भी इन 3 देवताओं का उल्लेख है।

हम इस मंत्र संख्या *3* का एक-एक करके फिर से अनुवाद करेंगे।

एतावन*(ऐसे, इतना)* अस्य *(है)* महिमातो *(महानता)* ज्यायां *(बड़ापन)* च *(और)* पुरुष*(पुरुष)*।
पाद *(अंश)* अस्य *(है)* विश्व *(दुनिया)* भूतानि *(और बनाया जा रहा है)* त्रिपाद अश्य *(है)* अमृत *(अमर)* दिवि *(प्रकाश)*॥*3*॥

भावार्थ *:* पुरुष की महानता और बड़ापन ऐसा है, उसका चौथाई भाग संसार और उसका रचा हुए प्राणी है और तीसरा भाग अमर ज्योति या प्रकाश है।

यह मंत्र हमें केवल पुरुष (अर्थात ब्रहम) की महानता के बारे में बता रहा है लेकिन रामपाल कल्ट अनावश्यक रूप से अपने तीन देवताओं (परम ब्रहम, अक्षर ब्रहम और शर ब्रहम) के नकली पात्रों को इस मंत्र में घुसेड़ रहा है। यहाँ अक्षर पुरुष जैसा कोई शब्द नहीं लिखा है और तीन संसार भी नहीं लिखा है। रामपाल कल्ट पद (पाद) शब्द का पैर में बहुत ही भद्दा अनुवाद करता है। यह सत्य है कि संस्कृत में पाद का अर्थ पैर भी होता है, परन्तु यहाँ सन्दर्भ समझना चाहिए क्योंकि पाद शब्द का वास्तविक अर्थ यहां चौथाई अंश था। यदि हम इस शब्द को पैर मान भी लें तो यह ज्ञान गंगा के उस पूर्व के दावे का खंडन करेगा कि काल ब्रहम के हजार पैर हैं। अगर काल के हजार पैर है तो फिर एक दम से अब तीन पैर कैसे हो गए?

कृपया नीचे स्क्रीनशॉट देखें जहां पाद शब्द के दोनो अर्थ यानी पैर, चौथाई दिए गए हैं।



अब हम अगले मंत्र ४ की ओर बढ़ते हैं, जहाँ उनका दावा है कि परम अक्षर ब्रहम उर्फ कल्ट भगवान कबीर खुद को तीन लोकों (सतलोक, अलख लोक, आगम लोक) में प्रस्तुत करते हैं, कल्ट भगवान कबीर अक्षर ब्रहम और क्षर ब्रहम उर्फ काल निरंजन से ऊपर हैं।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि–पाद–ऊर्ध्वः–उदैत्–पुरुषः–पादः–अस्य–इह–अभवत्–पूनः–ततः– विश्वङ्–व्यक्रामत्–सः–अशनानशने–अभि

अनुवाद :– (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टी रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्मण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभू ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्मण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

अब हम एक बार फिर ऋग्वेद पुरुष सूक्त के इस मंत्र ४ का अनुवाद करेंगे।

त्रिपाद *(तीन चौथाई)* उध्र्व *(खड़ा)* उदैत् *()* पुरुषः *(पुरुष)* पाद *(तिमाही)* अस्य *(है)* इह *(यहां)* अभवत *(था)* पुनः*(फिर से)*। ततो *(इसलिए)* विष्वं *(दुनिया में)* व्यक्रामत*(प्रवेश, वर्तमान)* शनानशने *(खाने और न खाने)* अभि *(निकट)*॥*4*

भावार्थ : पुरुष तीन चौथाई अंश पर ऊपर उठे हुए है और पुनः पुनः प्रकाश रूप में प्रकट हो रहा है। इसलिए वह खाने-पीने की सभी चीजों (अनाज और जल) में विद्यमान है।

ध्यान देने वाली बड़ी दिलचस्प बात यह है कि इस मंत्र में फिर कबीर, परम अक्षर ब्रह्म या सतपुरुष जैसे शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन अपने अनुवाद में रामपाल ने अनावश्यक रूप से क्षर ब्रह्म या काल जैसे अपने स्वयं के कल्ट पात्रों को जोड़ा। उन्होंने शनासने का अर्थ भी काल ब्रह्म या क्षर पुरुष के दुनिया को खाने की बात में बदल दिया, जो कि बेतुका मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि यहाँ जीवित और निर्जीव ही इस शब्द का वास्तविक अर्थ है।

अगला मंत्र ५वाँ मंत्र है जो अनुवाद करता है और बताता है कि पुरुष से (यहाँ गलत तरीके से कल्ट भगवान कबीर को जोड़ा गया) जिसने काल या क्षर पुरुष को बनाया और फिर उसने पृथ्वी और अन्य क्षेत्र का निर्माण किया।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्–विराट्–अजायत–विराजः–अधि–पुरूषः–स–जातः–अत्यरिच्यत–पश्चात् –भूमिम्–अथः–पुरः।

अनुवाद :– (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे–छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

अब हम एक-एक करके इसका पुन: अनुवाद करेंगे।

तस्मात्(इसलिए) विराट (बड़ा) जायत (बढ़ना, विस्तार करना) विराजो (वैभव, चमकना) अधि (सर्वोत्तम) पूर्णुषः (पुरुष)।

स (it) जातो (बनें) अत्यरिच्यत (बनाया गया) पश्चात् (बाद) भूमिमथ पुरः (धरती, धरती)

भावार्थ : अत: पुरुष विराट है और चमक(प्रकाश) का विस्तार करता है और इसके बाद पृथ्वी और पृथ्वीवासी पैदा हुये।

यहाँ एक बार फिर कल्ट और रामपाल ने आपको यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि तीन पुरुष हैं लेकिन वास्तव में वैदिक पाठ में केवल एक पुरुष का उल्लेख है। मुझे पहले से ही पता है कि कल्ट के सदस्य कहेंगे कि आदिपुरुष अलग है और पुरुष अलग है। लेकिन आधि शब्द संस्कृत भाषा में उपसर्ग है, संज्ञा नहीं। इसलिए हम यह दावा नहीं कर सकते कि पुरुष शब्द के आगे अधि लिखने मात्र से वह अलग हो जाता है।

इसे आप इस आसान से उदाहरण से समझ सकते हैं।

अगर मैं कहूं कि ईमानदार राम मेरे पिता हैं, तो इसका सीधा सा मतलब है कि राम मेरे पिता का नाम है और ईमानदारी उसका विशेषण या गुण है। लेकिन मैं यह दावा नहीं कर सकता कि शब्द ईमानदार भी मेरे पिता का एक नाम है।

जैसे यह आदि या श्रेष्ठ पुरुष का गुण है, लेकिन यह एक अलग पहचान नहीं हो सकता। लेकिन कल्ट इस शब्द का इस्तेमाल लोगों को गुमराह करने के लिए एक हथियार के रूप में करता है।

उसके बाद रामपाल और ज्ञान गंगा सीधे 15 मन्त्र पर चले जाते है??? ऐसा क्यों???

क्योंकि मंत्र संख्या 14 में स्पष्ट रूप से वेदों के तीन लोकों (अंतरिक्ष, द्युलोक, भूमि) की उत्पत्ति का उल्लेख हुआ थी। और यह एक सत्य तथ्य है कि रामपाल और उनका कल्ट तीन लोकों (सतलोक, आगम लोक, आके लोक) के अपने कल्ट निर्माण मिथक को जीवित रखने के लिए आपसे छिपाना चाहते हैं।

आइए पहले मंत्र संख्या *13* देखें और फिर ज्ञान गंगा से *15* मंत्र देखेंगे।

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ।।13।।

उस यज्ञ पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष लोक उत्पन्न हुआ, शिर से स्वर्ग प्रकट हुआ,

28

2

पैरों से पृथ्वी और कानों से दिशाएं उत्पन्न हुईं। इसी प्रकार उस पुरुष में ही ये सब लोक कल्पित हुए।

नाभ्या *(*पेट*)*आसीद *(*होना*)* अंतरिक्ष *(*अंतरिक्ष*)* शीर्षणो*(*ऊपर से*)* द्‍यो*(*द्‍युलोक*)* समवर्त*(*हो गया*)*।

पदभया*(*पैरों से*)* भूमि *(*पृथ्वी, टेरा*)*दिर्श *(*दिशाएं*)* श्रोता *(*कान से*)* तथा *(*और*)* लोकां*(*क्षेत्रों*)* अकल्पयन*(*संभव बनाया, निर्धारित*)*।

भावार्थ*:* पुरुष के उदर से बने अंतरिक्ष, और ऊपर से द्‍यलोक प्रसन्न हुआ। पैरों से पृथ्वी और कानों से दिशा प्रकट हुई। इसलिए सभी लोक संभव हुए या पुरुष से प्रकट हुए।

यदि कल्ट भगवान कबीर ने सभी को बनाया था, तो यहां पुरुष को त्रिलोक के निर्माण का श्रेय क्यों दिया जा रहा है *????*

अब ज्ञान गंगा की अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक 74 के श्लोक को देखें, जिसमें ज्ञान गंगा ने दावा किया है कि परब्रह्म के 7 शंख ब्रह्मण्ड और 21 ब्रह्मण्ड हैं जिनसे कबीर कल्ट के देवता आपको मुक्त करते हैं।

that is, Brahm (Kaal) was born. This very evidence is given in Gita Chapter 3 Verse 15 that Brahm originated from the Akshar God i.e. Eternal God. This very evidence is also given in Atharvaved Kaand 4 Anuvaak 1 Sukt 3 that Brahm originated from Purn Brahm / Complete God and that same Purna Brahm created all the small and big worlds (*bhoomim*) like Earth etc. That Purna Brahm is greater than this Viraat God i.e. Brahm; which means, He is also his (Brahm's) Master.

Rigved Mandal 10 Sukta 90 Mantra 15

SaptaasyaasanparidhayastriH sapt samidhH krtaH |

Deva yadhyagyaM tanvaana abadhnanPurushM pashum ||15||

Sapt – asya – aasan - paridhayH – trisapt – samidhH – krtaH – deva – yat – yagyam – tanvaanaH – abadhnan - Purusham – pashum |

Translation: (*Sapt*) seven sankh brahmands of ParBrahm and (*trisapt*) the twenty-one brahmands of Kaal/Brahm (*samidhH*) tortured by the fire of the sufferings of the punishment of sinful deeds (*krtaH*) which does (*paridhayH*) in the circular boundary (*aasan*) is present (*yat*) who (*Purusham*) of the Complete God (*yagyam*) offers religious service according to the ordinances i.e. worships (*pashum*) bound in the trap of Kaal to the bondage of actions like a sacrificial animal (*deva*) devout souls (*tanvaanaH*) from the web of the bondage of sinful actions created, that is, spread by Kaal (*abadhnan*) liberates, that is, is the liberator of the bondage - Bandichhor.

अब हम इस मंत्र का एक-एक करके अनुवाद करेंगे।

सप्त *(सात)* अस्य *(इसमें से हैं)* आसन *(सीट)* परिधय *(परिधि)* अस्य *(इसमें से हैं)* त्रि *(तीन)* सप्त *(सात)* समिध*: (ईंधन, लकड़ी)* कृता *(किया)*।

देवा *(देवता)* यत *(इसलिए)* यज्ञ *(अर्पण, प्रार्थना)* तन्वना अबधन्न *(पकड़ा, बाँधना)* पुरुष *(पुरुष)* पशुम *(पशु)*।

अनुवाद: सात आसन हैं और परिधि तीन हैं, सात जलाऊ लकड़ी हैं। इसलिए देवताओं ने पुरुष को दैवीय भेंट के लिए पशु के रूप में पकड़ लिया।

हम अंत में यह भी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि ऋग्वेद के पुरुष के अलावा किसी दूसरे देवता से ब्रह्मांड का निर्माण करने वाले किसी भी दूसरे का कोई उल्लेख नहीं है, जो स्पष्ट रूप से साबित करता है कि भगवद्गीता पुरुष वैदिक पुरुष अवधारणा से अलग है। यह रामपाल के ऋग्वेद में उनकी कल्ट श्रृष्टि रचना के पाखंड का भंडाफोड़ करता है।

भाग **8** : देवी भागवत पुराण और शिव महापुराण के अंदर सृष्टि रचना के प्रमाण का खंडन

हम विभिन्न हिंदू पाठ्य पुस्तकों में कल्ट जगत निर्माण के मिथक को देखने की अपनी यात्रा जारी रखेंगे और देवी भागवत पुराण और शिव महापुराण का निरीक्षण करेंगे जिसके माध्यम से रामपाल कल्ट यह दावा करना चाहता है कि प्रकृति ही देवी दुर्गा है और ब्रह्म ही उसका पति है और हिंदू त्रिदेव उनकी संतान है।

शुरू करने से पहले, मैं यह बताना चाहता हूं कि देवी भागवत पुराण क्या है और इसकी उत्पत्ति क्या है।

जैसा कि आप पहले ही इस पुस्तक के भाग 2 में जानते हैं और हम पहले ही बता चुके हैं कि पुराण हिंदू धर्म का तीसरी पीढ़ी की पुस्तके है जो जटिल हिंदू धर्म के दर्शन को सरल, आसान बनाने के लिए पौराणिक कथाओं से भरा हुआ एक ग्रंथ है।

देवी भागवत पुराण हिंदू धर्म के शाक्त संप्रदाय का हिस्सा है जिसमें देवी या माता प्राथमिक देव हैं। इसलिए यह पूरा पुराण देवी या माँ की महिमा करता है और अन्य पुराण देवताओं (शिव, और विष्णु) को द्वितीयक के रूप में दिखाता है। इस पुराण के अनुसार विश्व की रचना देवी ने की थी और बाकी देवता उनसे छोटे है। हालांकि हम आपको पहले ही बता चुके हैं कि 18 प्रमुख पुराण हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे वेदव्यास जी द्वारा लिखे गए थे। लेकिन बड़ी दिलचस्प बात यह है कि ये दोनों उपरोक्त पुराण इन 18 प्रमुख पुराणों में से है ही नहीं। कृपया सभी 18 प्रमुख पुराणों के नाम पर जरा एक नजर डालें।

1. विष्णु पुराण
2. पद्म पुराण
3. वायु पुराण
4. नारद पुराण
5. मार्कंडेय पुराण
6. अग्नि पुराण
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण

8. लिंग पुराण

9. वराह पुराण:

10. स्कंद पुराण

11. वामन पुराण

12. कूर्म पुराण

13. मत्स्य पुराण

14. गरुड़ पुराण

१५ ब्रह्माण्ड पुराण

16 भविष्य पुराण।

17. ब्रह्म पुराण

18. भागवत पुराण।

और यह अंतिम 18वा पुराण ही ज्यादातर दो पुराण, देवी भागवत और श्रीमद भागवत पुराण के बीच बहस और तर्क है। क्योंकि दोनो पुराण के मानने वाले यह दावा करते है की उनका पुराण ही असली भागवत पुराण है।

रामाश्रम स्वामी नाम के एक संत ने एक बार साबित कर दिया था कि देवी भागवत 18 पुराणों में से एक नहीं है और हम आसानी से देख सकते हैं कि शिव महापुराण तो इस सूची में है भी नहीं।

एक बात यह भी उल्लेखनीय है कि देवी भागवत भी भगवत गीता और पुरुष सूक्त की तरह सांख्य दर्शन पर आधारित थी जैसा कि पिछले अध्यायों में पहले चर्चा की गई थी।

पहले हम ज्ञान गंगा पृष्ठ ४७ के दावे को देखते हैं।

इस पृष्ठ में ज्ञान गंगा हमें देवी भागवत पुराण अध्याय 3 पृष्ठ संख्या 114 से 118 तक का अंश बताती है जिसमें लिखा है कि कई उपदेशक मानते हैं कि देवी माँ सभी इच्छाओं की पूर्ति का स्रोत हैं। वह काल ब्रह्म की पत्नी हैं और उन्हें ही प्रकृति कहा जाता है।

पहले हम यहां समझाना चाहते हैं कि देवी भागवत पुराण में यह बात क्यों और कब कही गई और उसका बैकग्राउंड क्या है? देवी भागवत पुराण के अध्याय 3 में, जो राजा जनमेजय के ऊपर वर्णित है, जो पांडवों के पूर्वज थे, वेद व्यास (महाकाव्य महाभारत के महान लेखक) से विश्व निर्माण के बारे में और त्रिमूर्ति और देवी माँ के बारे में भी सवाल कर रहे हैं। वेदव्यास ने उन्हें उत्तर दिया कि ऐसा ही प्रश्न श्नारद जी को उनके द्वारा पूछा गया था। तो यहाँ वेद व्यास जी ने नारद से पूछा और उन्होंने तीनों त्रिदेव और देवी माँ के बारे में पूछा और यह भी पूछा कि उनमें से सबसे अच्छा देवता कौन है?

अब ऊपर ज्ञान गंगा का दावा है कि देवी भागवत पुराण में कहा गया है कि बहुत से लोग मानते हैं कि देवी माँ सबसे ऊपर हैं और काल की पत्नी है वास्तव में जब देवी भागवत ऐसा कहता है तो वह कोई उत्तर नहीं दे रहा है, बल्कि उसका पूछना एक प्रश्न का एक हिस्सा है। इससे पहले, उन्होंने यह भी पूछा कि कुछ आचार्यों का दावा है कि शिव बड़ा है, कुछ कहते हैं कि विष्णु बड़ा है और कुछ कहते हैं कि इंद्र बड़ा है, जबकि अन्य कहते हैं कि देवी मां बड़ी हैं, तो उनमें से कौन बड़ा है?

अब हम चल रहे परिदृश्य को समझ सकते हैं।

कृपया देवी भागवत के दूसरे अध्याय से पूरे परिदृश्य का स्क्रीनशॉट देखें।

॥ श्रीजगदम्बिकायै नमः ॥

श्रीमद्देवीभागवत

तीसरा स्कन्ध

जनमेजयका श्रीव्यासजीसे प्रधान देवता तथा ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति एवं स्वरूपके सम्बन्धमें प्रश्न, ब्रह्माजीके द्वारा नारदजीके प्रति भगवती आद्याशक्तिके प्रभावका वर्णन, श्रीदेवीजीके द्वारा दिये हुए विमानपर श्रीब्रह्मा, विष्णु, महेशका विविध लोकोंमें गमन तथा वहाँके विलक्षण दृश्योंको देखते हुए अन्तमें भगवतीके दिव्य द्वीपमें पहुँचना

जनमेजयने पूछा—भगवन्! आपने अम्बायज्ञ अर्थात् परम पवित्र नवरात्र-व्रत करके उसके द्वारा देवीके आराधन करनेकी आज्ञा दी है। अतः वे कौन देवी हैं, कैसे और कब प्रकट हुईं? उनके पधारनेका क्या उद्देश्य है तथा वे किन गुणोंसे विभूषित हैं? अम्बायज्ञ किस प्रकार होता है? उसका कैसा रूप है और क्या विधान है? दयानिधे! आप सर्वज्ञानसम्पन्न हैं। विधिवत् सब वर्णन करनेकी कृपा कीजिये। ब्रह्मन्! साथ ही विस्तारपूर्वक ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति भी कहिये; क्योंकि भूदेव! ब्रह्माण्डके विषयमें जो कुछ कहा गया है तथा वह जैसा, जो है, ये सभी बातें आप जानते हैं। मैंने सुना है कि ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र—ये तीन प्रमुख देवता हैं। क्रमशः सृष्टि, पालन और संहारके कार्यका उत्तरदायित्व इनपर रहता है। पराशरनन्दन व्यासजी! अब मैं इनके सम्बन्धमें विस्तारपूर्वक सुनना चाहता हूँ, आप बतलानेकी कृपा करें।

व्यासजी कहते हैं—राजन्! तुम्हारी बुद्धि बड़ी विशाल है। अभी तुमने जो पूछा है कि ब्रह्मादिकी उत्पत्ति कैसे हुई, सो यह महान् कठिन विषय है। इसमें अनेक प्रश्न उठ जाते हैं। यही प्रश्न पूर्व समयमें मैंने नारदजीसे किया था। उन्होंने जो उत्तर दिया, वह मुझे याद है। राजन्! कहता हूँ, सुनो। एक समयकी बात है—गङ्गाके तटपर सर्वज्ञानसम्पन्न मुनिवर नारदजी विराजमान थे। वेदके सर्वोत्कृष्ट ज्ञाता उन मुनिका मुझे दर्शन हुआ। वे बड़े शान्तस्वरूप थे। उन्हें देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं सामने जाकर उनके चरणोंपर लोट गया। उन्होंने आज्ञा दी तब समीपमें ही एक सुन्दर आसनपर मैं जा बैठा। उस समय मुनिवर नारदजी गङ्गाके तटपर एक निर्जन स्थानमें बिछी हुई बालूपर बैठे थे। कुशल-प्रश्न हो जानेके पश्चात् मैंने नारदजीसे पूछा। मैंने कहा—मुने! आप बुद्धिमान् हैं। मुझे यह बतानेकी कृपा कीजिये कि इस विस्तृत ब्रह्माण्डके प्रधान कर्ता कौन हैं। मुनिवर! यह ब्रह्माण्ड कहाँसे उत्पन्न हो गया? द्विजवर! साथ ही यह भी बताइये कि यह ब्रह्माण्ड विनाशशील है अथवा सदा रहनेवाला है? इसकी रचना करनेवाला कोई एक है अथवा बहुत-से इसके रचयिता हैं? कर्ताके अभावमें कार्यका होना असम्भव है। यह प्रश्न मेरे मनमें उठा करता है। कुछ लोग भगवान् शंकरको परम कारण मानकर जगत्का रचयिता बतलाते हैं। वे कहते हैं, देवाधिदेव भगवान् शंकर अविनाशी पुरुष हैं—उनका कभी जन्म और मरण नहीं होता। वे आत्मामें रमण करनेवाले हैं। देवताओंपर भी उनका शासन बना रहता है। तीनों गुण रहते हुए भी उनसे वे निर्लिप्त रहते हैं। वे संसाररूपी सागरसे उद्धार करनेके लिये सदा तत्पर रहते हैं। अतः वे ही सृष्टि, स्थिति और संहारके आदिकारण हैं।

दूसरे कई लोग भगवान् विष्णुकी प्रशंसा किया करते हैं; वे शक्तिशाली पुरुष, अव्यक्त, अखिल ऐश्वर्योंसे सम्पन्न, परब्रह्म परमात्मा हैं। उनकी कृपासे भक्ति और मुक्ति दोनों सुलभ हो जाती हैं। वे शान्तस्वरूप हैं। सभी ओर उनका मुख है। वे व्यापक पुरुष हैं, विश्वको शरण देना उनका स्वभाव ही है। वे कभी जन्मते और मरते नहीं।

कुछ दूसरे लोग ब्रह्माजीको सृष्टिका प्रधान कारण बतलाते हैं। उनका कथन है कि ब्रह्माजी ही सर्ववेत्ता पुरुष हैं। सम्पूर्ण प्राणियोंकी प्रगतिका श्रेय उन्हींके ऊपर है। वे देवाधिदेव चतुर्मुख ब्रह्मा विष्णुके नाभिकमलसे प्रकट हुए हैं। कुछ दूसरे वेदवादी जन सर्वेश सूर्यको जगत्स्रष्टा कहते हैं। वे सावधान होकर प्रातः-सायं उनकी स्तुति और यशोगान किया करते हैं। कितने लोग शतक्रतु इन्द्रको प्रधान मानकर यज्ञमें उनकी उपासना करते हैं। वे कहते हैं, देवराज इन्द्रके हजार आँखें हैं तथा वे सम्पूर्ण प्राणियोंके साक्षात् स्वामी हैं। यज्ञेश, सुरेश एवं त्रिलोकेश कहलानेका उन्हें अधिकार प्राप्त है। वे शचीके स्वामी, यज्ञोंके भोक्ता, सोमरस पीनेवाले एवं सोमोंके प्रेमी हैं। कुछ दूसरे-दूसरे सम्प्रदायवाले वरुण, सोम, अग्नि, पवन, यम, कुबेर एवं गणराज गणेशको प्रधान देवता मानते हैं। कहते हैं कि गजवदन गणेशजी सम्पूर्ण कार्य सिद्ध कर देते हैं। उनका स्मरण करनेसे ही सिद्धि सुलभ हो जाती है। वे यथेच्छ कार्य सिद्ध करनेवाले देवता हैं।

कितने आचार्य भवानीको सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करनेवाली बतलाते हैं। वे आदिमाया, महाशक्ति एवं परम पुरुषके साथ रहकर कार्य सम्पादन करनेवाली प्रकृति हैं। ब्रह्मके साथ उनका अभेद सम्बन्ध है। वे सृष्टि, स्थिति और संहार-कार्यमें संलग्न रहती हैं। सम्पूर्ण प्राणियों एवं देवताओंकी भी वे जननी हैं। उनका कभी जन्म और मरण नहीं होता। वे पूर्णतामयी देवी प्राणियोंमें व्यापकरूपसे विराजमान रहती हैं। वे अखिल विश्वकी अधीश्वरी हैं। सगुण, निर्गुण एवं कल्याणमय उनका विग्रह है। वैष्णवी, शाम्भवी, ब्राह्मी, वासवी, वारुणी, वाराही, नारसिंही तथा अद्भुत महालक्ष्मी नामसे वे विख्यात हैं। उन्हींसे वेद प्रकट हुए हैं। वे ही विद्या कहलाती हैं। उन्हींके आधारपर संसाररूपी वृक्ष टिका है। वे सम्पूर्ण दुःखोंको दूर कर देती हैं। उनका स्मरण करनेसे ही मनुष्य समस्त काम्यवस्तुओंको प्राप्त कर लेता है। वे मुक्ति चाहनेवालोंको मुक्ति और फल चाहनेवालोंको अभीष्ट फल देती हैं। उनका स्वरूप सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणोंसे परे है। गुणोंका विस्तार उन्हींसे होता है। वे निर्गुण होते हुए भी सगुण हैं। अतएव फल चाहनेवाले पुरुष उनका ध्यान करते हैं। कितने श्रेष्ठ मुनि कहते हैं कि जो निरञ्जन, निराकार, निर्लेप, निर्गुण, अरूप एवं व्यापक ब्रह्म हैं, उन्हींसे जगत्की सृष्टि हुई है। कहीं-कहीं वेद और उपनिषद्में वे ही ब्रह्म तेजोमय बतलाये गये हैं। वे प्रधान पुरुष हैं। हजारों मस्तकों, आँखों, कानों, हाथों, मुखों और चरणोंसे वे सम्पन्न हैं। आकाश श्रीविष्णुका चरण है—यह बात स्पष्ट रूपसे कही गयी है। विद्वान् पुरुष शान्त निरञ्जन विराट् पुरुषको ही प्रधान बताते हैं। कुछ दूसरे प्राचीन रहस्यके जानकार लोग उन्हें पुरुषोत्तम कहते हैं। कुछ अन्य सम्प्रदायके सदस्य कहते हैं कि कभी भी कोई विशिष्ट न रहा है और न है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह सारा ब्रह्माण्ड अनीश्वर है—कभी भी कोई विशिष्ट पुरुष इसकी रचना नहीं करते। यह जगत् अचिन्त्य है। सदा बना रहता है। कोई इसका अधिष्ठाता नहीं है। स्वाभाविक ढंगसे ही यह उत्पन्न हो जाता है। प्रकृति-पुरुष भी इसके कर्ता नहीं कहे जाते। देवताओंमें सभी सत्त्वगुण विद्यमान हैं, उनमें सत्य धर्मकी प्रतिष्ठा भी है, किंतु दुरात्मा दानव उन्हें सदा पीड़ा पहुँचाया करते हैं। फिर धर्मकी मर्यादा कहाँ रही? मेरे वंशज पाण्डव बड़े धर्मात्मा थे। उनके द्वारा सदा धर्मका पालन होता था। फिर भी उन्हें भाँति-भाँतिके दुःखोंका सामना करना पड़ा। मुनिवर! आप शक्तिशाली पुरुष हैं। मेरे मनका संदेह दूर करनेकी कृपा करें। मुने! ज्ञानरूपी नौकाद्वारा संसार-समुद्रसे आप मेरा उद्धार कर दें। यह संसार मोहरूपी जलसे परिपूर्ण है; मैं इसमें डूबता, गिरता एवं अचेत पड़ा रहता हूँ।

व्यासजी कहते हैं—महाबाहो! कुरुवंशी राजाओंमें तुम सर्वश्रेष्ठ राजा हो। तुमने जो बातें पूछी हैं, वे ही मैंने मुनिवर नारदजीसे पूछी थीं।

नारदजी कहते हैं—व्यासजी! प्राचीन समयकी बात है—यही संदेह मेरे हृदयमें भी उत्पन्न हो गया था तब मैं अपने पिता अमिततेजस्वी ब्रह्माजीके स्थानपर गया और उनसे इस समय जिस विषयमें तुम मुझसे पूछ रहे हो, उसी विषयमें मैंने पूछा। मैंने कहा—'पिताजी! यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड कहाँसे उत्पन्न हुआ है? विभो! आपने सम्यक् प्रकारसे इसकी रचना की है अथवा विष्णु इस विश्वके रचयिता हैं? या शंकरने इसकी सृष्टि की है? जगत्प्रभो! आप विश्वके आत्मा हैं। सच्ची बात बतानेकी कृपा करें। किन देवताकी पूजा करनी चाहिये? तथा कौन देवता सबसे बड़े एवं सर्वसमर्थ हैं? निष्पाप ब्रह्माजी! इन सभी प्रश्नोंका समाधान करके मेरे हृदयके संदेहको दूर करनेकी कृपा कीजिये। सत्यवतीनन्दन व्यासजी! इस प्रकार मेरे प्रश्न करनेपर लोकपितामह ब्रह्माजी मुझसे कहने लगे।

पृष्ठ ४७ और ४८ में वर्णित शेष कथा बिल्कुल देवी भागवत के अनुसार है और बिल्कुल सही है लेकिन यहाँ पृष्ठ में ब्रह्म का कोई उल्लेख नहीं है। यहाँ इस पृष्ठ पर परम पुरुष का उल्लेख किया गया है। यहां यह भी ध्यान दें कि इस पुराण में कभी किसी ने यह दावा नहीं किया कि दुर्गा माता देवी हैं, बल्कि दुर्गा केवल देवी मां का अवतार हैं।

ब्रह्माजीने कहा—बेटा! मैं इस प्रश्नका क्या उत्तर दूँ? यह प्रश्न बड़ा ही जटिल है। महाभाग! तुम भगवान् विष्णुसे इसका समुचित समाधान पा सकते हो। महामते! इस संसारमें कोई भी रागी पुरुष ऐसा नहीं है, जिसे यह रहस्य विदित हो। जो त्यागी, आकाङ्क्षारहित एवं ईर्ष्याशून्य है, वही इसके रहस्यको जान सकता है। पूर्वकालमें सर्वत्र जल-ही-जल था। स्थावर-जङ्गम जितने प्राणी हैं, इनमें कोई भी नहीं थे। तब कमलसे मेरी उत्पत्ति हुई। उस समय मुझे सूर्य, चन्द्रमा, वृक्ष तथा पर्वत—कोई भी दिखायी नहीं पड़े। मैं कमलकी कर्णिकापर बैठकर विचार करने लगा—'इस अगाध जलमें मैं कैसे उत्पन्न हो गया? कौन मेरा रक्षक है तथा इस प्रलयकालमें सृष्टि एवं संहार करनेवाले कौन विशिष्ट पुरुष हैं? कहीं भी स्पष्टरूपसे भूमि भी नहीं दीखती, जिसपर यह जल टिका हुआ है। यह कमल कैसे उत्पन्न हुआ? रूढ एवं यौगिक—दोनों अर्थोंमें कोई इसका कारण होना ही चाहिये। यौगिक अर्थ करनेपर इसका मूल कारण पङ्क होता है। तो अब देखूँ कि वह पङ्क है कहाँ। जहाँ वह मूल कारण पङ्क होगा, उसके नीचे पृथ्वी अवश्य होगी।' यों विचार करके मैं जलमें उतरा। एक हजार वर्षतक पृथ्वीका अन्वेषण करता रहा इसपर भी मुझे उस जलका कहीं ओर-छोर नहीं मिला। इतनेमें आकाशवाणी हुई—'तप करो, तप करो।' तब मैंने तपस्या आरम्भ कर दी। कमलपर बैठे ही हजार वर्षतक मैं तप करता रहा। फिर उसी समय 'सृष्टि करो'—ऐसी आकाशवाणी सुनायी पड़ी। उसे सुनकर मैं बड़े आश्चर्यमें पड़ गया। सोचा कि किसकी सृष्टि करूँ अथवा मेरा क्या कर्तव्य है।

उसी समय मधु और कैटभ नामके दो भयंकर दानव सामने आ गये। वे उस महार्णवमें मुझसे युद्ध करनेकी इच्छा प्रकट करने लगे। मैं उनसे भयभीत हो उठा। तब कमलका डंठल पकड़कर जलमें उतरा। वहाँ मुझे एक परम अद्भुत पुरुषके दर्शन मिले। उनका श्रीविग्रह मेघके समान श्याम था। वे पीताम्बर पहने थे। चार भुजाएँ थीं। शेषनागकी शय्यापर सोये थे। उन जगत्प्रभुके गलेको वनमाला सुशोभित कर रही थी। शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म—इन चार आयुधोंसे वे अनुपम शोभा पा रहे थे। ऐसे शेषशायी भगवान् विष्णुका मुझे दर्शन हुआ। वे योगनिद्राके वशीभूत होकर गाढ़ी नींदमें सोये हुए थे। उनकी सारी चेष्टाएँ शान्त थीं। नारदजी! शेषनागकी शय्यापर सोये हुए उन प्रभुको देखकर मेरा मन चिन्तित हो उठा। इतनेमें भगवती योगनिद्रा याद आ गयीं। मैंने उनका स्तवन किया। तब वे कल्याणमयी भगवती श्रीविष्णुके विग्रहसे निकलकर अचिन्त्य रूप धारण करके आकाशमें विराजमान हो गयीं। दिव्य आभूषण उनकी छवि बढ़ा रहे थे। जब योगनिद्रा भगवान् विष्णुके शरीरसे अलग होकर आकाशमें विराजने लगी, तब तुरंत ही श्रीहरि उठ बैठे। उन्होंने मधु और कैटभके साथ पाँच हजार वर्षोंतक बड़ी घमासान लड़ाई की। तब वे दैत्य मरे। पहले देवीके कटाक्षसे मधु और कैटभ मोहित हो गये थे। इसके बाद भगवान् विष्णुने गोदमें लेटाकर उन्हें वहीं प्राणोंसे रहित कर दिया। अब वहाँ मैं और भगवान् विष्णु—दो थे। वहीं रुद्र भी प्रकट हो गये। हम तीनोंको भगवती आद्याशक्तिके दर्शन हुए। उन्हें देखकर मन मुग्ध हो गया। हमने उनकी उत्तम स्तुति की। तब वे आदिशक्ति हमलोगोंसे कहने लगीं।

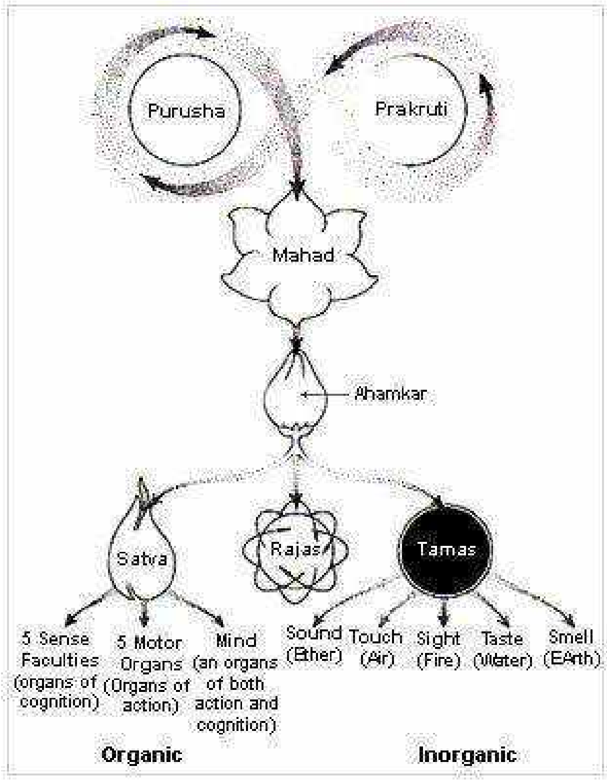
देवीने कहा—ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर! तुम भलीभाँति सावधान होकर अपने-अपने कार्यमें संलग्न हो जाओ। सृष्टि, स्थिति और संहार—ये तुम्हारे कार्य हैं। इन महान् पराक्रमी दैत्योंका निधन हो जानेपर अब तुम्हें अपना स्थान बनाकर शान्तिपूर्वक निवास करना चाहिये। तुम अब अपने सामर्थ्यसे चार प्रकारकी प्रजा उत्पन्न करो।

ब्रह्माजी कहते हैं—भगवती आद्याशक्तिकी वह वाणी बड़ी मधुर, सुन्दर एवं सुखप्रद थी। हमने वह स्पष्ट सुनी। हमलोगोंने उनसे कहा—'माता! हम किस प्रकार इन प्रजाओंके सृजन आदि कार्य करनेमें सफल हों? विस्तृत भूमिका अभाव है। सभी स्थान जलमग्न हैं। पञ्चभूत, गुण एवं तन्मात्र इन्द्रियाँ चाहिये, परंतु उनका भी अभाव है।' हमारी बात सुनकर उन कल्याणस्वरूपिणी भगवतीका मुखमण्डल मुसकानसे भर गया। इतनेमें एक सुन्दर विमान आकाशसे उतर आया। तब उन देवीने हमें आज्ञा दी—'देवताओ! निर्भीक होकर इच्छापूर्वक इस विमानमें प्रवेश कर जाओ। ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र! आज मैं तुम्हें एक अद्भुत दृश्य दिखलाती हूँ।' हमने भगवतीकी बात सुनकर उसे शिरोधार्य कर लिया। उस रत्नजटित विमानपर चढ़कर हमलोग आरामसे बैठ गये। वह विमान मोतियोंकी मालासे सुशोभित था। उससे अनेकों किङ्किणियोंकी ध्वनि हो रही थी। अमरावतीकी तुलना करनेवाले उस भव्य विमानपर हम तीनो निर्भीक होकर बैठे थे। इन्द्रिय-विजयी हम तीनो देवताओंको उसपर

अब हम समझ सकते हैं कि यहाँ देवी माँ को प्रकृति और उनके साथी को पुरुष के रूप में संबोधित किया जाता है। तो क्या ये दोनों वही प्रकृति और पुरुष हैं जो ज्ञान गंगा ने हमे बताने की कोशिश की है ?

वैसे जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि ये प्रकृति और पुरुष सांख्य दर्शन तत्व हैं और चूंकि देवी भागवत पुराण इस दर्शन से तत्वों को उधार लेते हैं, इसलिए वे उन्हें पुरुष प्रकृति कहते हैं।

कृपया स्क्रीनशॉट फिर से देखें।



यह सांख्य दार्शनिक भाग है जहाँ पुरुष ब्रह्मांडीय चेतना है जो कभी न बदलने वाली वास्तविकता है और प्रकृति जड़ वास्तविकता है जिसे पदार्थ कहा जाता है। प्रकृति में सत्व, रजस और तमस नामक तीन गुण होते हैं। ये तीन लक्षण आगे हिंदू त्रिमूर्ति के मिथक से जोड़े गए हैं। यहाँ वर्णित ये सभी बातें विशुद्ध रूप से दार्शनिक हैं और किसी देवी-देवता के परिदृश्यों से संबंधित नहीं था।

अब ज्ञान गंगा बड़ी चतुराई से आपको शिव महापुराण *(*जो कि किसी भी *18* मूल पुराण का हिस्सा नहीं है*)* नामक एक अलग पुस्तक में मोड़ देती है और उस पुस्तक से*,* उन्होंने आपको समझाने की कोशिश की कि ब्रह्म काल है और उसकी पत्नी दुर्गा है।

ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या ४९ पर लिखा है कि परम ब्रह्म *(*यहाँ कबीर कल्ट के देवता*)* का सदाशिव नाम का एक प्रतीक रूप था और परम ब्रह्म ने भी प्रकृति को उत्पन्न किया था जिसने त्रिमूर्ति का गठन किया था।

मुझमें (न) नहीं है।

"पवित्र शिव महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण"

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100

पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

कृपया शिव महापुराण से मूल संदर्भ देखें और आप वहां स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि परम ब्रह्म (यहाँ फिर से कबीर या कबीर देव का उल्लेख नहीं है) ने केवल सदाशिव या उनके प्रतीक का निर्माण किया था। सदाशिव ने मूल पुस्तक में लिखी हुई प्रकृति की रचना की थी।

पहुँच नहीं होती। वह नाम तथा रूप-रंगसे भी शून्य है। वह न स्थूल है न कृश, न ह्रस्व है न दीर्घ तथा न लघु है न गुरु। उसमें न कभी वृद्धि होती है न ह्रास। श्रुति भी उसके विषयमें चकितभावसे 'है' इतना ही कहती है, अर्थात् उसकी सत्तामात्रका ही निरूपण कर पाती है, उसका कोई विशेष विवरण देनेमें असमर्थ हो जाती है। वह सत्य, ज्ञानस्वरूप, अनन्त, परमानन्दमय, परम ज्योतिःस्वरूप, अप्रमेय, आधाररहित, निर्विकार, निराकार, निर्गुण, योगिगम्य, सर्वव्यापी, सबका एकमात्र कारण, निर्विकल्प, निरारम्भ, मायाशून्य, उपद्रव-रहित, अद्वितीय, अनादि, अनन्त, संकोच-विकाससे शून्य तथा चिन्मय है।

जिस परब्रह्मके विषयमें ज्ञान और अज्ञानसे पूर्ण उक्तियोंद्वारा इस प्रकार (ऊपर बताये अनुसार) विकल्प किये जाते हैं; उसने कुछ कालके बाद (सृष्टिका समय आनेपर) द्वितीयकी इच्छा प्रकट की—उसके भीतर एकसे अनेक होनेका संकल्प उदित हुआ। तब उस निराकार परमात्माने अपनी लीलाशक्तिसे अपने लिये मूर्ति (आकार)की कल्पना की। वह मूर्ति सम्पूर्ण ऐश्वर्य-गुणोंसे सम्पन्न, सर्वज्ञानमयी, शुभस्वरूपा, सर्वव्यापिनी, सर्वरूपा, सर्वदर्शिनी, सर्वकारिणी, सबकी एकमात्र वन्दनीया, सर्वाद्या, सब कुछ देनेवाली और सम्पूर्ण संस्कृतियोंका केन्द्र थी। उस शुद्धरूपिणी ईश्वर-मूर्तिकी कल्पना करके वह अद्वितीय, अनादि, अनन्त, सर्वप्रकाशक, चिन्मय, सर्वव्यापी और अविनाशी परब्रह्म अन्तर्हित हो गया। जो मूर्तिरहित परम ब्रह्म है, उसीकी मूर्ति (चिन्मय आकार) भगवान् सदाशिव हैं। अर्वाचीन और प्राचीन विद्वान् उन्हींको ईश्वर कहते हैं। उस समय एकाकी रहकर स्वेच्छानुसार विहार करनेवाले उन सदाशिवने अपने विग्रहसे स्वयं ही एक स्वरूपभूता शक्तिकी सृष्टि की, जो उनके अपने श्रीअङ्गसे कभी अलग होनेवाली नहीं थी। उस पराशक्तिको प्रधान, प्रकृति, गुणवती, माया, बुद्धितत्त्वकी जननी तथा विकाररहित बताया गया है। वह शक्ति अम्बिका कही गयी है। उसीको प्रकृति, सर्वेश्वरी, त्रिदेवजननी, नित्या और मूलकारण भी कहते हैं। सदाशिवद्वारा प्रकट की गयी उस शक्तिके आठ भुजाएँ हैं। उस शुभलक्षणा देवीके मुखकी शोभा विचित्र है। वह अकेली ही अपने मुखमण्डलमें सदा एक सहस्र चन्द्रमाओंकी कान्ति धारण करती है। नाना प्रकारके आभूषण उसके श्रीअङ्गोंकी शोभा बढ़ाते हैं। वह देवी नाना प्रकारकी गतियोंसे सम्पन्न है और अनेक प्रकारके अस्त्र-शस्त्र धारण करती है। उसके खुले हुए नेत्र खिले हुए कमलके समान जान पड़ते हैं। वह अचिन्त्य तेजसे जगमगाती है। वह सबकी योनि है और सदा उद्यमशील रहती है। एकाकिनी होनेपर भी वह माया संयोगवशात् अनेक हो जाती है।

वे जो सदाशिव हैं, उन्हें परमपुरुष, ईश्वर, शिव, शम्भु और महेश्वर कहते हैं। वे अपने मस्तकपर आकाश-गङ्गाको धारण करते हैं। उनके भालदेशमें चन्द्रमा शोभा पाते हैं। उनके पाँच मुख हैं और प्रत्येक मुखमें तीन-तीन नेत्र हैं। उनका चित्त सदा प्रसन्न रहता है। वे दस भुजाओंसे युक्त और त्रिशूलधारी हैं। उनके श्रीअङ्गोंकी प्रभा

अब यहाँ प्रश्न यह उठता है कि यदि सदाशिव ने प्रकृति की रचना की थी, तो हम कैसे कह सकते हैं कि ये दोनों (सदाशिव, प्रकृति) ज्ञान गंगा में वर्णित एक ही युगल हैं, क्योंकि जैसा कि ज्ञान गंगा ने स्वयं पृष्ठ संख्या *23* पर बताया है कल्ट भगवान कबीर ने ही प्रकृति की रचना की थी। यह स्वयं ज्ञान गंगा के झूठ के बारे में प्रमाण है की उन्होंने शिव महापुराण में वर्णित कहानी को फिर से कैसे रूपांतरित किया है। यदि हम मान लें कि ज्ञान गंगा वाले पुरुष प्रकृति और पुराण वाले दोनों एक ही हैं, तब भी यहाँ किसी क्षर ब्रह्म या अक्षर ब्रह्म का कोई उल्लेख नहीं है।

आप यह भी देख सकते हैं कि ज्ञान गंगा की कोई कहानी (जैसे कल्ट भगवान कबीर का नाम, कबीर *16* द्वीपों का निर्माण, कबीर *16* लड़कों का निर्माण, अक्षर ब्रह्म निर्माण और उससे क्षर ब्रह्म की रचना, क्षर ब्रह्म *21* ब्रह्मांड के कबीर पूछ रहा है, कबीर उसे आत्मा देकर, क्षर ब्रह्म या जोति निरंजन ने प्रकृति आदि का बलात्कार करने की कोशिश की) दोनों पुराणों में कहीं मौजूद नहीं है। इससे स्वयं सिद्ध होता है कि ये सभी तत्व काल्पनिक हैं और बाद में अपने तथ्यों को सही ठहराने के लिए कल्ट द्वारा बनाए गए।

वहां से ज्ञान गंगा आपको भ्रमित करती है कि ये दार्शनिक तत्व जिन्हें बाद में पुराणों में सरलीकृत किया गया था, वे केवल देवी-देवता हैं और उनके ऊपर एक सर्वोच्च देवता है जो कबीर है।

जाहिर है कि रामपाल कल्ट इस ज्ञान को आपके साथ साझा नहीं करना चाहता है इसलिए वे आपको सांख्य दर्शन के बारे में कुछ नहीं बताते हैं क्योंकि इससे उनका जादू टूट जाएगा और उनके सारे झूठ टूट जाएंगे।

भाग **8 :** श्रीमद भगवदगीता के अंदर सृष्टि रचना के प्रमाण का खंडन

हम पहले ही ऋग्वेद, अथर्ववेद, देवी भागवत और शिव महापुराण में रामपाल कल्ट द्वारा सृजन मिथक पर चर्चा कर चुके हैं। अब हम भगवद गीता खंड पर चर्चा करेंगे जहां तथाकथित कल्ट ने निर्माण मिथक के होने का दावा किया है।

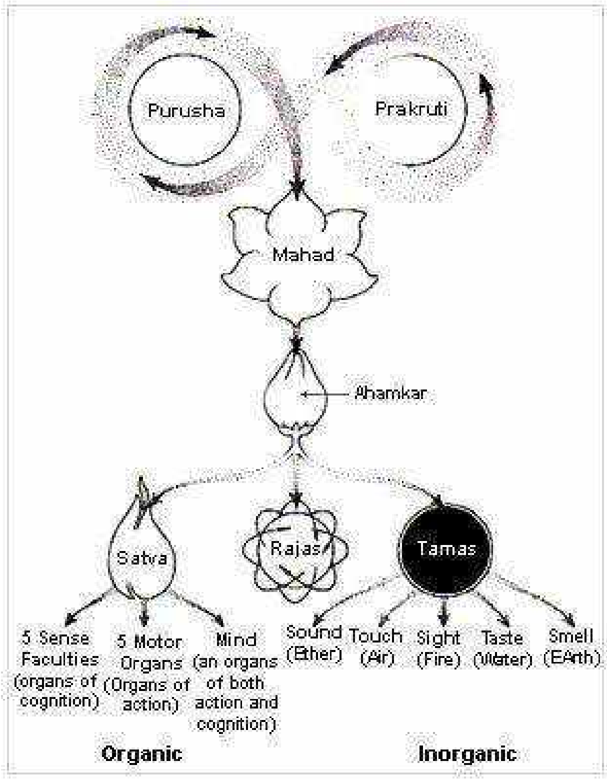
आगे बढ़ने से पहले हम सांख्य और उसके दर्शन पर फिर से चर्चा करना चाहते हैं।

जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं कि सांख्य दर्शन ब्रह्मांड के निर्माण को दो वास्तविकताओं के कारक के रूप में परिभाषित करता है। पुरुष और प्रकृति।

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं कि सांख्य दर्शन की उत्पत्ति वेदों से हुई है, लेकिन यह वेद पुरुष सूक्त से भिन्न है जहाँ पुरुष बिल्कुल अकेला था और एक सर्वोच्च था जो सृष्टि का कारण बन गया।

सांख्य उपनिषद युग में एक गैर आस्तिक दर्शन के रूप में विकसित हुआ। बाद में इसे आस्तिक दर्शन के रूप में फेरबदल किया गया जो भगवद् गीता का स्रोत बन गया।

जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि सांख्य के दो कारक हैं: पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ)। एक जीव (जीवित प्राणी) तब होता है जब पुरुष (चेतना) प्रकृति (पदार्थ) से जुड़ता है।



प्रकृति (पदार्थ) में 3 गुण हैं जो सत्व, रजस और तमस हैं जो बाद में हिंदू धर्म के संप्रदायों में तीन देवताओं या हिंदू धर्म की विशिष्ट त्रिमूर्ति के रूप में परिलक्षित होते हैं। यह देवी भागवत में भी दिखाया गया है जहां प्रकृति के 3 गुणों (गुण) को प्रकृति के 3 पुत्रों के रूप में दिखाया गया है।

अब हम पहले यह सिद्ध करेंगे कि भगवद्गीता सांख्य दर्शन पर आधारित है।

भगवद्गीता में एक संपूर्ण अध्याय संख्या 2 है जिसे सांख्य योग नाम दिया गया है।

इस अध्याय को संपूर्ण भगवद्गीता का सार कहा जाता है।

दार्शनिक दृष्टिकोण से, भगवद्गीता का सांख्य योग अस्तित्व की निम्नलिखित वास्तविकताओं (तत्वों) को सूचीबद्ध करता है। वे हैं, ईश्वर (ईश्वर तत्त्व), आत्मा (आत्मा तत्त्व), शरीर, इंद्रियाँ, मन, अहंकार और बुद्धि। उनमें से, पहले दो शुद्ध (शुद्ध) और शाश्वत वास्तविकताएं (नित्य तत्व) हैं, और बाकी अशुद्ध (अशुद्ध) और सीमित (अनित्य) हैं। अध्याय में संक्षेप में प्रकृति के गुणों का भी उल्लेख किया गया है जो प्राणियों के व्यवहार, अवस्था, दृष्टिकोण और कार्यों को निर्धारित करते हैं।

भगवद् गीता अध्याय १३ भी सांख्य दर्शन को बहुत गहराई से दर्शाता है जहाँ सांख्य दर्शन तत्वों जैसे प्रकृति, पुरुष और आत्म अवधारणाओं पर चर्चा की जाती है।

अब हम ज्ञान गंगा के दावे की ओर बढ़ते हैं जिसका उल्लेख पृष्ठ संख्या 49-50 पर किया गया है।

ज्ञान गंगा हमें अध्याय १४ पर भगवद् गीता का ३ से ५ श्लोक देती है और बिना किसी अनुवाद के दावा करती है कि दुर्गा उर्फ प्रकृति ब्रह्म/काल की पत्नी है। काल ने प्रकृति को गर्भवती किया और प्रकृति को त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) की माता कहा गया है।

हमने इन श्लोक का एक स्क्रीनशॉट प्रदान किया है, जहाँ आप श्लोक 3-4 में महद, ब्रह्म और श्लोक 5 में प्रकृति जैसे शब्द देख सकते हैं।

Bhagavad Gita: Chapter 14, Verse 3-4

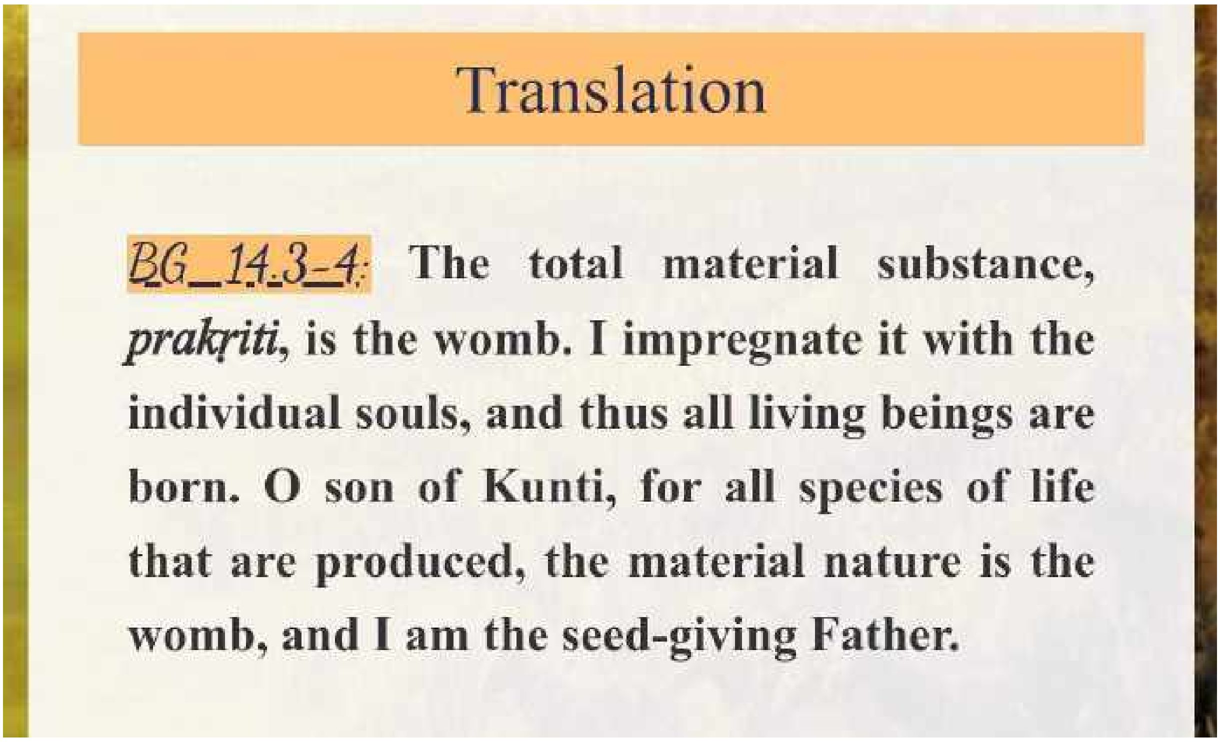
Like 13 Share

मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् |
सम्भव: सर्वभूतानां ततो भवति भारत || 3||
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तय: सम्भवन्ति या: |
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रद: पिता || 4||

mama yonir mahad brahma tasmin garbhaṁ dadhāmy aham
sambhavaḥ sarva-bhūtānāṁ tato bhavati bhārata
sarva-yoniṣhu kaunteya mūrtayaḥ sambhavanti yāḥ
tāsāṁ brahma mahad yonir ahaṁ bīja-pradaḥ pitā

0:00 / 0:51

mama— my ; *yoniḥ*— womb ; *mahat brahma*— the total material substance, prakṛiti ; *tasmin*— in that ; *garbham*— womb ; *dadhāmi*— impregnate ; *aham*— I ; *sambhavaḥ*— birth ; *sarva-bhūtānām*— of all living beings ; *tataḥ*— thereby ; *bhavati*— becomes ; *bhārata*— Arjun,



Translation

BG_14.3-4: **The total material substance, *prakriti*, is the womb. I impregnate it with the individual souls, and thus all living beings are born. O son of Kunti, for all species of life that are produced, the material nature is the womb, and I am the seed-giving Father.**

यहाँ इस अनुवाद में, शब्द प्रकृति रामपाल कल्ट का नकली चरित्र नहीं है, बल्कि सांख्य दर्शन की प्रकृति है और बीज आरोपण प्रकृति और पुरुष के संलयन की बात है। कल्ट के लोग आपको मूर्ख बनाने के लिए कहते है की देखो यहाँ लिखा है कि ब्रह्म प्रकृति को गर्भवती कर रहा है।

यदि हम कल्ट के दावे पर भरोसा कर भी ले, तो भी हम इन श्लोकों में पाते हैं कि पुरुष प्रकृति को आत्मा देते हैं जो इस तथ्य के बिलकुल विपरीत है कि ज्ञान गंगा तो स्वयं कहती हैं कि वो कबीर भगवान थे जिन्होंने आत्मा को पुरुष को दिया था। फिर

साथ ही इस अध्याय के पांचवें श्लोक में कहा गया है कि सत्व, रजस, तमस गुण हैं, ज्ञान गंगा जैसे देवता नहीं हैं, उनका वर्णन पृष्ठ ४९ पर करें। यदि ये त्रिमूर्ति हैं, तो वे गुण नहीं हो सकते हैं और यदि वे देवता नहीं हैं तो कैसे?? क्या वे यौन प्रजनन तरीके से प्रकृति से पैदा हुए हैं, ऐसा यहाँ कहाँ लिखा हुआ है ???

साथ ही एक बात ध्यान देने वाली है कि इन श्लोकों में कभी भी प्रकृति को दुर्गा कहकर संबोधित नहीं किया जाता है।

Bhagavad Gita: Chapter 14, Verse 5

Like 32 Share

सत्त्वं रजस्तम इति गुणा: प्रकृतिसम्भवा: ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ।। 5।।

sattvaṁ rajas tama iti guṇāḥ prakṛiti-sambhavāḥ
nibadhnanti mahā-bāho dehe dehinam avyayam

0:00 / 0:24

sattvam— mode of goodness ; *rajaḥ*— mode of passion ; *tamaḥ*— mode of ignorance ; *iti*— thus ; *guṇāḥ*— modes ; *prakṛiti*— material nature ; *sambhavāḥ*— consists of ; *nibadhnanti*— bind ; *mahā-bāho*— mighty-armed one ; *dehe*— in the body ; *dehinam*— the embodied soul ; *avyayam*— eternal

sattvam rajas tama iti gunah prakriti-sambhavah
nibadhnanti maha-baho dehe dehinam avyayam

Translation

BG 14.5: **O mighty-armed Arjun, the material energy consists of three *guṇas* (modes)—*sattva* (goodness), *rajas* (passion), and *tamas* (ignorance). These modes bind the eternal soul to the perishable body.**

अब हम ज्ञान गंगा का अगला विवरण पृष्ठ 49-50 अग्रेषित करेंगे जहां गीता अध्याय 15 के श्लोक 1 से 4 का उल्लेख किया गया है और उनका बाद में कल्ट और रामपाल द्वारा अनुवाद दिया गया है।

ज्ञान गंगा के इन अनुवादों में श्लोक 1 और 2 में संक्षेप में बताया गया है कि विश्व वृक्ष के ऊपर, कबीर कल्ट भगवान हैं जिन्हें पेड़ की जड़ के रूप में पूर्ण ब्रह्म नाम दिया गया है, मध्य तने में अक्षर ब्रह्म है और अंत में क्षर ब्रह्म और शेष त्रिदेव देवता हैं जो की इस पेड़ के पत्ते है।

श्लोक 3 में कहा गया है कि गीता ज्ञान दाता को ज्ञान का कोई पता नहीं था जो वह दे रहा है। इसलिए उन्होंने श्लोक 4 में तत्वदर्शी संत के पास जाने की सलाह दी क्योंकि काल उर्फ ज्योति निरंजन गीता ज्ञान दाता के देवता हैं जिसे कोई ज्ञान नहीं है और असली दिव्य ज्ञान कबीर कल्ट भगवन को है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जडें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा ।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्ष्म वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

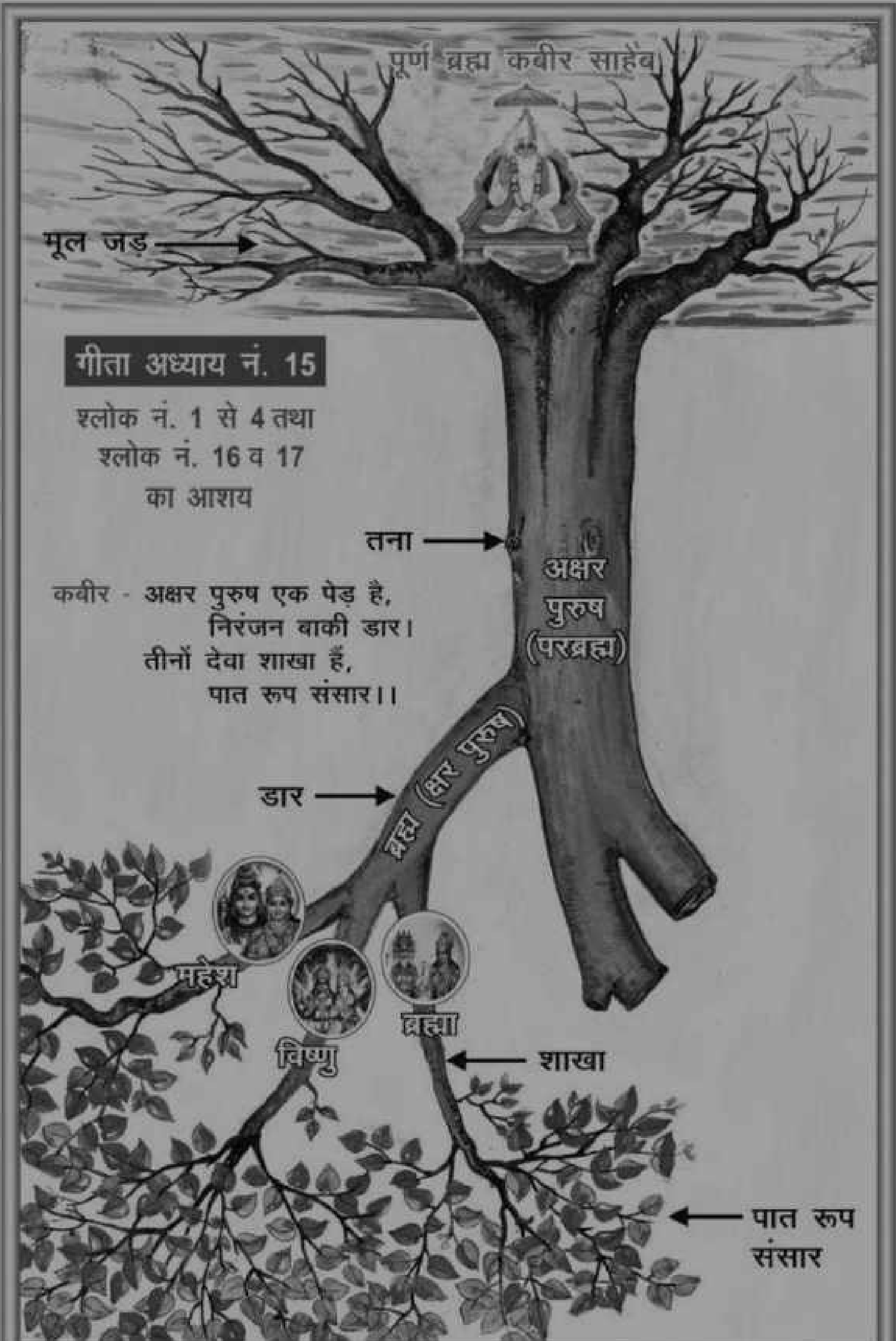
गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी ।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए

इस अनुवाद में रामपाल कल्ट तीन देवताओं (परम अक्षर ब्रह्म, अक्षर ब्रह्म, क्षर ब्रह्म) पर अपने दावे को स्पष्ट करने के लिए एक पेड़ जैसी छवि भी प्रदान करता है।

कृपया इस छवि को देखें।



ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

इस छवि में, शीर्ष बैठे हैं कल्ट भगवान कबीर, नीचे अक्षर पुरुष उर्फ परब्रह्म और अंत में शर ब्रह्म और उनका परिवार है।

सबसे पहले हम एक बार फिर इन उपर्युक्त श्लोकों का एक-एक करके अनुवाद करेंगे।

ऊर्ध्वं ***(above)*** मूलम ***(roots)*** अध***:(downwards)*** शाखम***(branches)*** अश्वत्थं ***(Sacred Fig, Pipal tree)***प्राहु***: (they speak, they told)*** अव्ययम् ***(imperishable)|***

छन्दांसि***(you prosody)*** यस्य***(is its)***पर्णानि ***(leaves)*** यस्तं वेद***(those who know it)*** स वेदवित्***(they are knower)*** ॥***1***॥

अधश**(down)** च**(and)** उर्ध्वम**(above)** प्रसृता**(extended)** तस्य**(its)** शाखा**(branches)** गुणप्रवृद्धा**(trait nourished)** विषयप्रवाला**: (object of the senses buds)**

अधश्च **(downwards and)** मूलान्यनुसन्ततानि**(roots keeps growing)**

कर्मानुबन्धीनि **(action bound)** मनुष्यलोके **(in the human realm)**

न **(no)** रूपमस्येह**(of this in this world)** तथोपलभ्यते**(as such is perceived)**

नान्तो**(netiher ending)** न चादिर्न**(and nor beginning)** च**(and)** सम्प्रतिष्ठा **(basis)**

अश्वत्थमेनं **(this sacred fig tree)** सुविरूढमूल **(deep rooted)**

असङ्गशस्त्रेण**(with the weapon of Detachment)** दृढेन**(strong)** छित्त्वा **(cut down)|| 3||**

तत**: (then)** पदं **(place)** तत्परिमार्गितव्यं **(that one must search out)**

यस्मिन्गता **(where having gone)** न **(no)** निवर्तन्ति **(return)** भूय**: (again)|**

तमेव**(to him alone)** चाद्यं **(and original)** पुरुषं **(purush)** प्रपद्ये **(take refuge)**

यत**: (whence)** प्रवृत्ति**: (the activity)** प्रसृता **(streamed forth)** पुराणी**(old) || 4|**

अनुवाद*:*

परम दिव्य व्यक्तित्व ने कहा*:* वे एक शाश्वत अश्वत्थ *(*अंजीर का वृक्ष*)* की बात करते हैं जिसकी जड़ें ऊपर और नीचे शाखाएं हैं। इसके पत्ते वैदिक सूक्त हैं, और जो इस वृक्ष का रहस्य जानता है वह वेदों का ज्ञाता है।

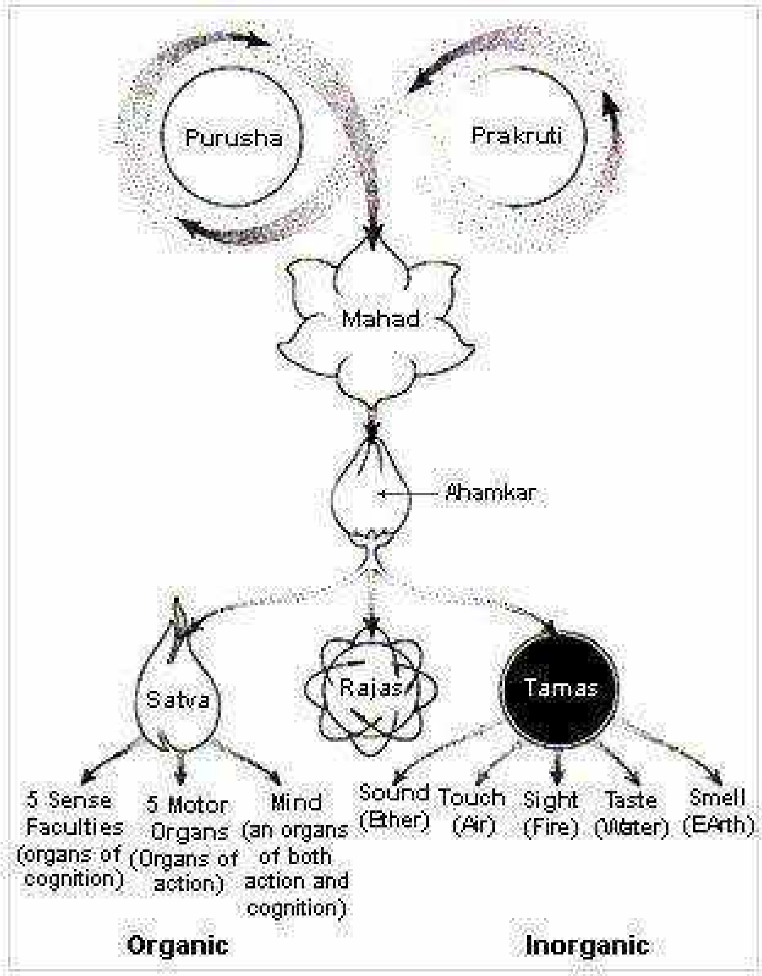
वृक्ष की शाखाएं ऊपर और नीचे फैली हुई हैं, तीन गुणों द्वारा पोषित, इंद्रियों की वस्तुओं के साथ कोमल कलियों के रूप में। वृक्ष की जड़ें नीचे की ओर लटकती हैं, जिससे मानव रूप में कर्म का प्रवाह होता है। नीचे, इसकी जड़ें मनुष्यों की दुनिया में कारण *(*कर्म*)* क्रियाओं को बाहर निकालती हैं।

इस वृक्ष का वास्तविक रूप इस संसार में नहीं माना जाता है, न इसका आदि और न ही अंत, और न ही इसका निरंतर अस्तित्व। लेकिन इस गहरे जड़ वाले अश्वत्थ वृक्ष को अनासक्ति की मजबूत कुल्हाड़ी से काट देना चाहिए। फिर व्यक्ति को उस वृक्ष के आधार की खोज करनी चाहिए, जो कि सर्वोच्च भगवान हैं, जिनसे बहुत समय पहले ब्रह्मांड की गतिविधि की शुरुआत हुई थी। उसकी शरण में जाने पर मनुष्य फिर इस संसार में नहीं आता।

यहाँ यह स्पष्ट है कि इन पक्तियों में एक पवित्र अंजीर के पेड़ के बारे में बताया है, जो उल्टा है। इसकी जड़े ऊपर की ओर तथा पत्तियाँ नीचे की ओर होती हैं। अब यह काफी भ्रमित करने वाला है कि योगेश्वर कृष्ण और भगवद् गीता किस पेड़ की बात कर रहे हैं *???*

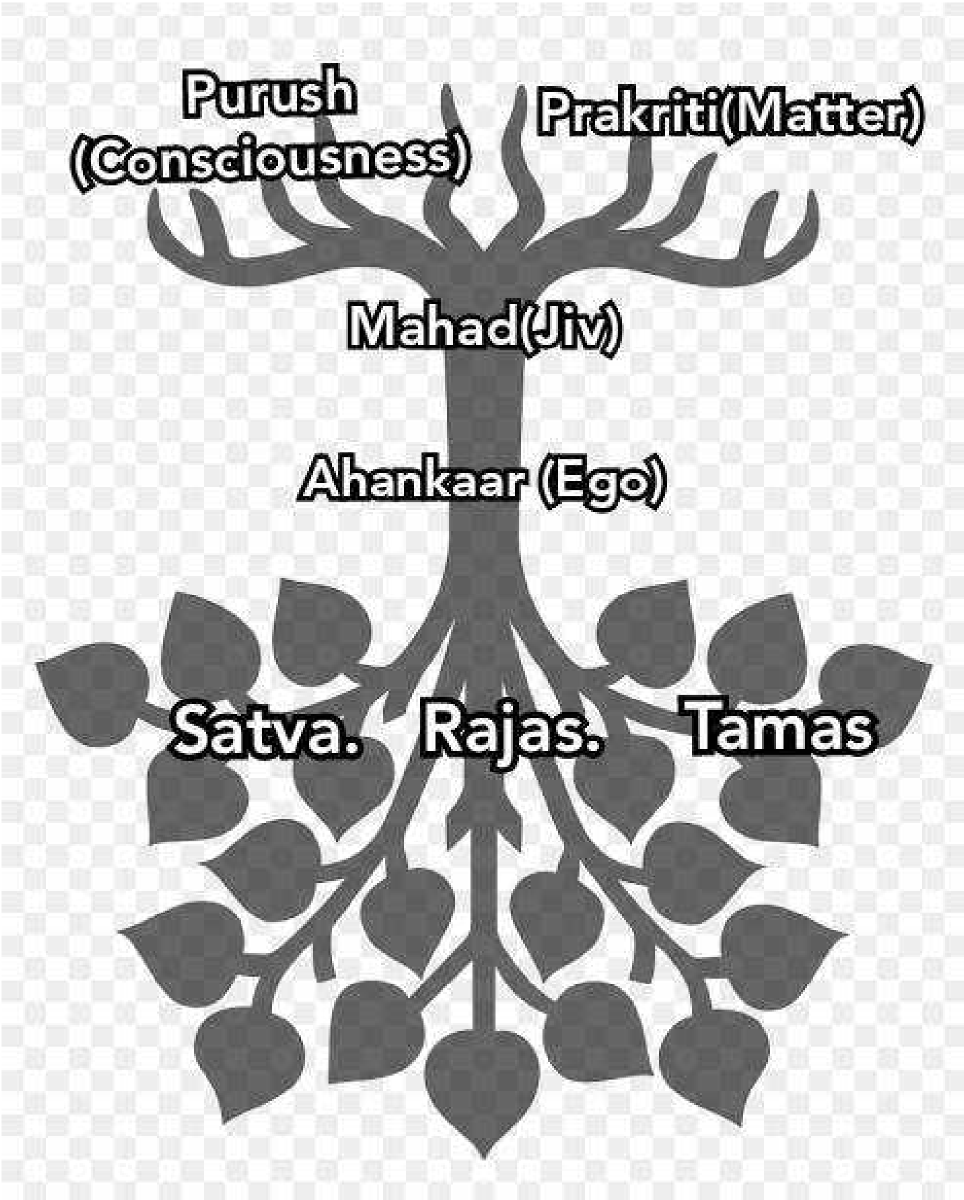
खैर क्या हो अगर मैं आपको बता दूं कि यह पेड़ आपको सांख्य दर्शन में पहले ही दिख चूका है *!!!!!*

चौंक गये न*???*



एक बार फिर देखें सांख्य दर्शन की एक छवि।

अब पुरुष प्रकृति को जड़ और प्रकृति के गुण को पत्तियों के रूप में कल्पना करें, महद *(अहंकार)* को तने के रूप में और सारी छवि को एक पेड़ के रूप में।



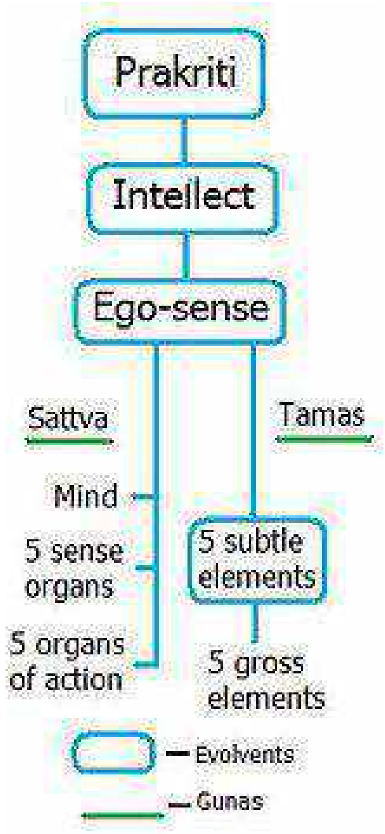
अब यही वह पेड़ है जिसके बारे में योगेश्वर कृष्ण बात कर रहे हैं।

यह वह वृक्ष है जिसकी जड़ें पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ) हैं और उसका तना महद (अहंकार) है। यह तना (अहंकार) वह चीज है जिसे कृष्ण आपको काटने और आधार (पुरुष और प्रकृति) में जाने के लिए कहते हैं।

लेकिन रामपाल कल्ट ने अपने कल्ट के मनघडंत देवताओं और अन्य नकली पात्रों को हर जगह प्रसारित किया और कभी भी सांख्य दर्शन के बारे में बात नहीं की। क्योंकि वह जानता था कि सांख्य के बारे में बात करने से उसके सारे धोखे और झूठे दावे सामने आ जाएंगे।

तीन देवताओं को जन्म देने वाली कहानी भी प्रकृति से उत्पन्न गुणों से निकली एक नकली कहानी है।

कृपया नीचे दी गई छवि देखें।



इस प्रकार से हम ने देखा की कैसे रामपाल कल्ट ने फिर से भगवत गीता से मनमाने अनुवाद किये और सांख्य दर्शन को सही से अपने शिष्यों को न बताकर कैसे चेरी पीकिंग कुतर्क तकनीक (cherry picking) का सहारा लिया।

भाग 10: काल निरंजन

हम पहले ही रामपाल कल्ट पौराणिक कथाओं की दो प्रमुख पात्र (कबीर भगवान, रामपाल) पर चर्चा कर चुके हैं।

अब हम काल निरंजन की वास्तविकता पर चर्चा और उसका पर्दाफाश करेंगे।

आगे शुरू करने से पहले, हम सूफी दर्शन का वर्णन करेंगे जिसका अभ्यास कई मुस्लिम सूफी संतों जैसे फरीद, कबीर, गरीबदास आदि द्वारा किया गया था और कई अन्य संतों द्वारा भी प्रशंसा की गई थी जैसे की नानक जो की सूफी नहीं थे।

क्षेत्र के आधार पर दर्शन दो प्रकार के होते हैं, जैसे पश्चिमी दर्शन और पूर्वी दर्शन।

पश्चिमी दर्शन जिसमें सूफीवाद, हासिद, ईसाई रहस्यवाद आदि शामिल हैं, वे प्रमुख रूप से मृत्यु के बारे में बात करते हैं जो उनके प्रमुख विचार का विषय है। वे अपने लोगों को सबसे अंतिम गंतव्य के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिसके लिए उन्हें अच्छा काम करना चाहिए और किसी भी बुरे काम को करने से पहले मृत्यु से डरना चाहिए ताकि उन्हें मरने के बाद नर्क या जहन्नुम जैसी जगहों पर भटकने से बचाव हो। पश्चिम के कई मजहब भी मृत्यु को मानवो को डराने के लिए एक उपकरण का उपयोग करते हैं और उन्हें अपने मजहब में शामिल करते हैं क्योंकि ऐसा करने से उन्हें किसी गैर मजहबी को अपने मजहब में लाने का पुण्य मिलेगा और स्वर्ग जैसी अच्छी जगह में शरण मिल जाएगी।

द बुक ऑफ विजडम वॉल्यूम 2 पेज 24 नाम की यहूदी किताब में लिखा है कि डेविल (शैतान) मौत को इस दुनिया में लाते हैं जो हमें दर्शाती है कि कैसे पश्चिमी दर्शन मौत को शैतान से जोड़ता है।

बाइबिल की जॉन १२:३१ और १४:३० के सुसमाचार का दावा है कि शैतान नरक और पृथ्वी का राजकुमार है जो फिर से बिंदुओं को जोड़ता है कि कैसे शैतान की अवधारणा को पृथ्वी और नरक से जोड़ा गया ताकि गैर मजहबी लोगो को नर्क और शैतान का डर दिखाया जा सके।

सूफीवाद इस्लाम में एक संप्रदाय आधारित पश्चिमी दर्शन है जो मृत्यु के बारे में गहराई से बात करता है। सूफी दर्शन मनुष्य को इस अंतिम वास्तविकता के बारे में सोचने और अल्लाह के प्रति अपनी कार्रवाई को संशोधित करने और अच्छे काम करने के लिए मृत्यु को एक हथियार के रूप में लेता है। हालाँकि इस उपकरण का उपयोग सूफीवाद के कई गैर-मुस्लिम द्वारा भी किया जाता है। एक बात आपको ध्यान देनी चाहिए कि सूफीवाद ने हमेशा मृत्यु को एक दार्शनिक घटना के रूप में लिया, न कि एक व्यक्ति के रूप में। बाद में इस्लाम और ईसाई धर्म मृत्यु का उपयोग एक व्यक्ति के रूप में या अजरेल नाम के एक फ़रिश्ते के रूप में करते हैं या यहां तक कि

शैतान के एजेंट के रूप में भी करते हैं। उन्हें बाद में इन धर्मों में दुनिया में होने वाली मौतों या बीमारियों या आपदा के लिए भी दोषी ठहराया जाता है।

इस बीच अगर हम पूर्वी दर्शन के बारे में बात करते हैं, तो मृत्यु कभी भी किसी भी तरह की बुराई से जुड़ी नहीं होती है। बल्कि इसे जीवन की अंतिम घटना के रूप में ही देखा जाता है। उपनिषद में मृत्यु को शिक्षक या गुरु के रूप में भी देखा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति को तपस्वी होना या मानव को भौतिकवाद से अध्यात्म की ओर ले जाना सिखाता है। बुराई या उसका व्यक्तित्व शैतान कभी हिंदू धर्म, सिख धर्म का हिस्सा नहीं रहा है। कल्कि पुराण नामक केवल एक पुराण में राक्षस कली के रूप में इसका उल्लेख है जो कल्कि से पराजित होगा। लेकिन फिर भी, यह राक्षस हिंदू धर्म में सर्वोच्च देवता नहीं है बल्कि एक राक्षस है जो कल्कि से पराजित हो जाएगा।

अब हम बात करेंगे काल निरंजन उर्फ ज्योति निरंजन उर्फ शैतान उर्फ काल ब्रह्म की।

रामपाल कल्ट के इस चरित्र की चर्चा कई बार ज्ञान गंगा पुस्तक के पृष्ठ 1, 32,33 और अन्य में कई बार की गई है।

संक्षेप में काल निरंजन की मूल कहानी इस प्रकार है:-

1. मानसरोवर झील में अक्षर ब्रह्म के ज्यादा सोने के कारण कल्ट भगवन कबीर एक अंडा बनाकर मानसरोवर में गिरा देते हैं। यह अंडा झील में जाकर टूट गया और ज्योति निरंजन उसमे से निकल गया।

2. उन्होंने सतलोक में निवास करना शुरू किया और कल्ट भगवान कबीर की पूजा करके 21 ब्रह्मांड तक पहुंच प्राप्त की।

3. फिर उसने आत्मा मांगी लेकिन कल्ट भगवान कबीर ने मना कर दिया और कहा कि अगर कोई आत्मा स्वेच्छा से उसके साथ जाना चाहती है तो वह आत्माओं को अनुदान देगा।

4. कुछ आत्माएं जोती निरंजन के साथ जाने को राजी हो जाती हैं।

5. सबसे पहली आत्मा जिसने जोति निरंजन के साथ जाने को हामी भरी, उसे प्रकृति बनाया गया।

6. जब वह जवान हुई तो जोती निरंजन ने उसे बहला-फुसलाकर उसकी योनि से बलात्कार करने की कोशिश की।

7. तब प्रकृति ने ज्योति निर्जन के पेट में जाकर उसे बचाया और कबीर से मदद मांगी।

8. कबीर अपने पुत्र के द्वार पर आए और उन दोनों को श्राप दिया और उनके 21 ब्रह्मांडों को सतलोक से बाहर निकाल दिया।

तो यह है जोती निरंजन उर्फ काल कथा का सार, श्राप के बाद वह काल निरंजन बन जाता है और उन आत्माओं के सार को तप्तशिला पर जलाकर खाने लगता है।

यह कल्ट की सबसे विचित्र कहानी है जिसका हिंदू पवित्र पुस्तकों में कोई सिर या पैर नहीं है। कल्ट और रामपाल ने सभी हिंदू ग्रंथों की जबरदस्ती व्याख्या की कि ब्रह्म वास्तव में काल निरंजन है, लेकिन हमने पूरी तरह से साबित कर दिया है कि ब्रह्म वेदों में व्यक्ति नहीं है और वह न तो मृत्यु है और न ही शैतान है। यह पूरी कहानी रामपाल कल्ट द्वारा बिना किसी प्रमाण के बना दी गई है।

वे हिंदू पवित्र पुस्तकों से कई बातों का काल निरंजन वाली कहानी के लिए उपयोग करते हैं जो नीचे दिखाए गए हैं

1. एक अंडे से आने वाला काल निरंजन: हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान की यह पुरानी अवधारणा है कि ब्रह्म एक अंडे के आकार का होता है, इसलिए इसे ब्रह्मांड (ब्रह्म अंडा) कहा जाता है। इसे ऋग्वेद 10.121.1 . में हिरण्यग्रभ (स्वर्ण गर्भ) भी कहा गया है

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

अंग्रेज़ी लिप्यंतरण

hiraṇyagarbhaḥ sam avartatāgre bhūtasya jātaḥ patir eka āsīt | sa dādhāra pṛthivīṁ dyām utemāṁ kasmai devāya haviṣā vidhema ||

पद पाठ

हिरण्यऽगर्भः । सम् । अवर्तत । अग्रे । भूतस्य । जातः । पतिः । एकः । आसीत् । सः । दाधार । पृथिवीम् । द्याम् । उत । इमाम् । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥ १०.१२१.१

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:121» मन्त्र:1 | *अष्टक:8» अध्याय:7» वर्ग:3» मन्त्र:1* | मण्डल:10» अनुवाक:10» मन्त्र:1

हम ऋग्वेद *10.121.2* से मंत्र भी दिखाना चाहते हैं जिसमें कहा गया है कि मृत्यु हिरण्यगर्भ की छाया मात्र है, जो शक्ति और अमरता प्रदान करती है।

य आ॒त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ उ॒पास॑ते प्र॒शिषं॒ यस्य॑ दे॒वाः । यस्य॑ छा॒यामृतं॒ यस्य॑ मृ॒त्युः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥

अंग्रेज़ी लिप्यंतरण

ya ātmadā baladā yasya viśva upāsate praśiṣaṁ yasya devāḥ | yasya chāyāmṛtaṁ yasya mṛtyuḥ kasmai devāya haviṣā vidhema ||

पद पाठ

यः । आ॒त्म॒ऽदाः । ब॒ल॒ऽदाः । यस्य॑ । विश्वे॑ । उ॒प॒ऽआस॑ते । प्र॒ऽशिष॑म् । यस्य॑ । दे॒वाः । यस्य॑ । छा॒याम् । ऋ॒तम् । यस्य॑ । मृ॒त्युः । कस्मै॑ । दे॒वाय॑ । ह॒विषा॑ । वि॒धे॒म॒ ॥ १०.१२१.२

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:121» मन्त्र:2 | *अष्टक:8» अध्याय:7» वर्ग:3» मन्त्र:2* | मण्डल:10» अनुवाक:10» मन्त्र:2

उपलब्ध भाष्य

×

ब्रह्ममुनि

पदार्थान्वयभाषाः -(यः) जो (आत्मदाः) आत्मबोध का देनेवाला (बलदाः) बल का देनेवाला (यस्य) जिसके (प्रशिषम्) प्रशासन को (विश्वे) सब साधारण जन (उपासते) सेवन करते हैं (यस्य) जिसके प्रशासन को (देवाः) विशिष्ट विद्वान् सेवन करते हैं, आचरण में लाते हैं (यस्य छाया) जिसकी छाया-आश्रय-शरण (अमृतम्) अमृत है

इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्म या हिरण्यगर्भ मृत्यु से भिन्न और अलग वस्तु है।

ज्ञान गंगा ने यह भी दावा करने की कोशिश की कि ब्रह्म गीता श्लोक 11.32 से काल है जहां लिखा है कि मैं काल हूं, दुनिया का विनाशक हूं। इसलिए यह सिद्ध करना कि काल निर्जन उर्फ शैतान उर्फ ज्योति निरंजन गीता ज्ञान दाता है।

हम इस बात पर इसी पुस्तक में एक अलग अध्याय में चर्चा करेंगे क्योंकि इस कल्ट द्वारा भगवद गीता का सबसे जयादा गलत तरीके से रामपाल द्वारा उनके एजेंडे के लिए अनुवाद किया गया है। अभी के लिए हम केवल इतना ही कहेंगे कि स्वयं को काल कहने का अर्थ यह नहीं है कि कृष्ण अपने काल निरंजन होने का दावा कर रहे हैं। यदि कल्ट के सदस्य अभी भी इस कुतर्क पर विश्वास करना चाहते हैं तो हम इसी तरह कुतर्क से यह भी साबित कर सकते हैं कि कल्ट भगवान कबीर भी काल निरंजन हैं *!!!!*

चौंक गए क्या *????*

पृष्ठ *65* पर ज्ञान गंगा कहती है कि कबीर अथर्ववेद में वर्णित बृहस्पति है और गीता ज्ञान दाता *10* अध्याय *24* श्लोक में कहते हैं कि मैं बृहस्पति हूँ।

और ज्ञान गंगा का दावा है कि गीता ज्ञान दाता काल निरंजन है।

और ज्ञान गंगा के अनुसार कबीर का एक नाम बृहस्पति है और गीता ज्ञान दाता भी बृहस्पति है और गीता ज्ञान दाता काल निरंजन है।

यानी की कबीर = बृहस्पति = गीता ज्ञान दाता = काल निरंजन*!!*

इसलिए सिद्ध हुआ कि काल निरंजन ही कबीर है...

😂😂😂😂

यही नही नीचे दिए गए स्क्रीनशॉट से देख कर यह भी देखिए की क्यों कबीर ने भी आजतक किसी को भी आज तक अपने असली रूप के दर्शन नही दीए***??***



हिंदू पुस्तकों में काल निरंजन की स्थिति के बाद, रामपाल कल्ट यह भी दावा करता है कि यह काल निरंजन वास्तव में इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरान और ईसाई धर्म की पवित्र पुस्तक बाइबिल में वर्णित शैतान है। रामपाल कल्ट ने कई बार भ्रामक रूप से दावा किया है कि बाइबिल में बताया गया गॉड याहवे/एली और इस्लाम का खुदा अल्लाह वास्तव में काल निरंजन है।

हमने वास्तव में इस बात को खारिज कर दिया है कि कुरान और बाइबिल में कबीर के नाम के बारे में सभी कल्ट के उल्लिखित दावे पूरी तरह से नकली और विकृत सबूत हैं। अब हम उनके काल निरंजन के दावे को शैतान के रूप में भी देखेंगे।

हमें पहले कुरान में शैतान नाम के चरित्र को देखना होगा।

कुरान हमें शैतान या इब्लीस के बारे में अध्याय 7 श्लोक 11 से 15 में बताता है। श्लोक 12 में बताया गया है कि इबलीस भी एक फरिश्ता था और आग से बना था और मनुष्य मिट्टी से बना था।



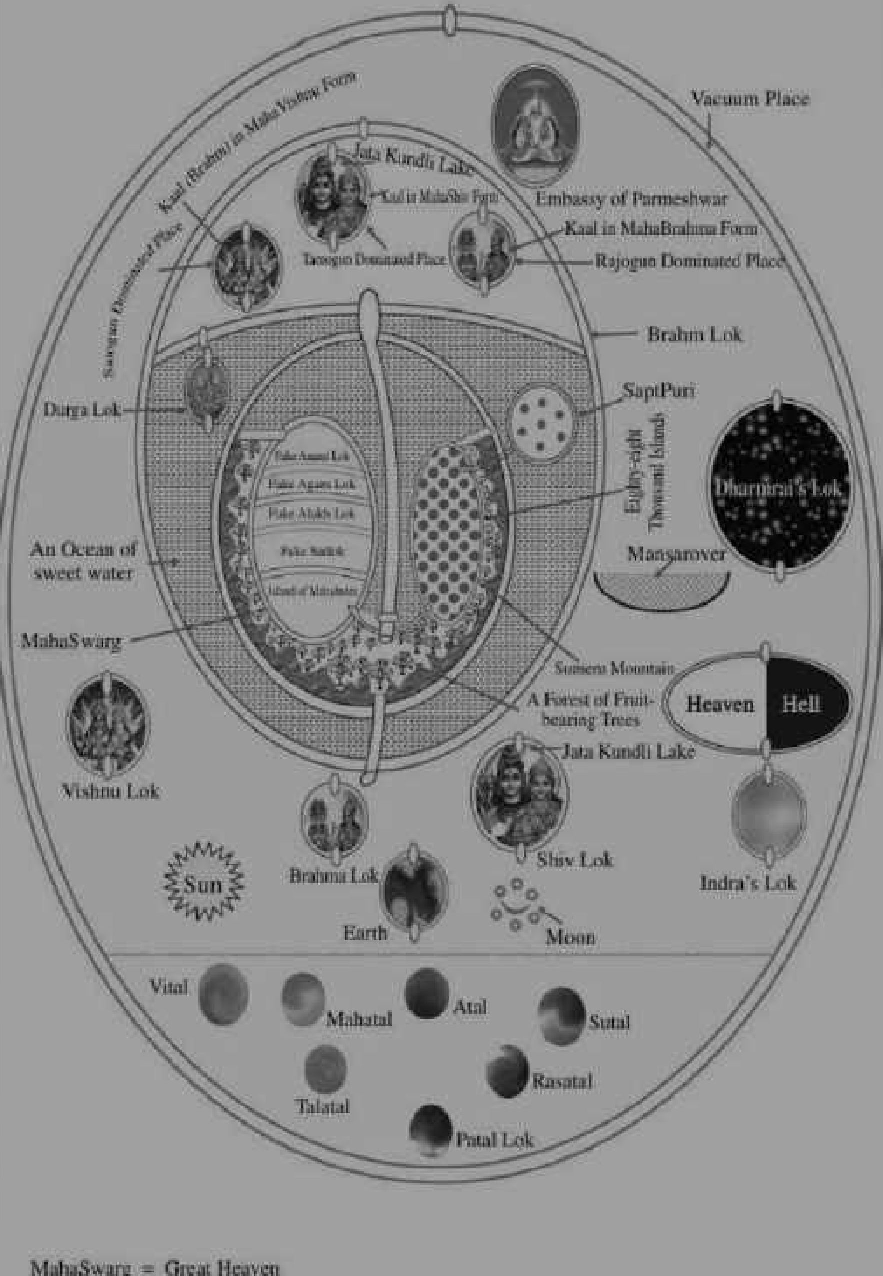
कुरान के इस संदर्भ ने ही हमें बताया कि कुरान में शैतान आग से बना था लेकिन जैसा कि हम ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *31-32* में जानते हैं कि काल निरंजन अंडे से पैदा हुआ था और वह भी अमृत के तालाब में।

इसी अध्याय श्लोक 18 में, कि अल्लाह ने इब्लीस या शैतान को जन्नत से नर्क में निकाल दिया। नीचे स्क्रीनशॉट देखें।



यह फिर से ज्ञान गंगा के पृष्ठ संख्या *34* और *36* का खंडन करता है कि कल्ट भगवान कबीर ने काल निर्जन और उनके २१ ब्रह्मांड को अपने सतलोक से बाहर निकाल दिया क्योंकि जैसा कि आप नीचे इस पृष्ठ संख्या *34* को देख सकते हैं कि नरक तो खुद काल निरंजन के एक ब्रह्मांड का एक हिस्सा है। अगर कुरान का असली भगवान एक ही कल्ट भगवान कबीर है तो कुरान और ज्ञान गंगा के काल निरंजन में शैतान के लिए दो अलग-अलग बात कैसे हो सकते हैं।

A Miniature Picture of One Brahmand



MahaSwarg = Great Heaven

SaptPuri = Seven Cities

यह स्पष्ट रूप से ज्ञान गंगा का खंडन करता है और साबित करता है कि काल निरंजन चरित्र कुरान के शैतान से अलग है।

आइए हम पवित्र बाइबल में शैतान के संदर्भ को भी देखें।

पवित्र बाइबिल अध्याय उत्पत्ति में, यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि शैतान ने पहले मानव आदम और उसकी पत्नी ईव को ज्ञान का फल खाने के लिए लुभाया और फिर सर्वोच्च भगवान यहोवा ने उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया। उसने शैतान को नर्क के दायरे में भी निष्कासित कर दिया और शैतान ने दुष्ट आत्माओं का फैसल किया और उन्हें नरक में प्रताड़ित करने लगा।

यहाँ एक बार फिर ज्ञान गंगा के काल निरंजन और बाइबिल विरोधाभास में दीखते है। बाइबिल के सर्वोच्च भगवान यहोवा ने शैतान को नर्क में भेजा, लेकिन कल्ट भगवान कबीर ने उसे अपने खुद के *21* ब्रह्मांड के साथ भेजा था जिसमें नरक को एक भाग के रूप में शामिल किया गया था जैसा कि हमने ज्ञान गंगा की ऊपर की इमेज में देखा है।

आप यह भी देख सकते हैं कि कुरान और बाइबिल दोनों का दावा है कि शुरुआत में दो इंसान थे और दोनों को अल्लाह और यहोवा ने पृथ्वी पर निष्कासित कर दिया था, लेकिन ज्ञान गंगा के अनुसार किसी भी इंसान को उनके सर्वोच्च भगवान कबीर ने बाहर नहीं किया था उलटे दो दिव्य प्राणियों*(*प्रकृति और ज्योति निरंजन*)* को निष्कासित किया था। यह फिर से कल्ट बुक और इन दो किताबों में एक बहुत बड़ा विरोधाभास है।

हमने यह भी देखा है कि बाइबिल का दावा है कि शैतान दुष्टों को नरक में जलायेगा और वे इस दुख से कभी भी बाहर नहीं निकलेंगे क्योंकि उनका कोई भी पुर्नजनम नही होगा, लेकिन ज्ञान गंगा का दावा है कि काल निरंजन आत्माओ को जला कर उनका मलिन पदार्थ को खाने के बाद उनका पुनर्जन्म होने के लिए फेंक देगा। एक बार फिर बड़ा विरोधाभास क्योंकि जिधर इस्लाम और ईसाइयत किसी भी आत्मा के पुनर्जन्म पर यकीन नहीं रखती, वही रामपाल का कल्ट इसमें यकीन रखता है*!!!!!*

अंत में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि काल निरंजन पश्चिमी दर्शन विषयों से बना एक नकली किरदार है और यह हिंदू अवधारणा ब्रह्म या यहां तक कि इस्लामी-ईसाई अवधारणा के शैतान तक से जुड़ा हुआ नहीं है।

भाग 11 : कल्ट में भय और लालच का इस्तेमाल

जैसा कि हमने पहले अध्याय में चर्चा की थी कि हरेक कल्ट के सदस्यों की भावनाओं में हेरफेर करने के लिए एक कल्ट हमेशा लालच और भय को प्रमुख हथियारों के रूप में उपयोग करता है।

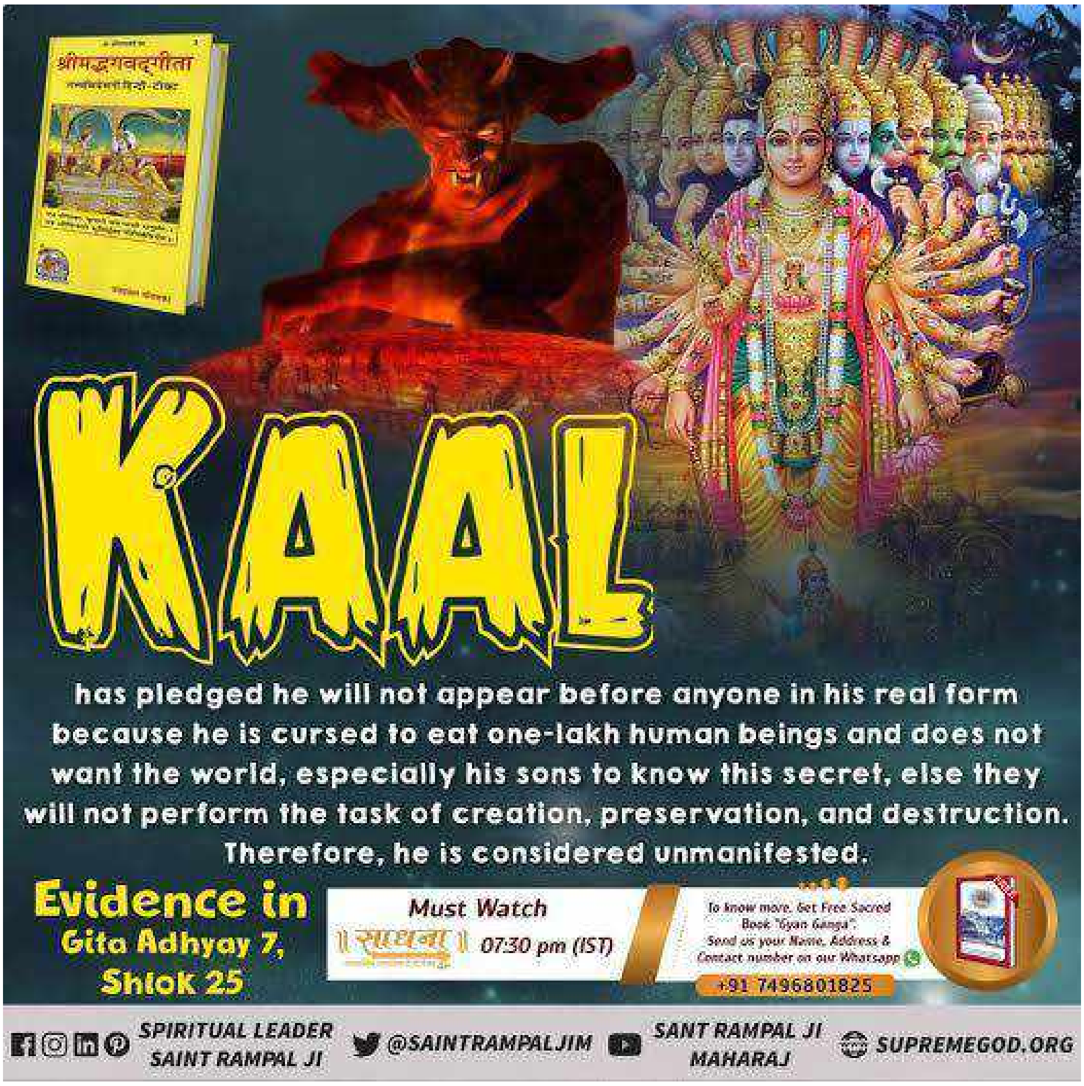
इस छोटे से अध्याय में हम यह बात देखेंगे।

जब भी हम रामपाल कल्ट का कहीं भी विरोध करते है और अपने प्रमाण पेश करते है तो या तो कल्ट वाले हमे झूठा कहते है या फिर हमे मरने के बाद पछतावे से डराते है।

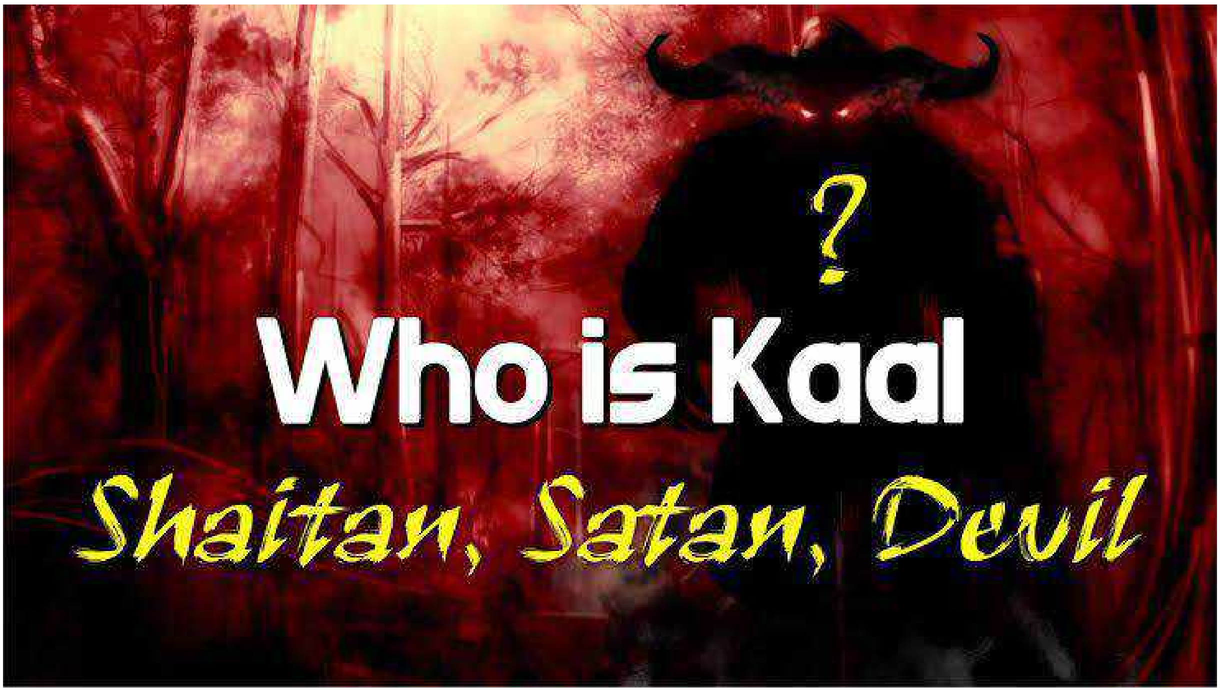
वे हमेशा इस शब्द का प्रयोग करते हैं कि हम मृत्यु के बाद पछताएंगे, जब काल निरंजन उर्फ ज्योति निरंजन उर्फ शैतान हम पर अत्याचार करेगा। हम जो रामपाल के कल्ट में नहीं मानते, काल निरंजन के बहकावे और उसकी माया के दायरे में है और मरने के बाद फिर हमे कोई शरण या सुख नहीं होगा।

हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि काल निरंजन उर्फ ज्योति निरंजन उर्फ शैतान रामपाल कल्ट में मुख्य खलनायक या विलेन है जो सबसे बड़ा धोकेबाज है और वह अपने पूरे 21 ब्रह्मांड में जीवित प्राणियों को खाने के लिए जन्मता और मारता है। जैसा कि ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या 141 में उल्लेख किया गया है कि काल निरंजन जीव की मृत्यु के बाद उन्हें तप्त शिला नामक भट्टी में ले जाता हैं और फिर आत्माओं को जलाते हैं और फिर उनका बचा हुआ गंद खाते हैं। उसके बाद वह उन्हें धर्मराज या दिव्य न्यायाधीश के पास फेंक देता है जो उनके कर्म के आधार पर उनके अनुसार न्याय करते हैं।

यदि आप काल निरंजन नाम से गूगल पर खोज करते हैं, तो आपको काल निरंजन या काल ब्रह्म की बहुत सारी इमेजस की एक लंबी सूची मिलेगी, जो ज्यादातर बाइबिल के शैतान की ही एक भोंडी नकल पर आधारित हैं। उसे क्रूर और डरावना दिखाने के लिए उसे भीषण रूप से कुरूप और गंदा दिखाया जाता है। कृपया काल निरंजन के कुछ छवि देखें जो स्वयं रामपाल कल्ट द्वारा बनाई गई हैं।


श्रीमद्भगवद्गीता
KAAL
has pledged he will not appear before anyone in his real form because he is cursed to eat one-lakh human beings and does not want the world, especially his sons to know this secret, else they will not perform the task of creation, preservation, and destruction. Therefore, he is considered unmanifested.
Evidence in Gita Adhyay 7, Shlok 25
Must Watch
साधना
07:30 pm (IST)
To know more, Get Free Sacred Book "Gyan Ganga". Send us your Name, Address & Contact number on our Whatsapp
+91 7496801825
SPIRITUAL LEADER SAINT RAMPAL JI
@SAINTRAMPALJIM
SANT RAMPAL JI MAHARAJ
SUPREMEGOD.ORG


WHO IS
KAAL?
Rigved Mandal 10 Sukt 90 Mantra 1
In this Mantra, there is description of
Viraat (Kaal/Brahm).
In Gita, Adhyay 10 -11 also,
there is a similar description
of this Kaal/Brahm. In Adhyay 11
Mantra 46, Arjun is saying that oh
Sahasrbaahu i.e one with thousand
arms, you may appear in your
chaturbhuj form/four-armed form.



हालाँकि हम काल के पिछले अध्याय में पहले ही कई प्रमाण दे चुके हैं, कि रामपाल कल्ट ने खुद अपने कल्ट के सदस्यों और गैर सदस्यो को डराने के लिए इस चरित्र का निर्माण किया है। यह तो एक बच्चा भी समझ जायेगा की अगर काल को किसी ने भी नहीं देखा है तो कल्ट के अनुयायी या कल्ट के लोगों को उसकी ऐसी तस्वीर बनाने की प्रेरणा किधर से मिल गई?? जिसे किसी ने नहीं देखा तो कल्ट वालों को कैसे पता है की वह सिंगो वाला, भयानक लाल रंग वाला है???

डर एक सामान्य हथियार है जिसका उपयोग मुख्य रूप से कल्ट के विश्वासी और कल्ट में विश्वास न रखने वाले अविश्वासियों के दिल में बेचैनी की सूक्ष्म भावना पैदा करने के लिए किया जाता है। इसमें मन में मौत और उसके बाद के परिणाम के संदेह का बीज डाला जाता है और जब आप डर के मारे उनसे मिल जाते है तो फिर वे आपकी भावनाओं से खेलते हैं। मौत का डर एक कल्ट के लिए सबसे विश्वसनीय उपकरण है जिस पर वे आपको कुछ भी करने को मजबूर कर देते हैं।

हम ज्ञान गंगा पुस्तक पृष्ठ संख्या 19 में कल्ट के इसी भय के तत्व का उपयोग देखेंगे। यहाँ स्क्रीनशॉट में, चिह्नित पैराग्राफ कहता है कि यदि कोई शिष्य (कल्ट सदस्य) इन 21 नियमों का पालन नहीं करेगा, तो उसका नाम (कल्ट में बपतिस्मा) समाप्त हो जाएगा। यदि वह

स्वेच्छा से इस नाम के विरुद्ध जायेगा, तो यह नाम समाप्त हो जाएगा। इसके बाद एकमात्र विकल्प गुरु जी (रामपाल) से माफी मांगना और फिर से नाम दान (बपतिस्मा) लेना होगा।

विमुख हो जाता है) करता है वह महापाप का भागी हो जाता है। यदि किसी को मार्ग अच्छा न लगे तो अपना गुरु बदल सकता है। यदि वह पूर्व गुरु के साथ बैर व निन्दा करता है तो वह गुरु द्रोही कहलाता है। ऐसे व्यक्ति से भक्ति चर्चा करने में उपदेशी को दोष लगता है। उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है।

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, जान बुझ साची तजै, करै झूठे से नेह। जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

अर्थात् गुरु द्रोही के पास जाने वाला भक्ति रहित होकर नरक व लख चौरासी जूनियों में चला जाएगा।

20. जुआ निषेध :-- जुआ-ताश कभी नहीं खेलना चाहिए।

कबीर, मांस भखै और मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जूआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।

21. नाच-गान निषेध :-- किसी भी प्रकार के खुशी के अवसर पर नाचना व अश्लील गाने गाना भक्ति भाव के विरूद्ध है। जैसे एक समय एक विधवा बहन किसी खुशी के अवसर पर अपने रिश्तेदार के घर पर गई हुई थी। सभी खुशी के साथ नाच-गा रहे थे परंतु वह बहन एक तरफ बैठ कर प्रभु चिंतन में लगी हुई थी। फिर उनके रिश्तेदारों ने उससे पूछा कि आप ऐसे क्यों निराश बैठे हो? आप भी हमारे की तरह नाचों, गाओ और खुशी मनाओ। इस पर वह बहन कहती है कि किस की खुशी मनाऊँ? मुझ विधवा का एक ही पुत्र था वह भी भगवान को प्यारा हो चुका है। अब क्या खुशी है मेरे लिए? ठीक इसी प्रकार इस काल के लोक में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति है। यहाँ पर गुरु नानक देव जी की वाणी है कि :-

ना जाने काल की कर डारै, किस विधि ढल पासा वे।
जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।।
साध मिलें साडी शादी (खुशी) होंदी, बिछड़ दां दिल गिरि (दुःख) वे।
अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

कबीर साहेब जी महाराज भी कहते हैं कि :--

कबीर, झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
कबीर, बेटा जाया खुशी हई, बहुत बजाये थाल।
आवण जाणा लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।

विशेष :- स्त्री तथा पुरूष दोनों ही परमात्मा प्राप्ति के अधिकारी हैं। स्त्रियों को मासिक धर्म (Mainces) के दिनों में भी अपनी दैनिक पूजा, ज्योति लगाना आदि बन्द नहीं करना चाहिए, न ही किसी के देहान्त या जन्म पर भी दैनिक पूजा कर्म बन्द नहीं करना है।

नोट :-- जो भक्तजन इन इक्कीस सुत्रीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसका नाम समाप्त हो जाएगा। यदि अनजाने में कोई गलती हो भी जाती है तो वह माफ हो जाती है और यदि जान बुझकर कोई गलती की है तो वह भक्त नाम रहित हो जाता है। इसका समाधान यही है कि गुरुदेव जी से क्षमा याचना करके दोबारा नाम उपदेश लेना होगा।

यदि हम इन 21 नियमों को संक्षेप में प्रस्तुत करें तो वे इस प्रकार हैं।

1. परम गुरु या शिक्षक के पास जाना।

2. शराब या किसी भी नशीले पदार्थ (सिगरेट, तंबाकू) या मांस के अंडे से परहेज करना।

3. किसी भी तीर्थ स्थल पर न जाएं।

4. पूर्वजों की पूजा या श्राद्ध न करें (हिंदू पूर्वज पूजा दिवस)

5. अपने गुरु से पूछे बिना कोई भी पवित्र समारोह न करें।

6. किसी स्थानीय देवता की पूजा न करें या कब्र की पूजा (मुसलमानों की मजार व्यवस्था) नही करनी

7. केवल कल्ट भगवान कबीर की पूजा करें किसी अन्य भगवान की अनुमति नहीं है।

8 सब को बेवजह दान न देना।

9 जो लोग शराब या कोई नशीला पदार्थ (सिगरेट, तंबाकू) या मांस के अंडे का सेवन करते हैं, उनका पहले से खाया हुआ भोजन कभी न लें।

10 हिंदू परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार न करें। (13 दिन परहेज, दाह संस्कार के बाद बचा हुआ संग्रह, हवन)

11 बच्चे के जन्म का जश्न न मनाएं।

12 बच्चों के प्राथमिक बालों को हिंदू रीति से साफ करने के लिए मत जाओ।

13 नाम मंत्र जप करो।

14. व्यभिचार निषिद्ध है।

15 गुरु की आलोचना करना और सुनना तक वर्जित है।

16 कल्ट सभाओं में सदैव उपस्थित रहें।

१७ हमेशा अपने गुरु फोटो या मूर्ति रामपाल और अन्य गुरु और कल्ट भगवान कबीर को नमन।

18 मांसाहारी भोजन जैसे अंडे का मांस न खाएं।

19 गुरु रामपाल के बारे में बात करने वाले आलोचक से मत उलझो।

20 जुआ मत खेलो।

21 नाचो मत और अश्लील गीत गाओ।

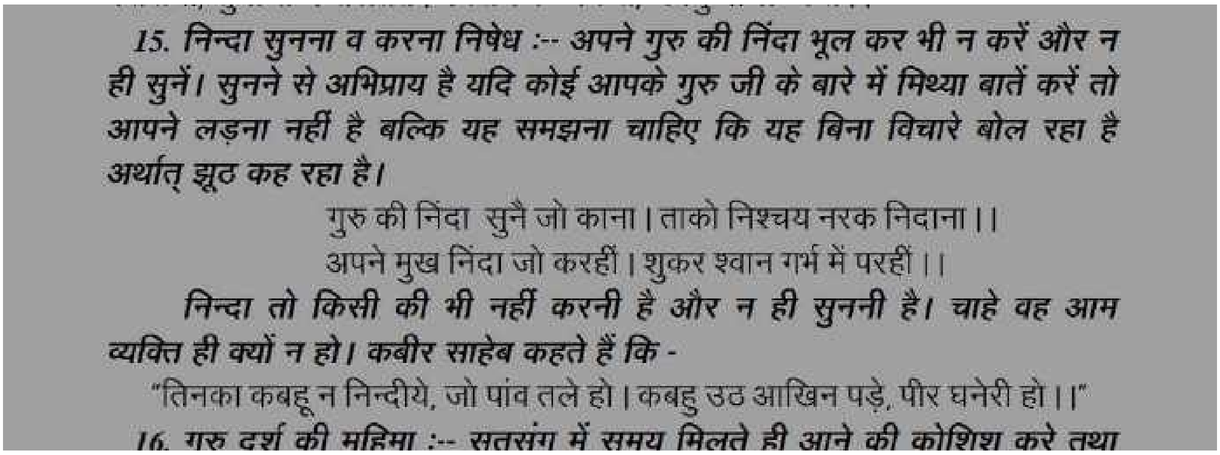
अब अगर आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि इनमें से कुछ नियम (३,४,६,७,८,१०,११) में कल्ट वाले जुड़ने वाले को उनकी अपनी पहले से ही पालन की जा रही परंपरा का पालन करने की सख्त मनाही कर रहे हैं। इन नियमों का इस्तेमाल कल्ट से जुड़ने वाले को काबू करने और उसकी सोच को उसके वर्तमान रीति रिवाज से तोड़कर कल्ट धर्मशास्त्र की ओर मोड़ने के लिए किया जाता है।

इस बीच आप देख सकते हैं कि नियम संख्या 1, 16, 17 सामूहिक रूप से कल्ट के अधीनता में शामिल होने के लिए बाधित रहे हैं, ताकि वे किसी अन्य गुरु या समझदार आदमी के साथ शामिल न हो सकें। कल्ट की इन सभा में, वे आपको कल्ट के रीति रिवाजों में विश्वास करने के लिए जुड़ने वाले का ब्रेनवॉश करते हैं ताकि उसे किसी प्रकार की असुविधा या शक न हो की उसके साथ फर्जीबाड़ा हो रहा है।

नियम संख्या 15 और 19 देखने में सबसे अजीब हैं। ये नियम कल्ट के सदस्यों को कल्ट के किसी भी आलोचक से मिलने या उनके साथ बात तक करने के लिए सख्ती से मना करते हैं। ये नियम कल्ट और रामपाल द्वारा बनाए गए हैं ताकि कल्ट के सदस्य तार्किक रूप से या अपनी समझ–अकाल से न सोच सकें। इन नियमों ने कल्ट के सदस्यों की सोच प्रक्रिया को भी कम कर दिया है ताकि उन्हें रामपाल और उसकी गतिविधियों पर संदेह न हो। इन नियमों को मानने वाले भले ही कल्ट सदस्य हमारे जैसे विचारक से बहस करना शुरू कर दें जो वास्तविक और सत्य प्रमाण देते हैं और कोई गाली या गलत शब्द नहीं भी देते हैं, फिर भी वे हमें कोई जवाब नहीं देते हैं, जो स्पष्ट रूप से इन 2 नियमों के कारण है। कल्ट के सदस्यों को डर है कि किसी भी आलोचक के साथ तर्कसंगत बात करने से उनका नाम नष्ट हो जाएगा और वे सतलोक नहीं जा सकेंगे और काल निर्जन उर्फ शैतान के दायरे में फंस जाएंगे।

आप यह भी देख सकते हैं कि नियम संख्या 15 में लिखा है कि कल्ट के सदस्य को अपने गुरु की आलोचना नहीं करनी चाहिए या उनकी आलोचना को सिर्फ यह सोचकर, सुनना भी नही चाहिए कि फलां व्यक्ति या आलोचक झूठा है या वह मूर्ख है। नीचे दिए गए स्क्रीनशॉट को हिंदी में देखें ज्ञान गंगा पेज नंबर 17। यानी को कल्ट के लोगों का इस कदर ब्रेनवाश किया जाता है ताकि वह सही और गलत के भेद को बताने वाले को ही मूर्ख या झूठा पहले से

ही मान लेते है।



15. निन्दा सुनना व करना निषेध :-- अपने गुरु की निंदा भूल कर भी न करें और न ही सुनें। सुनने से अभिप्राय है यदि कोई आपके गुरु जी के बारे में मिथ्या बातें करें तो आपने लड़ना नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि यह बिना विचारे बोल रहा है अर्थात् झूठ कह रहा है।

गुरु की निंदा सुनै जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।
अपने मुख निंदा जो करहीं। शुकर श्वान गर्भ में परहीं।।

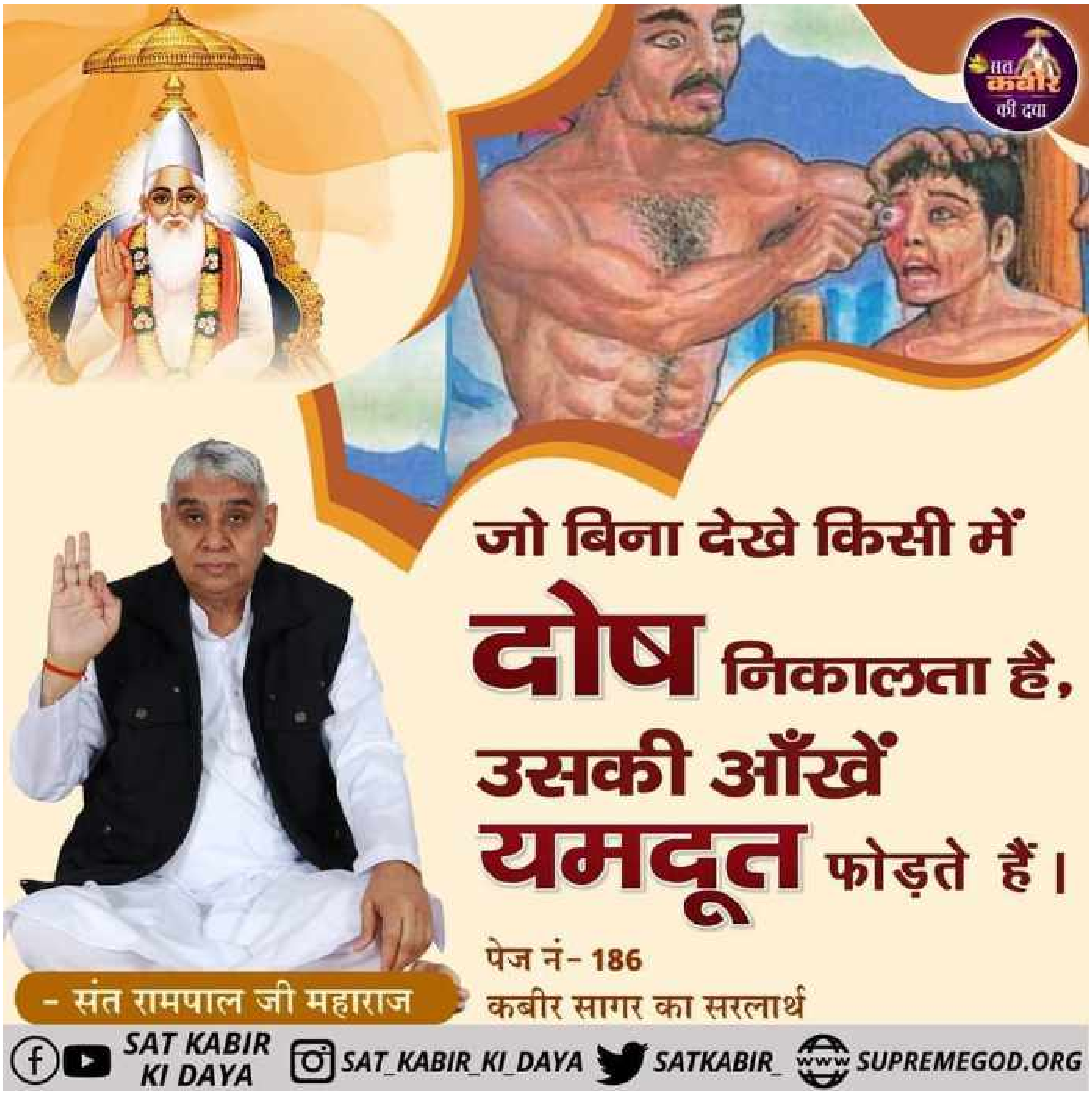
निन्दा तो किसी की भी नहीं करनी है और न ही सुननी है। चाहे वह आम व्यक्ति ही क्यों न हो। कबीर साहेब कहते हैं कि -

"तिनका कबहू न निन्दीये, जो पांव तले हो। कबहु उठ आखिन पड़े, पीर घनेरी हो।।"

16. गुरु दर्श की महिमा :-- सतसंग में समय मिलते ही आने की कोशिश करे तथा

कल्ट के सदस्य हमेशा इस अवधारणा का उपयोग कल्ट के सदस्यों के दिल में डर पैदा करने के लिए करते हैं ताकि वे कल्ट के खिलाफ न जाएं या इसके बारे में सोचें तक नहीं।

कृपया नीचे स्क्रीनशॉट देखें जहां कल्ट के सदस्य अविश्वासियों को धमकी दे रहे हैं कि वे नरक में सजा भुगतेंगे क्योंकि वे रामपाल और कल्ट की आलोचना कर रहे हैं।



डर का एक और तत्व पृष्ठ संख्या 116 में देखा जा सकता है जहां ज्ञान गंगा हमें एक कहानी सुनाती है जहां एक व्यक्ति छज्जुराम चौधरी ने गरीबदास संत को प्रताड़ित किया था और दो पुरुष घुड़सवार आए और उसका हाथ काट दिया और फिर हवा में गायब हो गए। बाद में छज्जू चौधरी ने गरीबदास से माफी मांगी और उनके पंथ में शामिल हो गए।

यह कहानी पूरी तरह से अप्रासंगिक और काल्पनिक है क्योंकि इस घटना के बारे में किसी भी इतिहासकार ने ऐसी कोई घटना दर्ज नहीं की है। यह कहानी केवल रामपाल कल्ट द्वारा बताई गई है और उन्होंने हिंदू धर्म पर फिर से दोष लगाने के लिए ज्ञान गंगा में छज्जू चौधरी के लिए

हिंदू द्रोही या विरोधी शब्द भी जोड़ा। लेकिन हकीकत यह है कि गरीबदास का अपमान सबसे ज्यादा कट्टर इस्लामवादियों ने किया था, हिंदुओं ने नहीं।

एक बार मुगल राजा मोहम्मद शाह रंगीला ने संत गरीबदास को आशीर्वाद के लिए बुलाया लेकिन उनकी 3 इच्छाओं के कारण, स्थानीय मुल्ला और मुस्लिम मौलवियों ने उन्हें काफिर कहा और रंगीला को उनसे छुटकारा पाने के लिए कहा। बाकी इतिहास है कि गरीबदास ने भविष्यवाणी की थी कि दिल्ली दुश्मनों से कांप जाएगी क्योंकि यह बुरे लोगों की भूमि है और इसे दंडित किया जाना चाहिए।

करौंता रामपाल आश्रम के कल्ट सदस्य भी विभिन्न सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म पर पूरे सक्रिय हैं और अन्य धर्मों को बदनाम करने और लोगों को उनसे जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हर जगह अपने नकली और प्रचार पोस्ट, चित्र पोस्ट करते रहते हैं। वे उन लोगों को जान से मारने की धमकी देकर धमकाने में भी पीछे नहीं हैं जो लगातार कल्ट का विरोध कर रहे हैं और उनके झूठ को खारिज कर रहे हैं। यह है अहिंसावादी कल्ट की असली गुंडा सचाई।

हम यह भी देखते हैं कि कल्ट की कई चीजें हैं जो अच्छी और पवित्र हैं जैसे शाकाहार को बढ़ावा देना, जुआ से दूर रहना, व्यभिचार और नशीला पदार्थ। लेकिन ये तत्व अच्छे और न्यायपूर्ण दिखने की उनकी छीछली नीति का एक दिखावा मात्र हैं। मैंने हमेशा देखा है कि कल्ट के सदस्य अन्य धर्मों को बदनाम करने और यह घोषित करने के लिए कि वे ही सबसे महान हैं, एक हथियार की तरह इन अच्छे कार्यों का उपयोग कर रहे हैं। यह अहंकार का स्पष्ट संकेत है।

एक बार एक कल्ट के सदस्य ने एक बहस में मुझसे कहा कि केवल हमारे गुरु रामपाल ने इन पापों और गलत कर्मो से मना किया है जबकि आपके धर्म *(हिंदू)* के लोग ये सभी कर्म कर रहे हैं। वह मुझसे अहंकार में कह रहे थे कि हमारे गुरु रामपाल ही सबसे महान हैं। ऐसा लगता है कि वे यह आरोप लगा रहे हैं कि हिंदू धर्म तो इन बुराइयों को बढ़ावा देता है, लेकिन यह सिर्फ कल्ट के सदस्यों की गलतफहमी है। हिन्दू धर्म और उसकी पुस्तक ने समय-समय पर इन सभी दोषों से वर्जित किया है।

भय के अलावा, एक लालच तत्व भी होता है जो हमेशा कल्ट में भय तत्व से जुड़ा होता है। मौत के बाद के जीवन का लालच इस्लाम, ईसाई धर्म आदि जैसे कई धर्मों और कल्टों में इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे पुराना तत्व है जहां विश्वासियों और अविश्वासियों को बताया जाता है कि यदि आप उनके साथ जुड़ेंगे, तो आप ऊपर या स्वर्ग में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर जाएंगे।

रामपाल कल्ट भी इसी लोभ तत्व को सतलोक के रूप में प्रयोग करता है। सतलोक उनके कल्ट भगवान कबीर या उपरोक्त स्वर्ग का सर्वोच्च निवास है। यह सतलोक उन लोगों का होगा जो संत रामपाल से नामदान (बपतिस्मा) लेंगे।

अब बपतिस्मा के 3 स्तर हैं जिनका मैंने रामपाल कल्ट की आधिकारिक वेबसाइट से स्क्रीनशॉट लिया है।

पहला स्तर नामदान (बपतिस्मा) है, यह स्तर कल्ट में दीक्षा है जो रामपाल के पहले से रिकॉर्ड किए गए वीडियो द्वारा किया जाता है (क्योंकि वह वर्तमान में जेल में है)।

दूसरा स्तर सतनाम है जो पहले स्तर के 4 महीने के बाद कल्ट सदस्यों द्वारा हासिल किया जाता है। 4 महीने सफल होने के बाद, कल्ट सदस्य जा सकते हैं और तीसरा स्तर सारनाम है जो स्वयं रामपाल ही दे सकते है।

सारनाम या तृतीय स्तर प्राप्त करने के बाद ही किसी व्यक्ति को सतलोक प्राप्त हो सकता है।

नामदीक्षा के चरण

नाम मंत्र 3 चरणों में दिए जाते हैं

- **प्रथम मंत्र या प्रथम दीक्षा** - यह प्रारंभिक मंत्र है जिससे व्यक्ति दीक्षा आरंभ करता है।
- **दूसरा मंत्र या दूसरी दीक्षा या सतनाम** - भक्त के पास पहला मंत्र कम से कम 4 महीने होने के बाद, दूसरा मंत्र यानि सतनाम लेने का पात्र हो जाता है। इस मंत्र को प्राप्त करने के लिए भक्त को व्यक्तिगत रूप से देश या विदेश में किसी नामदान केंद्र पर जाना होगा।
- **तीसरा मंत्र या तीसरी दीक्षा या सारनाम** - सारनाम केवल तभी दिया जाता है जब सतगुरु इसका आदेश देते हैं। आमतौर पर यह कुछ सालों की प्रकिया होती है, तभी भक्तआत्मा सारनाम प्राप्ति के योग्य होता है। संत रामपाल जी महाराज खुद ही किसी भी शिष्य को यह नाम दिए जाने का आदेश देते हैं, जब उन्हें ये दिखता है कि वह व्यक्ति सही में पात्र बन गया है। वर्तमान में यह मंत्र केवल भारत में दिया जाता है और इसे प्राप्त करने के लिए भक्तात्मा को भारत आना होगा।

अब क्या होगा अगर मैं आपको प्रमाण सहित दिखा दूं कि नामदान मिलने के बाद भी, रामपाल का एक कल्ट सदस्य काल निरंजन उर्फ शैतान द्वारा प्रताड़ित किया गया और फिर धर्मराज द्वारा उसका न्याय किया गया।

😁😁😁😁😁😁😁😁

मैं इसे ज्ञान गंगा से साबित करता हूं।

ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *203* में ओमप्रकाश नामक कल्ट सदस्य की घटना है।

अब इस कल्ट के सदस्य की एक घटना पर मृत्यु हो गई और फिर वह खुद को यमलोक *(*धर्मराज दरबार*)* में जाते देखते हैं जहाँ धर्मराज इस सदस्य का न्याय करना शुरू करते हैं और फिर वे उसे मगरमच्छ के तालाब में फेंकने का फैसला करते हैं। तब रामपाल ने खुद धर्मराज दरबार में आकर उसे मुक्त कराया। जब धर्मराज उससे कहते हैं कि तुम उसे क्यों बचा रहे हो*?* तब रामपाल कहते हैं कि इसने पिछले जन्म में मेरी भक्ति की थी। तब काल कहता है की इसका तो नाम भी भंग हो गया था फिर क्यों बचाया तो रामपाल ने कहा की इसने खुद यह काम नही किया*,* बल्कि तुमने इसे इसके लिए मजबूर किया।

इसे आप ज्ञान गंगा अंग्रेजी अनुवाद के पेज *203-204* पर पढ़ सकते हैं।

to express the glory of my Guru Ji. He himself is the incarnation of God Kabir. One, who wants to see God, should not f... coming to Kar... I am grateful to you. In what words shall I sing your glory? The readers may imbibe these words in their heart and make the most of it.

A very insignificant being

Bhakt... (D...) Shashi

Releasing Own Devotee from Dharmraj's Court

I, Devotee OmPrakash S/o Shri Matadin, am resident of Najafgarh, Delhi. It has been one and a half year since I have taken naam from Param Pujya Sant Rampal Ji Maharaj. I own a sweets shop in Najafgarh. On 19 May 2005 at 9:30 in the night, while at the shop I developed a severe stomach ache. My condition had become very bad because of pain. I reached home while doing jaap of the naam given by Guru Ji. As I entered into the house, I prostrated in reverence before the picture of Guru Ji in front of me. As I stood up after prostrating, I did not feel the stomach ache. Then I lay down on the cot. The messengers of Yam (Yamdoot) started going around me and frightening me. I fell unconscious in fear. Then the Yamdoots covered me with a white bed sheet and took me to Yamraj's court. In Yamraj's court, I saw that there was a queue. When my turn came, Yamraj said that throw him in the pond. When I looked at the pond,

I saw that it was full of crocodiles. I became frightened on seeing the crocodiles. At that time, I thought of my Param Pujya Gurudev Sant Rampal Ji Maharaj. At that time, the messengers of Dharmraj were ready to throw me in the pond. I called out my Guru Ji, "Oh Guru Ji, save me." Then I saw that my Guru Ji came in the form of God Kabir and took me out of the pond even before falling. Yamraj fell in the feet of God Kabir and prostrated (Dandwat Pranaam) before Him. Then Guru Ji appeared in his form and said to me that why are you feeling scared now; now I am with you. Then my fear was dispelled. Dharmraj argued with Guru Ji that why are you saving him again and again. He is my food. You have also saved him twice before from dying. On the first occasion, even on a head-on collision between a scooter and a jeep, I did not get a single graze. And on the second occas... ...ing truck. Gurudev Ji saved me from under that truck.

Then Gurudev Ji said to Dharmraj, "He had done my bhakti in the previous birth, therefore I saved him." Then Dharmraj said, "Why did you save him this time, even when I had got his naam disconnected." Then Guru Ji said, "You had got his naam disconnected; he did not disconnect it wilfully. Therefore I saved

अब अगर हम विश्वास कर ले कि यह घटना बिल्कुल सही है तो हमें 2 बातें माननी होंगी:-

1. इस जन्म और पिछले जन्म में रामपाल से नामदान लेने के बाद भी, एक व्यक्ति को अभी भी धर्मराज या मृत्यु या काल निरंजन का सामना करना पड़ा, जबकि उसका नामदान भी काल की वजह से टूटा था न की उसकी अपनी मर्जी से। तो क्या इसका मतलब यह समझा जाए कि नामदान पूरी तरह से बेकार है ??

2. अपने पिछले जन्म में नामदान (बपतिस्मा) लेने के अलावा, इस व्यक्ति का फिर से जन्म हुआ था। लेकिन क्या स्वयं ज्ञान गंगा यह दावा नहीं करती कि पुनर्जन्म नामदान के अभाव में होता है और इसलिए काल निरंजन द्वारा जीव पकड़ा जाता है। क्या यह बात भी नामदान को बेकार साबित नहीं करती और काल को नामदान से भी जायदा ताकतवर बनाती है?

एक बार मुझे कल्ट के एक सदस्य ने यह कहकर इस कथन का विरोध करने का प्रयास किया कि क्योंकि इस व्यक्ति को सारनाम या तृतीय स्तर का नाम दान नहीं मिला है, इसलिए उसे इस घटना का सामना करना पड़ा?

लेकिन जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं कि तीसरा स्तर या सारनाम केवल स्वयं रामपाल ही दे सकता है और केवल उन्हें ही दिया जा सकता है जो योग्य साबित हुए हैं।

इस हिसाब से तो अभी कल्ट के हर सदस्य जिन्हे तीसरा लेवल नाम नहीं मिला है वो काल निरंजन का निवाला बन जायेंगे।

😁😁😁😁😁

भाग 12: कल्ट बनाम आर्य समाज

रामपाल कल्ट की स्थापना तब हुई जब उन्होंने हरियाणा के छुड़ानी आश्रम के बाहर करौंथा में अपना अलग आश्रम बनाया था। लेकिन उनकी सबसे बड़ी बाधा आर्य समाजी थे, जो एक नए युग का हिंदू धर्म आधारित समूह था, जिसे स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने शुरू किया था। उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश 1875 में लिखी गई थी और उस समय उन्होंने हिंदू धर्म पर उठने वाले कई कठिन विषयों को हल करने में मदद की और भोले भाले हिंदुओं को धर्मांतरण से बचाने के लिए इस्लाम और ईसाई धर्म जैसे इब्राहमी मजहब के साथ बहस भी की। आज भी आर्य समाजी हिन्दुओ के हितो की बात करते स्पष्ट रूप से आगे दिखते है।

रामपाल कल्ट हमेशा से जानता था कि उनके राह में रोड़ा आर्य समाजी कभी भी उनकी दुष्ट और धोखेबाज योजना को सफल नहीं होने देंगे। इसलिए उन्होंने आर्य समाज और उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के खिलाफ यह कहकर प्रचार शुरू कर दिया था कि उनकी किताब अवैज्ञानिक और असामाजिक है। इससे आर्य समाज और कल्ट के सदस्यों के बीच जबरदस्त संघर्ष हुआ और इसका अंत रामपाल के जेल जाने पर हुआ।

हम इस खंड में आर्य समाज की किताब पर कल्ट के तथाकथित अधूरे ज्ञान का खंडन करेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश पर सबसे पहले रामपाल कल्ट का दोष यह है कि उनके संस्थापक दयानंद सरस्वती गांजा और तंबाकू के उपयोगकर्ता थे।

यह दोष बहुत ही अदूरदर्शी है और रामपाल के दोगलेपन को दर्शाता है। यह खुद कई न्यूज वीडियो में दिखाया गया है और कई स्रोतों से भी दावा किया गया है कि रामपाल खुद ही धतूरा के बीज और शराब का भी लगातार सेवन करता था।

दूसरी ओर इस आरोप का दयानन्द सरस्वती द्वारा कभी समर्थन नहीं किया गया की वह ऐसी किसी आदत के आदी थे , वरन उनके बारे में यह बात दूसरे स्रोतों के द्वारा ही की गई है।

अगर हम ऐसे इस बात को सत्य मान भी लें तो कम से कम दयानंद सरस्वती ने बाद में इस आदत को छोड़ दिया था और अपने अतीत के बारे में सच दूसरो को सच ही बताया था, लेकिन रामपाल दूसरी ओर एक पक्के झूठे और पाखंडी हैं क्योंकि उन्होंने कभी अपनी आदत पर प्रकाश तक नहीं डाला और लगातार झूठ बोल कर खुद को पाक साफ बनाते रहे।

तथ्यों से रूबरू करा रहा है।

ये भी पढ़े... रामपाल के 5 पाखंड: दूध से नहाता, फिर इसी से बनी खीर भक्तों को खिलाता

धतूरे से बनी दवाई लेता था...

आश्रम में मौजूद पुरुष अनुयायियों में केवल मनोज ही रामपाल का ऐसा सेवक था जो रामपाल के निजी कक्ष तक पहुंच रखता था। मनोज ने खुलासा किया था कि रामपाल के खान-पान की व्यवस्था से लेकर दवाइयों तक की निगरानी उसी के जिम्मे थी। रामपाल काले और सफेद धतूरे से बनी दवाइयों का सेवन करता था।

ये भी पढ़े... रामपाल संत या भगोड़ाः जब प्रवचन छोड़ रातों-रात तंबू उखाड़कर भागना पड़ा

जानकारी के मुताबिक, रामपाल की 50 वर्षीय बहन राजबाला, जींद निवासी 55 वर्षीय सावित्री, गांव धनाना की 22 वर्षीय नीलम, सोनीपत की 30 वर्षीय गीता, बलजीत की बेटी बबीता और राजस्थान के अमेठ की 22 वर्षीय टीना के अलावा कोई महिला अनुयायी रामपाल के निजी कक्ष तक नहीं जा सकती थी।

महिलाओं-बच्चों को किया था आश्रम में बंद

गिरफ्तारी के दौरान टकराव होने पर कई महिला अनुयाइयों ने रामपाल के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। वे वहां से बच निकलना

दूसरी ओर, स्वामी दयानंद सरस्वती आजीवन योग के अभ्यासी थे जिसकी वजह से उनके जीवन पर 5 बार हुए असफल हत्या के प्रयास टल गए थे। तो हम किस पर भरोसा करें, झूठे रामपाल पर या सच्चे दयानंद पर।

Assassination attempts

Dayananda was subjected to many unsuccessful assassination attempts on his life.[23]

According to his supporters, he was poisoned on a few occasions, but due to his regular practice of Hatha Yoga he survived all such attempts. One story tells that attackers once attempted to drown him in a river, but Dayananda dragged the assailants into the river instead, though he released them before they drowned.[31]

Another account claims that he was attacked by Muslims who were offended by his criticism of Islam while meditating on the Ganges river. They threw him into the water but he is claimed to have saved himself because his pranayama practice allowed him to stay under water until the attackers left.[32]

ज्ञान गंगा अपनी पुस्तक में दावा करती है कि व्यक्ति बुरी आदतों को छोड़ कर संत बन सकता है। लेकिन जब भी दयानंद सरस्वती जी की बात आती है तो वे अपना खुद का दावा भूल जाते हैं.. और कल्ट के लोग उन्हें जलील करते है...कल्ट के सदस्य कितने दोगले हैं *??*

सत्यार्थ प्रकाश पर दूसरा आरोप यह है कि इसका चौथा अध्याय समाज को अवैध सेक्स सिखाता है यानी नियोग अभ्यास।

ज्ञान गंगा किताब के मुताबिक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है अगर पति विदेश चला गया तो महिलाएं दूसरे मर्द के साथ सेक्स कर सकती हैं और महिलाएं 11 मर्दों के साथ सेक्स कर सकती हैं। यह कहकर वह आर्य समाज को बदनाम करते है।

इस आरोप पर प्रमाण देने से पहले सबसे पहले यह जान लेना चाहिए कि नियोग प्रथा क्या है*?*

महाभारत जैसी पुरानी हिंदू धर्म की किताबों में नियोग की इस प्रथा का उल्लेख मिलता है। जब कोई दंपत्ति बांझपन के कारण या फिर पुरुष या महिला सदस्य की अनुपलब्धता के कारण निःसंतान होते हैं, तो किसी अन्य व्यक्ति को दूसरे महिला सदस्य के साथ संभोग करने और संतान पैदा करने की व्यवस्था की जाती है। इस प्रथा से जुड़े कई नियम हैं जिनकी चर्चा आर्य समाज की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश चौथे अध्याय में संपूर्णता से की गई है।

लेकिन रामपाल ने बड़ी चालाकी से उन नियमों को कही नही दिखाया ताकि वह अपनी आधी अधूरी बातों के जरिये यह अफवाह फैला सके की आर्य समाज इस पुराने रिवाज को समाज में दुबारा बढ़ावा दे रहा है। एक बात ध्यान देने योग्य है पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन *1875* ईसवी में लिखी गई थी, जब आईवीएफ, आईयूएफ जैसे बांझपन के इलाज के वैज्ञानिक तरीके उपलब्ध नहीं थे।

अब हम आपको सत्यार्थ प्रकाश से पर्याप्त प्रमाण दिखाते हैं।

पहले सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ संख्या ***129-129*** पर प्रमाण देखें कि सत्यार्थ प्रकाश कहती हैं कि कभी भी विवाहित महिलाओं को अकेला न छोड़ें और उन्हें अपने साथ ही लेकर जाए **,** क्योंकि यह विवाहित जोड़ों के लिए अच्छा नहीं है।

vate self-control, mental tranquility, love for their tutors, thoughtfulness and habits of diligence. They should so exert themselves as to acquire perfect knowledge, perfect *dharma*, perfect development of body (to enable them to live to the fullest age allotted to man), and learn to labour. Such are the duties of *Bráhmans*.

The duties of *Kshatriyás* will be described in the chapter on *Government*.

The duties of *Vaishyás* are :—to learn the languages of various countries, the methods of different trades, the (current) prices or rates (of different articles), the art of buying and selling, to travel in different countries (for the purposes of trade, etc.), engage in profitable business, rear cattle and other animals, improve agriculture, augment wealth and spend it for the advancement of knowledge and *dharma*, to be truthful in speech and free from hypocrisy, conduct business with honesty, and look after all things in such a way that nothing is wasted or lost.

The duties of a *Shúdra* are to be clever in all kinds of manual[1] service, expert in cooking, to serve the twice-born with love, and make his livelihood by it. The twice-born should provide him with board and lodging, clothes, and pay all the expenses of his marriage, etc., or pay him a monthly salary. All the four *Classes* should work harmoniously and be of one mind in doing public good and promoting righ[illegible]ness, and share ea[illegible]her's joys and sorrow[illegible]sure and pain and further the good of their coun[illegible] [illegible]nd of their people with all their heart, with all their soul, and with all the material resources at their command.

The husband and the wife should never live apart from each others, since the " use of animal food and intoxicants such as sprituous liquors, association with the wicked, separation from the husband, wandering about uselessly by herself from place to place with the object of visiting so-called saintly persons (who are all really imposters), sleeping and dwelling in another man's house (through wantonness) are the six vices that are apt to contaminate a woman's character." These very vices contaminate a man's character as well.

Manu IX, 13.

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम् ।
स्वप्नोऽन्यगे[illegible]श्च नारीसन्दूषणानि षट् ॥ मनु० ९ । १३ ॥

1, This is what is erroneously called *menial* service—*Tr*.

इससे हम यहां देख सकते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश पुरुष स्त्री के पृथक्करण या अलग रहने का उपदेश नहीं देते हैं।

अगला सत्यार्थ प्रकाश स्पष्ट रूप से कहते हैं कि नियोग प्रक्रिया कौन और कब कर सकता है?

(4). **Re-marriage involves loss of true conjugal love and infraction of duty towards the departed husband or wife.**

For these reasons, re-marriage, polygamy and polyandry are prohibited in the case of the twice-born.

Q.—If one of the parties die leaving no male issue, even then the family line will become extinct. Besides, if re-marriage be not allowed, the widows and widowers will resort to adultery and fornication, procure abortion, and will commit wicked deeds of a kindred nature. For these reasons re-marriage is desirable.

A.—No. If the widows and widowers desire to practice *Brahmacharya*, no such evil consequences will accrue. Again, if the widow or the widower adopt a boy of her and his *Class*, the family line will be continued and there will be no danger of adultery being resorted to. Those, however, who cannot control their passions may beget children by having recource to *Niyoga*.

Q.—What are the differences between re-marriage and *Niyoga*?

पृष्ठ संख्या १३० पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि नियोग प्रथा विधवाओं या विधुरों द्वारा संतान प्राप्ति के लिए की जा सकती है। ऐसा भी हमेशा जायज नहीं होता है, अगर अपने साथी की मृत्यु के बाद भी आकांक्षी अविवाहित रहना चाहता है, तो यह बहुत अच्छा फैसला है। आकांक्षी अगर किसी अनाथ को अपनाना चाहते हैं तो यह भी बहुत अच्छा है। इसलिए नियोग से बचने के लिए ये दोनों काम किए जा सकते हैं लेकिन अगर फिर भी जुनून नियंत्रण में न हो और अपनी ही संतान का मोह हो तो नियोग अपनी खुद की संतान प्राप्ति के लिए किया जा सकता है। इसलिए यह सिद्ध हो गया है कि सत्यार्थ प्रकाश नियोग को करने के लिए समाज के

लिए मजबूर नहीं कर रहे हैं, बल्कि गोद लेने का उपदेश दे रहे हैं या विधवा और विधुरों के लिए ब्रह्मचारी रहने को प्रेरित करते हैं।

जहां तक सवाल उन दंपत्तियों का, जो बिना संतान के हैं और उन्हें अपने वंश के लिए एक की आवश्यकता है, सत्यार्थ प्रकाश विधवा के साथ नियोग का उपयोग करने का सुझाव देते हैं (यदि पुरुष साथी बांझ है), या विधुर के साथ नियोग करने का (यदि महिला साथी बांझ है)।

habit with each other after they have produced ten children, they are considered lustful and held in great contempt, because marriage and *Niyoga* are entered into for the object of getting children but not for the gratification of passions like animals.

Q.—Can a woman contract *Niyoga* only after the death of her husband or even when he is alive?

A.—This relation can be entered into even in the lifetime of the husband (or of the wife). Here is a *Vedic* text in support of this view.

Rig Veda X, 10, 10.

"When a man is incapable of producing children, let him address his wife as follows:—O Thou that art desirous of getting children do not expect me to raise offspring upon thee. Do thou, therefore, seek another husband." The woman seeking to contract *Niyoga*, should, however, continue to serve her husband by marriage; similarly when a woman on account of some chronic disease is rendered incapable of bearing children, let her address the following words to her husband, "My Lord! Do not expect me to bear any children. Do thou, therefore, contract *Niyoga* with a widow." Here are some historical proofs as well in support of this doctrine:—

Kunti and *Mádri*, wives of king *Pándu* had recourse to *Niyoga*. *Vyas*, on the death of his brothers, *Chidrángad* and *Vichitravirya*

ज्येष्ठो यवीयसो भार्य्यां यवीयान्वाग्रजस्त्रियम् ।
पतितौ भवतो गत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥
औरसः क्षेत्रजश्चैव ॥ मनु० ९ । ५९ । ५८ । १५९ ॥
अन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ॥ ऋ० मं० । सू० १० । मं० १० ॥

contracted *Niyoga* with their wives and begot *Dhritráshtra* on *Ambiká*, *Pándu* on *Ambáliká* and *Vidur* on a *Shudra* woman. The sage *Manu* declares:—

Manu.

"If a husband has gone abroad in furtherance of some righteous cause, let his wife wait for eight years; if for the

हालाँकि हम फिर से सुझाव देते हैं कि यह पुस्तक ***1875*** में लिखी गई है***,*** जब बच्चे पैदा करने के लिए वैज्ञानिक आविष्कार उपलब्ध नहीं थे। तो आप समझ सकते हैं कि नियोग आज के ज़माने में पूरी तरह से अप्रचलित और अनावश्यक है***,*** इसलिए आप समझ सकते हैं कि आज की तारीख में इसका अभ्यास कहीं भी क्यों नहीं किया जाता है***!!***

यहां एक बात कई आर्य समाज विरोधी तत्वों द्वारा भी कही गई है कि स्वामी दयानंद स्त्री पुनर्विवाह के खिलाफ थे। लेकिन यह भी सिर्फ आधा सच है।

स्क्रीनशॉट नंबर ***129*** और ***130*** देखें।

consort.

Q.—What are the evils of re-marriage [2] (in the case of such persons)?

A.—(The following are the principal evils) :—

(1). Diminution of love between the husband and the wife, since either of them can desert the other whenever he or she so desires, and marry another person.[3]

(2). On the death of one party, the other will take away the property of his or her deceased consort when he or she marries again. This will give rise to family disputes.

(3). If a widow re-marries, many a noble family will be blotted out of existence, and its property destroyed (by constant alienation).

सा चे· [illegible]तयोनिः स्याद्[illegible] वा ।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः [illegible] ॥ मनु० ९ । १७६ ॥

1. *Joining hands* is the chief element in the *Vedic* ceremony of marriage —*Tr.*

2. Re-marriage includes Polygamy and Polyandry —*Tr.*

3. This argument seems to apply to marriage after divorce —*Tr.*

(4). Re-marriage involves loss of true conjugal love and infraction of duty towards the departed husband or wife.

For these reasons, re-marriage, polygamy and polyandry are prohibited in the case of the twice-born.

यहां विधवा और विधुर दोनों का विवाह पुनर्विवाह गलत बताया गया है, न की सिर्फ और सिर्फ विधवा का ।

साथ ही यह स्क्रीनशॉट कुछ वैध कारण दिखाता है कि क्यों एक विधवा महिला या विधुर पुरुष को दुबारा शादी नहीं करनी चाहिए।

सबसे पहला वैध बिंदु संपत्ति विवाद है। यदि कोई महिला विधवा पुनर्विवाह करती है तो वह अपने मृत पति की संपत्ति का दावा कर सकती है और इसलिए ससुराल पक्ष में विवाद शुरू कर सकती है। साथ ही यदि कोई पुरुष विधुर पुनर्विवाह करता है, तो वह मृतक पत्नी की संपत्ति पर दावा कर सकता है, इसलिए फिर से संपत्ति का टकराव होता है।

दूसरा बिंदु यह है कि पुनर्विवाह दो प्रेमियों के बीच के प्रेम को कम कर देता है, जो अब मर चुका है, और इसलिए अपने प्रियजनों के प्रति कर्तव्यों को समाप्त कर रहा है।

कल्ट द्वारा लगाया गया एक और आरोप यह है कि नियोग दूसरे पर थोपा जाता है जिसे इस प्रमाण से भी खारिज किया जा सकता है। यहां अध्याय ४ के स्क्रीनशॉट में, पृष्ठ १३८ स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है कि नियोग करने के लिए तैयार पुरुष या महिला से अनुमोदन बिना किसी बंधन के और स्वेच्छा से सहमत होना चाहिए।

और वे इस रिवाज को सिर्फ और सिर्फ बच्चे पैदा करने के लिए करेंगे न की भोग विलास के लिए।

Q.—What conditions should be observed in the performance of the *Niyoga* ceremony ?

A.—1. *Niyoga* is solemnized publicly even as marriage is.

2. Just as in marriage, the consent of the bride and the bride-groom and approval of good men are essential, even so it is in *Niyoga*, in other words, when a man and a woman have agreed to contract *Niyoga*, they should declare before an assembly of their male and female relations that they enter into the relation of *Niyoga* for begetting children, they will have sexual congress for *generating a new life* once a month, in case conception takes place they will not co-habit for one year. If they should go against that declaration they should be considered as sinners and should be liable to punishment by the State and the Society.

तो यहाँ नियोग प्रथा बहुत स्पष्ट है।

1. केवल विधवा या विधुर ही नियोग कर सकते हैं, जब वे गोद लेने या ब्रह्मचर्य के लिए तैयार नहीं हो ।

2. विवाहित जोड़े को संतान होने पर नियोग करने की अनुमति नहीं है। केवल वे ही नियोग कर सकते हैं, यदि पहले से ही बच्चे न हों। इस प्रथा की अब और आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे पास अधिक चिकित्सा सुविधा है।

3. नियोग केवल बच्चों के लिए किया जा सकता है जो यौन सुख के लिए नहीं है, न ही इसे तलाक के लिए एक कारण बनाया जा सकता है।

हम आशा करते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश पर लगे सभी आरोप अब साफ हो गए हैं और आप यह भी समझ सकते हैं कि कल्ट के सदस्य आर्य समाज को क्यों निशाना बना रहे हैं।

भाग 12 : तर्क पूर्ण प्रशन कबीर के ऊपर

यहाँ तक हमने ज्ञान गंगा में वर्णित प्रत्येक बिंदु को सिद्ध किया है और चर्चा की है।

अब हम एक प्रश्न अध्याय शुरू करेंगे जहां हम कल्ट भगवान कबीर पर ज्ञान गंगा से कुछ तार्किक प्रश्न पर चर्चा करेंगे और आपको यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि यह कबीर नाम का किरदार बिल्कुल भी असली नहीं है बल्कि रामपाल पौराणिक कथाओं की रचना है।

ये सवाल वैसे तो उन्हीं तार्किक गलत तकनीकों पर आधारित हैं जिनका इस्तेमाल रामपाल कल्ट करते हैं, लेकिन ये सवाल आपको उनसे बहस करने पर मदद कर देंगे.

Q1. ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या के अनुसार, जब काल निरंजन प्रकृति के साथ अश्लील व्यवहार कर रहे थे, तब कबीर परमेश्वर जोगजीत के रूप में प्रकृति की सहायता के लिए आए थे। फिर उसने उन दोनों को दंडित किया और सतलोक के दायरे से बाहर कर दिया।

सवाल यह है कि जब प्रकृति ने कुछ गलत नहीं किया था तो कबीर ने उसे अपराधी के साथ सजा क्यों दी। क्या कबीर को उसकी बेगुनाही के बारे में पता नहीं था या उसने ऐसा किसी और कारण से किया था*?*

किसी भी तरह से यह इस बात को साबित करता है कि कबीर को न्याय का कोई बोध नहीं है और कबीर अन्तर्यामी भी नहीं है *??*

Q2 कबीर ने विभिन्न अवतारों में स्वयं को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। चलिए मान लेते हैं कि यह सही है *!!!* तो फिर...

I. ज्ञान गंगा ने ऐसा क्यों कहा कि वामदेव संत सत सुकृत हैं जब उन्हें इस नाम से कभी नहीं कहा जाता है*?*

II. जैसा कि ऋग्वेद ४.२७.१ में वर्णित है, वामदेव का जन्म माँ के गर्भ से हुआ है, लेकिन ज्ञान गंगा का कहना है कि कल्ट भगवान कबीर को जन्म के लिए गर्भ की आवश्यकता नहीं है, साथ ही वे यह भी प्रमाण देते हैं कि सर्वोच्च ईश्वर शरीर के साथ जन्म लेते हैं, प्राकृतिक प्रक्रिया से नहीं। इसलिए उनका यह दावा कि वामदेव कबीर हैं, बहुत गलत और झूठ है।

सवाल यह है कि ज्ञान गंगा क्यों ये झूठ बोल रही है *???*

III. त्रेता युग में संत मुनिन्द्र के रूप में कबीर नल नील, हनुमान और विभीषण के पास आए। लेकिन जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं कि यह दावा कभी साबित नहीं होता है कि मूल रामायण में नील नाम का चरित्र ही नहीं है तो फिर मुनींद्र ने किस नील को ठीक किया था।

IV ज्ञान गंगा का दावा है कि नल नील बीमार थे और वे मुनिंदर उर्फ कबीर के पास आए लेकिन जैसा कि हम जानते थे कि मूल रामायण में नील नाम का कोई चरित्र नहीं है। क्यों झूठ बोल रही है ज्ञान गंगा *??*

V ज्ञान गंगा का दावा है कि कबीर उर्फ मुनिन्दर ने वानर सेना को तैरते हुए पत्थर उपलब्ध कराने में मदद की थी, लेकिन फिर से यह घटना बेहद अतिरंजित और एक स्पष्ट झूठ है। ज्ञान गंगा झूठ क्यों बोलती है *??*

VI. कल्ट के सदस्य प्रचार करते हैं कि सीता ने राम के लिए हनुमान को चूड़ियाँ प्रदान की थीं, लेकिन रामायण अध्याय सुंदर कांड, सर्ग *65* श्लोक *27* में, यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि हनुमान को सीता से चूड़ामणि या हेयरक्लिप प्राप्त हुआ था। ज्ञान गंगा से एक बार फिर झूठ..

VII मुनिन्दर के रूप में कबीर सीधे तौर पर हिंदू पाठ्य कहानियों से बाहर हैं। क्या कल्ट के सदस्य किसी हिंदू पाठ से इसका कोई संदर्भ दे सकते हैं *??????*

Q3 कल्ट के सदस्यों का कहना है कि भगवान कबीर ने एक छोटी सी मदद के कारण तैमूर लंगड़े और सिकंदर लोधी को आशीर्वाद और वरदान दिया। कबीर, एक तथाकथित सर्वोच्च देवता जो अंतर्यामी भी होने का दावा करते है ने बलात्कारी और सामूहिक हत्यारों का पक्ष क्यों लिया *??* क्या यह साबित नहीं करता कि वह इन अपराधों का समर्थन करता है *??* क्या अन्तर्यामी कबीर को मालूम नहीं था की तैमूर लंगड़ा और उसके वंश के लोग हत्यारे और ब्लातकारी होंगे *?*

Q4 काल निरंजन ने कसम खाई थी कि वह अपना असली चेहरा कभी किसी को नहीं दिखाएगा। ज्ञान गंगा अपने पाठकों से पूछते हैं कि इस संसार के भगवान भी किसी को अपना असली चेहरा नहीं दिखाते हैं। अत: यह दावा किया जा सकता है कि यह जगत् परमात्मा वास्तव में काल निरंजन है।

लेकिन अगर हम ज्ञान गंगा को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि कल्ट भगवान कबीर ने भी अपना असली चेहरा किसी को नहीं दिखाया। उन्होंने हमेशा अपनी उपस्थिति को दूसरे शरीर *(*कई बार जगजीत और अचिंत*)* में रूपांतरित किया।

ये कल्ट भगवान कबीर के अपने स्वरूप को बदलने के उल्लेखनीय संदर्भ हैं।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या ३६: कल्ट भगवान कबीर जोगजीत उर्फ योग संतायन का रूप प्राप्त करते हैं और काल निरंजन और प्रकृति को दंडित करते हैं।

* ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १४३, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर सत सुकृत में बदल दिया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गरुड़ के पास आए।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १५०, कल्ट भगवान कबीर ने मुनिन्दर को अपना रूप बदल दिया और हनुमान, नल नील और अन्य लोगों के पास आए।

* ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १५४, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर करनुमाय किया और राजा और रानी के पास आए।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या २१५, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर जोगजीत कर लिया और काल निरंजन में आ गए।

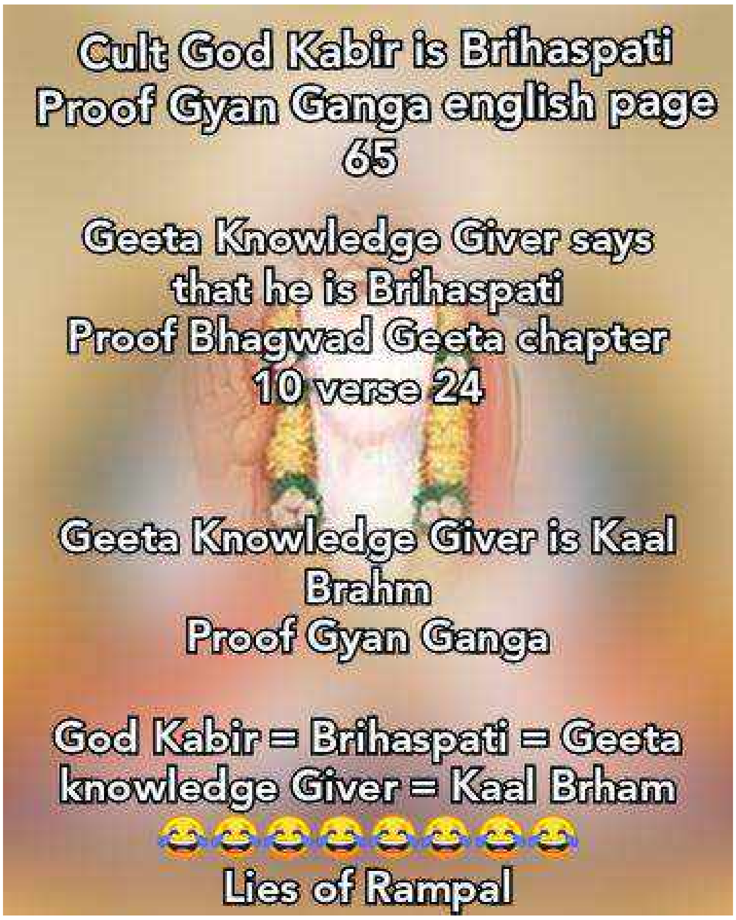
इन कल्टों के अलावा कबीर परमेश्वर अल खिद्र के रूप में मूसा के पास और जीवित पीर के रूप में तैमूर लंग के रूप में आए

ये सभी संदर्भ साबित करते हैं कि ये सभी लक्षण काल निरंजन के समान ही हैं क्योंकि कबीर ने स्वयं किसी को अपना असली चेहरा नहीं दिखाया ...

प्रश्न5. ज्ञान गंगा बृहस्पति है जैसा कि पृष्ठ संख्या 64-65 पर उल्लेख किया गया है।

गीता वाणी देने वाला कहता है कि मैं बृहस्पति हूं।

इसलिए कबीर गीता भाषण दाता है और गीता भाषण देने वाला भी कल्ट सदस्यों द्वारा कहा जाता है कि वह काल निर्नजन है। तो स्पष्ट है कि कबीर स्वयं काल निरंजन हैं।



Q6 कुरान भाषण देने वाले अल्लाह के *100* नाम हैं जिनमें से एक नाम कबीर है। साथ ही हम देख सकते हैं कि क़ुरान में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ अल्लाह को कबीर कहा गया है। तो यह स्पष्ट है कि कुरान भाषण देने वाला भी कबीर है, यह वह है जो काफिरों से लड़ने, उनकी हत्या करने और उनके खिलाफ गजवा करने का आदेश देता है।

प्रश्न*7.* कुरान भाषण देने वाला कुरान सूरा निसा श्लोक *34* में महिलाओं को उनकी अवज्ञा और असहयोग के मामले में पीटने के लिए कहता है। और अल्लाह को भी खुद कबीर कहा गया है, इससे साबित होता है कि कबीर औरतों को पीटने का हुक्म देता है। कबीर इतने महिला विरोधी क्यों हैं*???*

प्रश्न ८. कबीर ने किस उद्देश्य से बनाई आत्मा*??* अगर उन्होंने अपनी सेवा या भक्ति के लिए आत्मा बनाई है, तो उन्होंने उन्हें काल निर्जन के साथ क्यों जाने दिया *??*

Q9 कल्ट के सदस्यों का दावा है कि कबीर सर्वज्ञ हैं और हिंदू त्रिमूर्ति नहीं है *??* लेकिन जैसा कि हम जानते हैं कि कबीर को यह नहीं पता था कि काल निर्धारण सतलोक में गलत काम करेगा *??* कबीर को भी नहीं पता था कि तैमूर लंगड़ा दिल्ली के आधे नागरिक का वध करेगा और उसके पूर्वज भी करेंगे *??* कबीर को रामपाल की सजा के बारे में पता नहीं था और उसे अभी तक नहीं बचाया *???*

कबीर किस तरह के सर्वज्ञ भगवान हैं *????*

Q10 असली संत कबीर जी ने कभी नहीं कहा कि उनकी कविता वैदिक है या वेदों से संबंधित है, फिर रामपाल कल्ट का दावा कैसे हुआ कि उनका काव्य संग्रह *5*वां वेद है *???* और यह भी कि कबीर द्वारा कहे गए तथाकथित *5*वें वेद खड़ी बोली या अवधी भाषा में कैसे हैं, न कि संस्कृत भाषा में *???* सर्वज्ञ परमात्मा कबीर को क्या संस्कृत भाषा का ज्ञान क्यों नहीं था*??????*

Q11 कल्ट के सदस्य यह भी दावा करते हैं कि *5* वेद काल निरंजन द्वारा छिपाया गया था। कबीर कैसा कमजोर भगवान है जो काल निरंजन से अपना संदेश नहीं बचा सकता*?*

प्रश्न*12.* यदि वैदिक शब्द कवि कबीर है, तो इस तर्क से हमें संस्कृत में वी से बी के पूरे व्याकरण को बदलना चाहिए *???* यह स्वीकार्य नहीं है क्योंकि यह केवल एक मूर्खतापूर्ण प्रयास है, क्योंकि कविर शब्द संस्कृत व्याकरण के नियमों के कारण विलीन हो गया है जिसे संधि कहा जाता है।

कल्ट इस साधारण सी बात को क्यों नज़रअंदाज कर रहा है*???*

प्रश्न*13.* अगर सतलोक में यौन क्रिया करना बुरा था, तो कबीर ने अक्षर पुरुष को काल निरंजन की तरह ही दोहराने की प्रक्रिया क्यों करने दी। इसका प्रमाण ज्ञान गंगा के पेज नंबर *56-59* में है। इसका अर्थ यह हुआ कि कबीर परमेश्वर अनावश्यक रूप से एक को उसी के लिए दंड देते हैं और दूसरे को नहीं *???* कल्ट भगवान कबीर को नहीं पता कि न्याय कैसे करें *???*

Q14 कुछ कल्ट सदस्य इन दिनों प्रचार कर रहे हैं कि रामपाल भी कबीर के अवतार हैं। अगर ऐसा है तो रामपाल खुद को जेल से क्यों नहीं बचा पाते*??*

रामपाल कल्ट का दावा है कि पहले भी ऐसा हुआ था कि संत को पकड़कर जेल भेज दिया जाता है। लेकिन तर्क यह नहीं है क्योंकि यह स्पष्ट है कि सभी जेल जाने वाले अच्छे या संत नहीं होते हैं। तो फिर रामपाल, जो अनेक अपराधों के लिए दोषी है, पवित्र और शुद्ध कैसे हो गया *??????*

Q15 रामपाल का दावा है कि केवल उनके मंत्र सरनाम से ही काल निर्धारण क्षेत्र से मुक्ति मिलेगी, फिर उन्होंने अपने सभी भक्तों को सरनाम क्यों नहीं दिया*?* सरनाम का तीसरा स्तर मिलने से ज्यादातर इनकार*?* क्या रामपाल यह सब नहीं देना चाहता *???*

Q16 वैदिक पाठ में मंत्र का *1/4* भाग इंद्र को सर्वोच्च कहा गया है। लेकिन कवि को सिर्फ ५ या ६ बार ही जिन्हें कबीर कहा जाता है *??* क्या कबीर ने जानबूझकर इन्द्र की स्तुति का प्रचार किया या इंद्र उनसे भी बड़े देवता है *????*

Q17 यह पृष्ठ संख्या *2* ज्ञान गंगा पर दिया गया है कि नामदान द्वारा व्यक्ति को काल लोक से मुक्ति मिलती है लेकिन पृष्ठ संख्या *203* पर कि रामपाल का एक भक्त मरकर काल में जाता है, कबीर सतलोक के पास नहीं। उनका पिछला जन्म भी पिछले जन्मों में नामदान लेने के अलावा हुआ था।

क्या इसका मतलब यह है कि रामपाल नामदान बेकार है और इसका कोई महत्व नहीं है *????*



Q18 रामपाल ने ज्ञान गंगा के पेज नंबर *404* और *405* में अपने पास उड़न क्षमता यानी उड़ने की ताकत होने का दावा किया है।

यह अजीब है कि जब पुलिस उसे गिरफ्तार करने आई तो इस महाशक्ति ने रामपाल की मदद कैसे नहीं की *??*

Q19 रामपाल ने ज्ञान गंगा पृष्ठ *XXII* में दावा किया है कि उन्होंने पवित्र पुस्तक के पाठ का अनुवाद उनकी भाषाओं *(*अर्थात अरबी*,* संस्कृत आदि*)* के ज्ञान के बिना किया*,* लेकिन जैसा कि हमने पहले देखा है कि रामपाल केवल इन ज्ञान का दावा करते हैं और केवल उन स्रोतों पर भरोसा करते हैं जो उसका अनुवाद करता है। वह स्पष्ट रूप से उन तथ्यों या सबूतों को छिपाता

है जो उसके रहस्य का खुलासा कर सकते हैं। फिर वह इन जालसाजी को ज्ञान के रूप में कैसे दावा कर सकता है *???* क्या ये चीजें ठग कल्ट के तत्व नहीं हैं*?*

Question - A learned Shastri of Sanskrit said that your guru Saint Rampal Das Ji Maharaj has not studied Sanskrit. You say that doing the true translation of Shrimadbhagvat Gita, he explains it to the devotees. This is not possible.

Answer - The devotee of Saint Rampal Das Ji Maharaj replied - Shastri ji, he only is called incarnation of God who even without the knowledge of a language does true translation because God is omniscient. The incarnation sent by Him is endowed with the same qualities. That incarnation is Saint Rampal Das Ji Maharaj ji. You are amazed by just translation of Vedas and Gita; Saint Rampal Das Ji Maharaj has even explained Bible and Quran in a true way, which even the contemporary Fathers and clergymen of Christianity religion and the Mullah and Qajis of Islam religion have not been able to understand. ❑❑❑

भाग **13** : काल निरंजन का प्रश्नो के जरिये खंडन

अब हम एक और काउंटर प्रश्न अध्याय शुरू करेंगे जहां हम रामपाल कल्ट काल निर्धारण *(*उर्फ डेविल उर्फ काल*)* के खलनायक पर ज्ञान गंगा से कुछ तार्किक प्रश्न पर चर्चा करेंगे और आपको यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि यह चरित्र बिल्कुल वास्तविक नहीं है बल्कि रामपाल की रचना है। पौराणिक कथा।

ये सवाल वैसे तो उन्हीं तार्किक गलत तकनीकों पर आधारित हैं जिनका इस्तेमाल रामपाल कल्ट करते हैं*,* लेकिन ये सवाल आपको उनसे बहस करने पर मजबूर कर देंगे*.*

Q1. ज्ञान गंगा पृष्ठ ३५*,* ३६ के अनुसार*,* काल निर्धारण को प्रकृति ने बहकाया और फिर उसने एक महिला अंग योनि को उससे जोड़ने की कोशिश की। उसने उसके साथ यौन संबंध बनाने की भी कोशिश की। जिस पर प्राकृत कहता है कि संभोग का रिवाज न शुरू करो।

Later, Purna Brahm (Complete God) gave a girl's appearance to the soul who gave the first consent, but did not create any female genitals. He inserted all the souls (who had consented to go with Jyoti Niranjan/Brahm) in that girl's body and named her Ashtra (Aadi Maya / Prakriti Devi / Durga), and said that – 'Daughter, I have granted you 'word-power' (*shabd shakti*). You may produce as many living beings as Brahm says.'

Purna Brahm KavirDev (God Kabir) sent Prakriti Devi to Kshar Purush through His son Sahaj Das. Sahaj Das told Jyoti Niranjan that – 'Father has inserted all those souls who had consented to go with you in this sister's body and has granted 'word' power to her. Prakriti will produce as many living beings as you want with her word (shabd).' After saying this Sahaj Das returned to his island.

The girl, being young, looked beautiful. Sexual desires arose in Brahm and he started misbehaving with Prakriti Devi[11]. Durga said that – 'Jyoti Niranjan, I have the power of word, granted by Father. I will produce as many living beings as you will say. Please do not start the custom of intercourse. You have also originated

[10] Eternal God Kabir

[11] [illegible] of Durga

from the same Father's word, from an egg, and I have also originated from that same Supreme Father's word after that. You are my elder brother. This act between a brother and a sister will lead to a heinous sin. But Jyoti Niranjan ignored all appeals of Prakriti Devi and by his word-power made female genitals on her body with his nails and tried to rape her. Immediately, Durga, in order to save her honour, and finding no other way out, made a miniature form of her and via Jyoti Niranjan's opened mouth, entered into his stomach. From there, she requested Purna Brahm Kavir Dev to save her.

Instantly, KavirDev (Kavir Dev / God Kabir), acquiring the appearance of His own son Yog Santayan alias Jogjit, appeared there, took the girl out of Brahm's stomach and said that – 'Jyoti Niranjan, from now on you will be called 'Kaal'. You will have births and deaths and therefore, your name will be Kshar Purush[12].

यहां सवाल यह है कि जब काल निर्माण से पहले सतलोक में यह क्रिया पहले किसी ने नहीं की, तो उसे कैसे पता चला कि योनि नाम का एक अंग है और उसके साथ ऐसा किया जाता है *??*

अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए काल निरंजन को ऐसा करने का निर्देश और उपाय किसने दिया *??*

प्रश्न २. काल निरंजन को कल्ट ने मान लिया था कि वह दुनिया में बुरा और खलनायक है और दुनिया की सभी महानतम धार्मिक पुस्तकें बदल दी गई हैं या उनके द्वारा दी गई हैं *!!!*

प्रश्न यह है कि फिर कल्ट के सदस्य कल्ट के रीति-रिवाजों और पौराणिक कथाओं को साबित करने के लिए एक खलनायक द्वारा बताए गए किताबों का उपयोग क्यों कर रहे हैं *??* क्या यह गलत स्रोत से अपनी बात साबित करने का गलत तरीका नहीं है *??*

Q3. काल निरंजन ने सतलोक में संभोग का रिवाज शुरू किया था और उससे पहले किसी भी शरीर ने ऐसा नहीं किया था*,* फिर प्रकृति को यह कैसे शक हुआ की काल निरंजन की नियत में खोट है*,* जब पृष्ठ संख्या *35,36* पर काल निरंजन उसके पास आ रहा था। उसे यह किसने बताया*???*

Later, Purna Brahm (Complete God) gave a girl's appearance to the soul who gave the first consent, but did not create any female genitals. He inserted all the souls (who had consented to go with Jyoti Niranjan/Brahm) in that girl's body and named her Ashtra (Aadi Maya / Prakriti Devi / Durga), and said that – 'Daughter, I have granted you 'word-power' (*shabd shakti*). You may produce as many living beings as Brahm says.'

Purna Brahm KavirDev (God Kabir) sent Prakriti Devi to Kshar Purush through His son Sahaj Das. Sahaj Das told Jyoti Niranjan that – 'Father has inserted all those souls who had consented to go with you in this sister's body and has granted 'word' power to her. Prakriti will produce as many living beings as you want with her word (shabd).' After saying this Sahaj Das returned to his island.

The girl, being young, looked beautiful. Sexual desires arose in Brahm and he started misbehaving with Prakriti Devi[11]. Durga said that – 'Jyoti Niranjan, I have the power of word, granted by Father. I will produce as many living beings as you will say. Please do not start the custom of intercourse. You have also originated

[10] Eternal God Kabir

[11] Other name of Durga

from the same Father's word, from an egg, and I have also originated from that same Supreme Father's word after that. You are my elder brother. This act between a brother and a sister will lead to a heinous sin. But Jyoti Niranjan ignored all appeals of Prakriti Devi and by his word-power made female genitals on her body with his nails and tried to rape her. Immediately, Durga, in order to save her honour, and finding no other way out, made a miniature form of her and via Jyoti Niranjan's opened mouth, entered into his stomach. From there, she requested Purna Brahm Kavir Dev to save her.

Instantly, KavirDev (Kavir Dev / God Kabir), acquiring the appearance of His own son Yog Santayan alias Jogjit, appeared there, took the girl out of Brahm's stomach and said that – 'Jyoti Niranjan, from now on you will be called 'Kaal'. You will have births and deaths and therefore, your name will be Kshar Purush[12].

प्रश्न4. काल निर्जन ने योनि को प्रकृति से जोड़कर एक बुरा काम किया था और संभोग की प्रथा शुरू की थी। इसलिए हम समझ सकते हैं कि यह एक अच्छी प्रथा नहीं है और ब्रह्मचर्य सतलोक का मार्ग होना चाहिए।

प्रश्न यह है कि, फिर कैसे कल्ट भगवान कबीर ने काल के दायरे में माता लोई से विवाह किया और दो बच्चों कमला और कमली को जन्म दिया। यहां तक कि उनके दूत रामपाल ने भी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया और शादी कर ली। यहां तक कि रामपाल कल्ट भी कल्ट के सदस्यों के लिए मुफ्त में विवाह का आयोजन कर रहा है। यह प्रथा कल्ट के सदस्यों को सतलोक में कैसे ले जाती है जब कबीर ने अपने ही पुत्र को सेक्स के कारण सतलोक से निकाल दिया ???

प्रश्न5. काल निरंजन ने प्रकृति को वचन दिया था कि वह सभी के लिए अदृश्य रहेगा और यहां तक कि उसने किसी भी त्रिमूर्ति तक को अपना चेहरा नहीं दिखाया।

सवाल है ज्ञान गंगा और कल्ट के सदस्यों का दावा है कि मुस्लिम पवित्र पुस्तक कुरान अल्लाह भी निरंजन है, इसका मतलब है कि यह काल था जिसने मैराज यात्रा के दौरान मुहम्मद को अपना असली रूप दिखाया था। साथ ही काल निरंजन ने अर्जुन को अपना असली रूप दिखाया और बहुत से लोगों जैसे संजय, भीष्म आदि।

तो इन लोगों की बारी में अब वो कसम और व्रत कहाँ चला गया?? क्या काल निरंजन महान खलनायक ने यहाँ ऐसी बकवास गलती की???

प्रश्न6. काल निरंजन ने कसम खाई थी कि वह अपना असली चेहरा कभी किसी को नहीं दिखाएंगे। ज्ञान गंगा पाठकों से पूछते हैं कि इस संसार के भगवान भी किसी को अपना असली चेहरा नहीं दिखाते हैं। अत: यह दावा किया जा सकता है कि यह जगत् परमात्मा वास्तव में काल निरंजन है।

लेकिन अगर हम ज्ञान गंगा को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि कल्ट भगवान कबीर ने भी अपना असली चेहरा किसी को नहीं दिखाया। उन्होंने हमेशा अपनी उपस्थिति को दूसरे शरीर (कई बार जगजीत और अचिंत) में रूपांतरित किया।

ये कल्ट भगवान कबीर के अपने स्वरूप को बदलने के उल्लेखनीय संदर्भ हैं।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या ३६: कल्ट भगवान कबीर जोगजीत उर्फ योग संतायन का रूप प्राप्त करते हैं और काल निरंजन और प्रकृति को दंडित करते हैं।

* ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १४३, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर सत सुकृत में बदल दिया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गरुड़ के पास आए।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १५०, कल्ट भगवान कबीर ने मुनिन्दर को अपना रूप बदल दिया और हनुमान, नल नील और अन्य लोगों के पास आए।

* ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या १५४, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर करनुमाय किया और राजा और रानी के पास आए।

*ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या २१५, कल्ट भगवान कबीर ने अपना रूप बदलकर जोगजीत कर लिया और काल निरंजन में आ गए।

इन कल्टों के अलावा कबीर परमेश्वर अल खिद्र के रूप में मूसा के पास और जीवित पीर के रूप में तैमूर लमे के रूप में आए

ये सभी संदर्भ साबित करते हैं कि ये सभी लक्षण काल निरंजन के समान ही हैं क्योंकि कबीर ने स्वयं किसी को अपना असली चेहरा नहीं दिखाया ...

Q7 यदि काल निरंजन इस्लाम और हिंदू धर्म की सभी पवित्र पुस्तकों के भगवान हैं, तो उन्होंने कुरान में गाय का मांस खाने की अनुमति क्यों दी और हिंदू धर्म में इसे प्रतिबंधित किया *??*

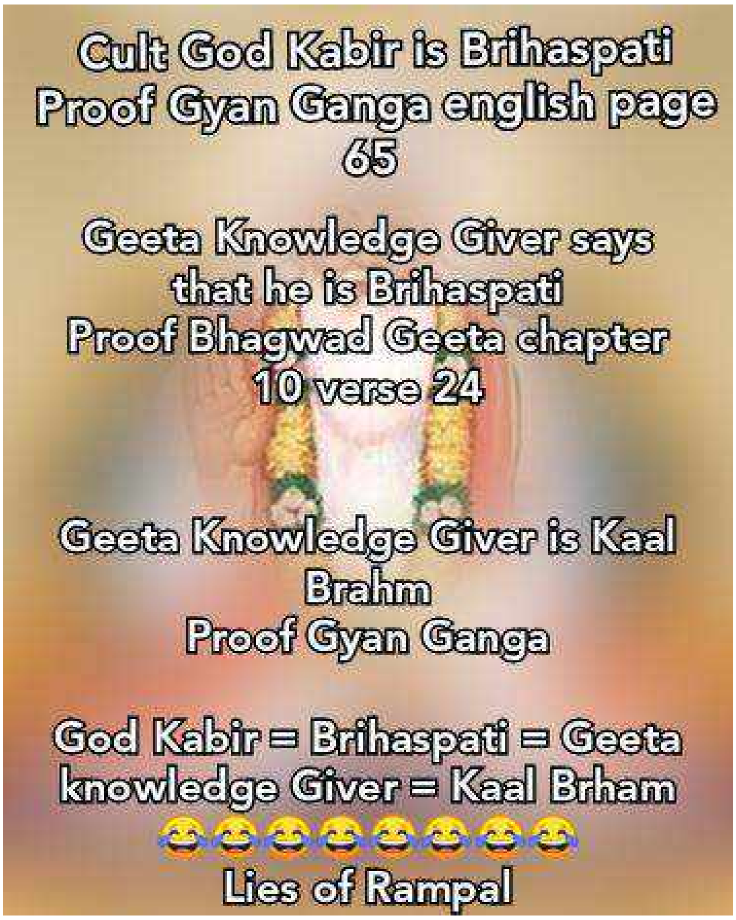
Q8 ज्ञान गंगा पृष्ठ २१५ के अनुसार, काल निरंजन जीवात्मा की गंदगी को खाता है और फिर उन्हें पुनर्जन्म की प्रक्रिया में सड़ने के लिए फेंक देता है। यदि काल निरंजन कुरान में वर्णित शैतान है, तो कुरान का शैतान केवल लोगों को नर्क में कैसे धोखा देता है और फिर उन्हें हमेशा के लिए नर्क में रहने देता है *??* यह ज्ञान गंगा तथ्य के खिलाफ है *????*

प्रश्न ९ यदि ज्ञान गंगा पृष्ठ २१५ सही है, तो पृष्ठ संख्या २५ में जीवों के खिलाफ हिंसा निषिद्ध क्यों है *??* मान लीजिए कि यदि सभी प्राणी पुनर्जन्म की जेल में हैं और *84* लाख पुनर्जन्म के बाद केवल मानव जन्म में ही मोक्ष संभव है, तो हमें सभी जानवरों, पौधों और पक्षियों को उसी के अनुसार मारना चाहिए ताकि वे मानव के रूप में पुनर्जन्म ले सकें *???* इस प्रकार की हत्या जिसमें मांस खाना लक्ष्य नहीं है, को दया हत्या क्यों नही माना जाना चाहिए *???*

Q10 गीता भाषण देने वाला काल है जैसा कि कल्ट के सदस्य उपदेश देते हैं, फिर उन्होंने गीता को सर्वोच्च प्रमाण क्यों कहा*?* यह तो ऐसा कहने जैसा है कि कोयला काला और गंदा है, लेकिन

हम यह साबित करने के लिए कोयला अपने मुंह पर रगड़ेंगे *???* एक खलनायक की किताब से तथ्यों को साबित करना लगभग बकवास है *??*

प्रश्न *11* यदि काल निरंजन गीता के वक्ता हैं, तो उन्होंने गीता १० श्लोक २४ में खुद को बृहस्पति क्यों कहा *??* और ज्ञान गंगा ने पृष्ठ ६४-६५ पर घोषणा की कि कल्ट भगवान कबीर बृहस्पति हैं। इसलिए इस तर्क के अनुसार काल कबीर है*?!!!!*



Q12 काल ब्रहम वह था जिसने प्रकृति के साथ गलत यौन क्रिया करने की कोशिश की और योनि को प्रकृति से जोड़ दिया *!!* लेकिन प्रकृति वह नहीं थी जिसने उसके साथ इस क्रिया में सुख लिया हो *??*

फिर क्यों कल्ट कबीर भगवान ने उसे भी सतलोक से भगा दिया*??* क्या कल्ट भगवान कबीर को पीड़ितों के लिए न्याय की कोई भावना नहीं थी *??* वह किस तरह का बीमार अतार्किक

भगवान है *??* अगर उन्हें सेक्स से इतनी नफरत है तो उनके फॉलोअर्स अब शादी क्यों कर रहे हैं*????*

Q13 कल्ट सदस्यों द्वारा कहा गया है कि सतलोक क्षेत्र में द्वेष और ईर्ष्या जैसी नीच भावना नहीं रहती है*!* लेकिन जैसा कि हम जानते हैं कि कबीर को यौन गतिविधियों से नफरत थी और जब प्रकृति की अवज्ञा की और काल निरंजन के साथ जाने का फैसला किया तो उन्हें जलन होती थी *??* यह कैसा दोगलापन है*???*

Q14 कल्ट सदस्यों द्वारा यह कहा जाता है कि सतलोक क्षेत्र में कर्म दर्शन नहीं था और इसलिए कर्म गतिविधियों से रहित था*?* लेकिन ज्ञान गंगा में साफ लिखा है कि कबीर भी सतलोक में कर्मयोग में लिप्त थे*!!!* उसने प्रकृति और काल निरंजन और अक्षर पुरुष को भी सतलोक से निकाल दिया, उसने कई बार जोगजीत में अपना रूप बदला, वह तैमूर लंगड़े, सिकंदर लोधी राजा और रानी से मिलने गया, उसने रानी चारुमती को कर्णमय के रूप में धमकी दी *!!!!* फिर सतलोक काल लोक से अलग कैसे हो सकता है *??* यह तो बस गुरु का परिवर्तन है *??* और हमने ऊपर सिद्ध किया है कि काल कबीर है जिससे यह भी सिद्ध होता है कि वह इतने कर्म क्यों करता है*?*

प्रश्न १५ ज्ञान गंगा पृष्ठ ४६-४७ में कि काल निरंजन ने एक कारण और फल प्रणाली लागू की थी ताकि यदि कमजोर को दबा दिया जाए, तो मजबूत उत्पीड़क को दंडित किया जाना है। इसलिए दूसरों को कोसना काल निर्धारण का काम है। लेकिन हमने यह भी देखा कि कबीर ने काल निरंजन और प्रकृति को भी श्राप दिया था *??* फिर कबीर और काल में क्या अंतर है *??*

Q16 कल्ट के सदस्यों का कहना है कि कबीर परमेश्वर ने तैमूर को बचपन में *5* पीढ़ियों के लिए राज्य करने का वरदान दिया था। लेकिन यह कैसे संभव है की कल्ट भगवान कबीर को कैसे पता नहीं था कि एक दिन यह लड़का एक दिन बहुत ही ज्यादा खून-खराबा करेगा *??* अगर कबीर यह जानते थे तो कबीर अहिंसा के सिद्धांत का उपदेश कैसे दे सकते हैं *???*

Q17 ज्ञान गंगा के अनुसार ब्रह्मा की कहानी है, जिसमे ब्रह्मा ने हिंदू त्रिमूर्ति गायत्री से शादी की जिसने उसके साथ यौन संबंध रखे और गायत्री ने एक और लड़की पुहपवती को पैदा किया और उस लड़की ने भी ब्रह्मा के साथ यौन संबंध बनाए। यह फर्जी और बेहद आपत्तिजनक कहानी पृष्ठ संख्या *45-46* में है, जो पूरी तरह से निराधार कहानी है।

क्या ज्ञान गंगा झूठ और छल से भरी किताब, किसी भी पुराण से इस कहानी को साबित कर सकती है *????*

Brahma anxiously left towards North where there is darkness everywhere. There, Brahma meditated for four yugas (ages), but did not achieve anything. Through an ethervoice Kaal said, "Durga, why has the creation not been done?" Durga (Bhavani) said that – 'Your eldest son, Brahma has adamantly gone in search of you.' Brahm (Kaal) said, "Call him back. I will not appear before him. The entire task of creation of living beings is impossible without Brahma." Then Durga (Prakriti), with her word-power, created a girl called 'Gayatri' and ordered her to bring Brahma back. Gayatri went to Brahma but he was meditating and did not feel her presence. Then Aadi Kumari (Prakriti), by telepathy, told Gayatri to touch Brahma's feet and Gayatri did the same.

[18] Power of bhakti

Brahma's meditation got disturbed and he furiously said, "Who is this sinner who has interrupted my meditation? I will curse you." Gayatri said, "It is not my fault. First, listen to me and then you may curse me. Mother has sent me to bring you back because living beings cannot be created without you." Brahma said, "How can I return? I have not seen father and will be ridiculed if I return like this. If you say in front of mother that Brahma has seen father (Jyoti Niranjan) and be my eyewitness then I will return with you." Gayatri said that – 'If you will have sex with me, then I will be your false witness.' Brahma thought that I could not see father and will feel ashamed in front of mother if I return like this. Seeing no other way out, he did sex with Gayatri.

Then Gayatri said, "Let us prepare one more witness." Brahma said, "That would be good." Gayatri created another girl named 'Puhapvati' by her word-power. Both, Brahma and Gayatri, asked Puhapvati to testify that Brahma saw his father. Puhapvati said, "Why should I give false statement? Yes, if Brahma does intercourse with me, then I can be his false witness." Gayatri persuaded Brahma by saying that there is no other way out. Brahma did sex with Puhapvati, and then the three came to Durga (Aadi Maya / Prakriti). The two women had kept the above-mentioned condition because they knew that if Brahma would disclose their false statements to mother, then mother would curse them. Therefore, they made him a culprit too.

(Here, Maharaj Garib Das Ji says – "Das Garib Yeh Chook Dhuron Dhur")

Q18 ज्ञान गंगा, पृष्ठ *47-48* के अनुसार, शेषनाग का जन्म कालिया नाग के रूप में विष्णु पर विष छिड़कने के उनके कार्य के कारण हुआ था *??* यह फिर से एक स्पष्ट झूठ है क्योंकि भागवत पुराण स्पष्ट रूप से कहता है कि शेषनाग का जन्म भगवान बलराम के रूप में हुआ था न कि कालिया नाग के रूप में *??*

भाग 15 : भगवद गीता में किये गए घालमेल का खंडन

हमने अब तक रामपाल कल्ट के हर पहलू और तत्व के बारे में बात की है।

अब हम हिंदू धर्म की पवित्र पुस्तक भगवद गीता पर चर्चा करेंगे, जिससे रामपाल कल्ट ने अपने कल्ट पौराणिक कथाओं को साबित करने के लिए कई भ्रामक और जाली तथ्य निकाले हैं।

हम भगवद गीता और सांख्य दर्शन से इसके संबंध के बारे में पहले ही चर्चा कर चुके हैं।

सबसे पहले हम भगवद गीता में रामपाल कल्ट की त्रिमूर्ति के दावे पर चर्चा करेंगे।

जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि रामपाल कल्ट तीन खास विभूतियों में विश्वास करता है अर्थात काल निरंजन उर्फ मृत्यु उर्फ क्षर पुरुष, फिर अक्षर पुरुष उर्फ अक्षर पुरुष और अंतिम कल्ट भगवान कबीर है।

कल्ट पुस्तक ज्ञान गंगा पृष्ठ संख्या *8* और *9* पर है कि गीता में अध्याय *8* श्लोक संख्या *3* और *4* में वर्णित तीन पुरुष हैं।

son, who consumes tobacco, emits smoke on smoking hukka, beed or cigarette, then that smoke entering into the bodies of his small children causes damage. Then those children adopt vices quickly, and their health also deteriorates.

Definition of Incarnation

The meaning of "Incarnation (Avtaar)" is "to descend from a higher place to a lower place". Especially, this auspicious word is used for those supreme souls who perform some remarkable activities on earth; who are considered to be sent by God or is considered to be the arrival of God Himself.

In Shrimadbhagvat Gita Adhyay 15 Shlok 1 to 4 and 16-17, there is knowledge of three Purushs (Gods).

1. Kshar Purush, who is also called Brahm; the mantra of whose worship is 'Om'. Its evidence is in Gita Adhyay 8 Shlok 13.

2. Akshar Purush, who is also called ParBrahm; the mantra of whose worship is 'Tat' which is coded. Evidence is in Gita Adhyay 17 Shlok 23.

3. Uttam Purush tu anyaH = Supreme Purush God is someone

else other than the two abovementioned Purushs (Kshar Purush and Akshar Purush). He is Param Akshar Purush, about whom in the answer of Gita Adhyay 8 Shlok 1, it is stated in Adhyay 8 Shlok 3 that He is Param Akshar Brahm. His jaap is 'Sat', which is coded. By the attainment of this very Supreme God, a worshipper will attain supreme peace and eternal supreme abode. Evidence is in Gita Adhyay 18 Shlok 62. This Supreme God (Param Akshar Brahm) is distinct from the Speaker of the knowledge of Gita. To gain further knowledge, please obtain book "Gyan Ganga" from Satlok Ashram, Barwala. Incarnations are of two types as stated above. Now you have come to know that there are chiefly three Purushs (Gods), who have already been mentioned above. Mainly two Gods play a role for us.

1. Kshar Purush (Brahm) - who calls himself Kaal in Gita Adhyay 11 Shlok 32.

2. Param Akshar Purush (Param Akshar Brahm) - regarding whom there is mention in Gita Adhyay 8 Shlok 3 and 8, 9, 10; Gita Adhyay 18 Shlok 62, and Adhyay 15 Shlok 1 to 4 and 17.

Information about Incarnations of Brahm (Kaal)

पेज नंबर ८३ एंड ८४ पर भी

Gita Chapter 15 Verse 16

Dwau, imau, purushau, loke, ksharH, ch, aksharH, ev, ch,
KsharH, sarvani, bhootani, kootasthH, aksharH, uchyate ||16||

Translation: (*Loke*) in this world (*dwau*) two types of (*KsharH*) mortal (*ch*) and (*AksharH*) immortal (*purushau*) Gods (*ev*) likewise (*imau*) in the loks of these two Gods (*sarvani*) all (*bhootani*) the bodies of the living beings (*ksharH*) mortal (*ch*) and (*kootasthH*) the soul (*aksharH*) immortal (*uchyate*) is said to be.

Translation: In this world, there are two types of Gods, Kshar (Mortal) and Akshar (Immortal). Likewise, in the loks of these two Gods, the bodies of all the living beings are said to be mortal and the soul, immortal.

Gita Chapter 15 Verse 17

UttamH, PurushH, tu, anyaH, Parmatma, iti, udahrtH,
YaH, loktryam, aavishya, bibharti, avyyaH, iishwarH ||17||

Translation: (*UttamH*) Supreme (*PurushH*) God (*tu*) however (*anyaH*) is someone else other than the two aforesaid Gods "Kshar Purush and Akshar Purush" (*iti*) in reality this (*Parmatma*) God

(*udahrtH*) is called (*yaH*) who (*loktryam*) into the three loks (*aavishya*) entering (*bibharti*) maintains / sustains everyone and (*avyyaH*) eternal (*iishwarH*) is Ishwar (is greatest among the gods i.e. is the Almighty God).

Translation: The Supreme God is, however, someone else other than the two aforesaid Gods "Kshar Purush and Akshar Purush". In reality, He is called God/Parmatma, who by entering into the three loks, nurtures and protects everyone, and is Eternal God (the greatest among the gods i.e. is the Almighty God).

यहां समझने वाली पहली बात यह है कि गीता या किसी शास्त्र में पुरुष शब्द को कभी भी भगवान नहीं कहा गया है।

पुरुष का अर्थ नीचे देखें।

NOUN / ADJECTIVE purusa masculine vocative singular stem: purusa

rch



6 results

Word	Reference	Gender	Number	Synonyms	Definition
cāraḥ	2.8.12	Masculine	Singular	praṇidhiḥ, apasarpaḥ, caraḥ, spaśaḥ, gūḍhapuruṣaḥ, yathārhavarṇaḥ	
kṣetrajñaḥ		Masculine	Singular	ātmā, puruṣaḥ	the soul
punnāgaḥ	2.4.25	Masculine	Singular	devavallabhaḥ, puruṣaḥ, tuṅgaḥ, kesaraḥ	

328 results for पुरुष



☑ Devanagari ☐ Brahmi EXPERIMENTAL

पुरुष	m. (mc. also p/ūr- ;prob. fr. pṛ- and connected with puru-, pūru- *in fine compositi or 'at the end of a compound'* f(ā-), rarely f(ī-); see) a man, male, human being (*plural* people, mankind) etc.
पुरुष	m. a person, (pumān puruṣaḥ- ,a male person ; daṇḍaḥp- ,punishment personified ; *especially* grammatical *Persian*,with prathama-, madhyama-, uttama- = the 3rd, 2nd, 1st *Persian*), an officer, functionary, attendant, servant etc. (see tat-p-)
पुरुष	m. a friend
पुरुष	m. a follower of the sāṃkhya- Philosophy (?)
पुरुष	m. a member or representative of a race or generation etc.
पुरुष	m. the height or measure of a man (= 5 aratni-s = 120 aṅgula-s)
पुरुष	m. the pupil of the eye
पुरुष	m. (also with nārāyaṇa-) the primaeval man as the soul and original source of the universe (described in the puruṣa-sūkta- q.v.) etc.
पुरुष	m. the personal and animating principle in men and other beings, the soul or spirit etc.
पुरुष	m. the Supreme Being or Soul of the universe (sometimes with para-, parama- ,or uttama- ;also identified with brahmā-, viṣṇu-, śiva- and durgā-) etc.
पुरुष	m. (in sāṃkhya-) the Spirit as passive and a spectator of the prakṛti- or creative force
पुरुष	m. the 'spirit of fragrant [illegible]
पुरुष	m. (with sapta-) *Name* of the divine or active principles from the minute portions of which the universe was formed
पुरुष	m. *Name of a* pāda- in the mahā-nāmnī- verses
पुरुष	m. of the Ist, 3rd, 5th, 7th, 9th and 11th signs of the zodiac
पुरुष	m. of a son of manu- cākṣuṣa-
पुरुष	m. of one of the 18 attendants of the sun
पुरुष	m. *plural* men, people (*see* above)
पुरुष	m. *Name of* the Brahmans of krauñca-dvīpa-
पुरुष	m. (with pañca-) *Name of* 5 princely personages or miraculous persons born under *particular* constellations, Var
पुरुष	m. Rottleria Tinctoria
पुरुष	m. Clerodendrum Phlomoides
पुरुष	mn. *equals* puruṣaka- m. n.
पुरुष	n. (!) *Name of* mount meru-

जब पुरुष शब्द कभी भगवान से जुड़ा नहीं है *(*सांख्य दर्शन के अलावा जहां इसे चेतना के रूप में कहा जाता है*,* भगवान नहीं*)* बल्कि इसका सही अर्थ पुरुष है*,* तो रामपाल कल्ट जबरदस्ती पुरुष को भगवान क्यों कह रहा है ***???***

आइए पहले उस श्लोक को देखें और उसका शब्द-दर-शब्द अनुवाद करें।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च *|*

क्षर*:* सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते *|| 16||*

द्व*(two)* इमो *(these)* पुरुषौ *(Purush)* लोके*(in this world)* क्षरश्चाक्षर *(perishable and imperishable)* एव*(indeed)* च*(and) |*

क्षर*: (perishable)* सर्वाणि *(every)* भूतानि *(being)* कूटस्थोऽक्षर *(soul is imperishable)* उच्यते *(called as) || 16||*

भावार्थ***:*** सृष्टि में दो प्रकार के प्राणी हैं*,* क्षर ***(***नाश करने योग्य***)*** और अक्षर ***(***अविनाशक***)***। क्षर सभी भौतिक जगत के प्राणी हैं और अक्षर अविनाशी आत्मा है।

अब यहाँ रामपाल कल्ट ने क्षर *(*या नाशवान*)* शब्द पाया और उस शब्द को क्षर पुरुष मिथक से जोड़ दिया*,* लेकिन उन्होंने इस बात की उपेक्षा की है कि केवल एक शब्द क्षर है और वह भी भूत शब्द के साथ है जिसका शाब्दिक अर्थ है शरीर संस्कृत में। कृपया नीचे स्क्रीनशॉट देखें।

भूत	n.	bhUta	well-being
भूत	n.	bhUta	welfare
भूत	n.	bhUta	spirit
भूत	m.	bhUta	son
भूत	adj.	bhUta	purified
भूत	n.	bhUta	prosperity
भूत	adj.	bhUta	proper
भूत	adj.	bhUta	present
भूत	n.	bhUta	one of the 5 elements
भूत	adj.	bhUta	mixed or joined with
भूत	n.	bhUta	imp
भूत	m.	bhUta	great devotee or ascetic
भूत	n.	bhUta	goblin
भूत	n.	bhUta	ghost of a deceased person
भूत	adj.	bhUta	fit
भूत	adj.	bhUta	existing
भूत	n.	bhUta	element
भूत	n.	bhUta	demon

इसलिए यहाँ क्षर पुरुष प्राणी या शरीर हैं, काल निरंजन देवता नहीं। प्राणियों के भौतिक शरीर नाशवान हैं, इसलिए गीता उन्हें नाशवान कहती है।

कल्ट सदस्यों की मूर्खता की दृष्टि पर भी यदि हम विश्वास करें तो भी उल्लेख मिलता है कि प्रत्येक *(सर्वाणी)* प्राणी, जो स्पष्ट रूप से एक से अधिक क्षर पुरुष का उल्लेख करता है, जो रामपाल पौराणिक कथाओं का काल निरंजन नहीं हो सकता क्योंकि वह तो केवल एक है। तो यह क्षर पुरुष कई कैसे हो सकता है जब वह अकेला है ***??***

अब कूटस्थ शब्द का अनुवाद देखें जो ज्ञान गंगा के अनुसार अक्षर पुरुष है।



Why ads on learnsanskrit.cc?

learn sanskrit .cc dictionary

पठत संस्कृतम् शब्दकोशः

Dictionary Fables Training Resources ≡

Translation
- Sanskrit to English
- English to Sanskrit
- Automatically

Output transliteration
- IAST (Diacritics)
- Harvard-Kyoto (ASCII)

submit

कूटस्थ Translate

कूटस्थ	m.	kUTastha	the supreme soul
कूटस्थ	adj.	kUTastha	unchangeable
कुतस्तराम्	ind.	kutastarAm	how? in what manner?
कूटस्थ	adj.	kUTastha	standing in a multitude of or in the midst of
कूटस्थ	adj.	kUTastha	standing at the top
कूटस्थ	n.	kUTastha	soul
कूटस्थ	m.n.	kUTastha	kind of perfume
कूटस्थ	adj.	kUTastha	keeping the highest position
कूटस्थ	adj.	kUTastha	uniform
कूटस्थ	adj.	kUTastha	immovable
कूटस्थ	adj.	kUTastha	changeless
कुतस्तम	adj.	kutastama	coming from whence
कूटस्थता	f.	kUTasthatA	uniformity
कूटस्थता	f.	kUTasthatA	unchangeableness

यहाँ कूटस्थ का अर्थ है आत्मा, जो इसे अविनाशी कहने का अर्थ स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है।

इस शब्द का अर्थ कल्ट के दावे को भी खारिज करता है कि यहां अक्षर पुरुष उनका अक्षर पुरुष है जिसे कल्ट भगवान कबीर पुत्र अचिंत ने बनाया था। लेकिन सवाल यह है कि गीता

में वर्णित अक्षर पुरुष कल्ट के अक्षर पुरुष कैसे हो सकते हैं। यह अक्षर या अविनाशी यहाँ आत्मा है कोई पौराणिक देवता नहीं...

उत्तम*:* पुरुषस्त्वन्य*:* परमात्मेत्युदाहृत*: |*

यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वर*: || 17||*

उत्तम—*the Supreme;* पुरुष—*Divine Personality;* तू—*but;* अन्य—*besides;* परमात्मा—*the Supreme Soul;* इति—*thus;* उद्धरित—*is said;* य*:*—*who;* लोक त्रय—*the three worlds;* अविश्य *enters;* भीभृत्य—*supports;* अव्यवयः—*indestructible;* ईश्वर—*the controller*

अनुवाद*:* इनके अलावा, सर्वोच्च दिव्य व्यक्तित्व हैं, जो अविनाशी सर्वोच्च आत्मा हैं। वह अपरिवर्तनीय नियंत्रक के रूप में तीनों लोकों में प्रवेश करता है और सभी जीवित प्राणियों का समर्थन करता है।

यहां आप देख सकते हैं कि तीसरा पुरुष, उत्तम पुरुष सर्वोच्च देवता है, जिसके लिए कल्ट सदस्य कहते हैं कि यह हमारे भगवान कबीर हैं, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि गीता सर्वोच्च भगवान कबीर की बात कह रही हैं।

कल्ट के सदस्य भी दावा करते हैं कि ये तीन लोक जिन पर गीता भगवान शासन करते हैं, उनके तीन लोक हैं, लेकिन वास्तव में ये तीन लोक वैदिक तीन लोक हैं, द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी जैसा कि पुरुष सूक्त और वैदिक पाठ में वर्णित है जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी।

अब हम गीता में कल्ट के दावे के बारे में चर्चा करेंगे कि ब्रह्म काल निरंजन या मृत्यु का देवता है।

गीता से सिद्ध करके हम इस भ्रांति को आसानी से तोड़ सकते हैं कि ब्रह्म की हिंदू अवधारणा काल निरंजन बिल्कुल नहीं है। भगवद गीता में हर जगह आप देखेंगे कि ब्रह्म को अविनाशी या स्थिर कहा जाता है जो कि ब्रह्म का वास्तविक गुण है। लेकिन जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं कि रामपाल मिथकों में काल निरंजन नाशवान है।

यहाँ कुछ भगवद गीता उद्धरण हैं जहाँ ब्रह्म को अविनाशी कहा गया है।

गीता ***4:31*** ब्रह्म सनातन है ***(***हमेशा शेष***)***

गीता ***5:19*** ब्रह्म दोष रहित है

गीता ८*:*३ ब्रह्म अक्षर है ***(*** अविनाशी ***)***

गीता ***8:13*** ओम एक अक्षर ब्रह्म का शब्द है

गीता ८*:*२३-२६*:* जो ब्रह्म में जाते हैं वे मुक्त हो जाते हैं और अन्य इस दुनिया में पुनर्जन्म लेते हैं।

गीता १०*:*१२-१३*:* आप सर्वोच्च ब्रह्म हैं

गीता १३*:*१३ *:* ब्रह्म अनादि है।

यदि काल निरंजन गीता का ब्रह्म है, तो वह गीता ७*:*२९-३० और गीता ८*:*२३-२६ में क्यों कह रहा है कि ब्रह्म को जानो और मृत्यु से मुक्त हो जाओ, जो वास्तव में सिद्ध करता है कि ब्रह्म न तो मृत्यु है और न ही वह नाशवान है। .

ज्ञान गंगा से एक और दावा है कि कृष्ण ने एक बार गीता ११४७ में कहा था कि मेरे विश्वरूप को उसके पहले किसी ने नहीं देखा, जो गीता ११*:*३२ में दिखाया गया है। लेकिन कृष्ण ने दुर्योधन और अन्य लोगों को दुर्योधन महल में अपना रूप पहले ही दिखा दिया था जब दुर्योधन ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी। कल्ट के सदस्यों का दावा है कि इससे साबित होता है कि काल निरंजन ने कृष्ण को वश में कर लिया था और फिर उसे अर्जुन को युद्ध की घोषणा करने के लिए मनाने के लिए उकसाया ताकि काल उन पर दावत दे सके।

आइए पहले परिदृश्य को देखें जहां कृष्ण अपना रूप दिखाते हैं। घटना कुछ इस प्रकार थी, दुष्ट दुर्योधन लगातार अपने भाई पांडवों के साथ बुरा व्यवहार कर रहा था और उसने छल से उनकी भूमि और संपत्ति पर भी कब्जा कर लिया था। उसके बाद कृष्ण मध्यस्थ बन जाते हैं और दुर्योधन को युद्ध की घोषणा न करने के लिए मनाने के लिए जाते हैं और केवल पांडवों को *5* गांव देते हैं। पांडव ऐसा नहीं करेंगे और *5* गांवों के साथ शांति से रहेंगे।

कृपया इसे नीचे स्क्रीनशॉट में देखें।

"Who Delivered the Knowledge of Holy Gita Ji?"

The knowledge of Holy Gita ji was delivered at that time when the battle of Mahabharat was about to happen. Arjun had refused to fight. Why was the battle taking place? This battle cannot even be given the title of a religious battle (crusade) because it was a matter of division of wealth between two families. The division of property of Kauravs and Pandavs was not happening. Kauravs had even refused to give half of the kingdom to the Pandavs. God Shri Krishna ji went three times as a peace-messenger to intervene between the two sides. But both the sides were unrelentingly adamant. Shri Krishna ji also warned them of the catastrophic aftermaths of the war that who knows how many sisters will become widows and how many children will be orphaned. You will not gain anything, but heinous sin. No one knows who will die and who will live in the battle? When the third time Shri Krishna ji went for negotiation, both the sides showed the list of all the kings along with their armies on their sides, and said that these many kings are in our favour and these in ours. When Shri Krishna ji saw that both the sides are rigid and ready for the war, then Shri Krishna ji thought that there is one more trick; let me use that too today. Shri Krishna ji thought that may be Pandavs, because of being my relatives, are being adamant thinking that Shri Krishna ji is with us; we will certainly be victorious (because Shri Krishna ji's sister Subhadra was married to Shri Arjun ji). Shri Krishna ji said that on one side, there will be my entire army and on the other side, I. Besides this, I also pledge that I will not take up any arms. On hearing this announcement, the ground slipped from under Pandavs' feet. They felt that now our defeat is certain. Considering this, the five Pandavs went out of the assembly saying that let us think about it. After some time, they requested Shri Krishna ji to come out of the assembly. When Shri Krishna ji

[1] The interpersonal relationships of the previous and the future births

came out, the Pandavs said, "Oh Lord! Get us five villages; we don't want war. Our self-esteem will also be maintained and as per your wish, the war will also be averted."

अब यहाँ एक पल के लिए रुको *??*

ज्ञान गंगा ने पृष्ठ ९-१० पर दावा किया है कि कृष्ण काल के अवतार थे, फिर काल के अवतार ने दुर्योधन को शांति के लिए मनाने की कोशिश क्यों की। क्या यह बेहतर नहीं होता कि कृष्ण इस पर चुप रहते क्योंकि एक मौका तो था कि दुर्योधन इस पर सहमत हो जाता और युद्ध शुरू नहीं करता *????*

ठीक है अब आगे दुर्योधन कृष्ण की मांग से असहमत हो गया और उसे पकड़ने की कोशिश की ताकि वह उसे पांडवों से मोलभाव कर सके। नीचे गीता प्रेस गोरखपुर लघु महाभारत अध्याय उद्योग पर्व का स्क्रीनशॉट है, जहां कृष्ण ने अपना रूप दिखाया।

न, ये लोग आपसमें मिलकर बलात् इन कमलनयन श्रीकृष्णका तिरस्कार करके इन्हें कैद करनेका विचार कर रहे हैं ! किंतु ये नहीं जानते कि आगके पास जाते ही जैसे पतंगे नष्ट हो जाते हैं, उसी तरह श्रीकृष्णके पास पहुँचते

इन्द्र भी इनसे हार मान चुके हैं। अपने अन्य अवतारोंमें ये मधु-कैटभ और हयग्रीवादि अनेकों दैत्योंको पछाड़ चुके हैं। ये सम्पूर्ण प्रवृत्तियोंके प्रेरक हैं, किंतु स्वयं किसीकी भी प्रेरणासे कोई काम नहीं करते। ये ही सकल पुरुषार्थोंके

कारण हैं। ये जो कुछ करना चाहें वही काम अनायास कर सकते हैं। तुम्हें इनके प्रभावका पता नहीं है। देखो, यदि तुम इनका तिरस्कार करनेका साहस करोगे तो उसी प्रकार तुम्हारा नाम-निशान मिट जायगा, जैसे अग्निमें गिरकर पतंगा नष्ट हो जाता है।

विदुरजीका वक्तव्य समाप्त होनेपर भगवान् कृष्णने कहा—'दुर्योधन ! तुम जो अज्ञानवश यह समझते हो कि मैं अकेला हूँ और मुझे दबाकर कैद करना चाहते हो, सो याद रखो, समस्त पाण्डव और वृष्णि तथा अन्धकवंशीय यादव भी यहीं हैं। वे ही नहीं, आदित्य, रुद्र, वसु और समस्त महर्षिगण भी यहीं मौजूद हैं।' ऐसा कहकर शत्रुदमन श्रीकृष्णने अट्टहास किया। बस, तुरंत ही उनके सब अङ्गोंमें बिजली-सी कान्तिवाले अङ्गुष्ठाकार सब देवता दिखायी देने



लगे। उनके ललाटदेशमें ब्रह्मा, वक्षःस्थलमें रुद्र, भुजाओंमें लोकपाल और मुखमें अग्निदेव थे। आदित्य, साध्य, वसु, अश्विनीकुमार, इन्द्रके सहित मरुद्गण, विश्वेदेव तथा यक्ष, गन्धर्व और राक्षस—ये सब उनके शरीरसे अभिन्न जान पड़ते थे। उनकी दोनों भुजाओंसे बलभद्र और अर्जुन प्रकट हुए।

भुजाएँ दिखायी देती थीं। उनमें वे शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, शार्ङ्ग धनुष, हल और नन्दक खड्ग लिये हुए थे। उनके नेत्र, नासिका और कर्णरन्ध्रोंसे बड़ी भीषण आगकी लपटें तथा रोमकूपोंमेंसे सूर्यकी-सी किरणें निकल रही थीं।

श्रीकृष्णके इस भयंकर रूपको देखकर सब राजाओंने भयभीत होकर नेत्र मूँद लिये। केवल द्रोणाचार्य, भीष्म, विदुर, सञ्जय और ऋषिलोग ही उसका दर्शन कर सके; क्योंकि भगवान्‌ने उन्हें दिव्य दृष्टि दे दी थी। सभाभवनमें भगवान्‌का यह अद्भुत कृत्य देखकर देवताओंकी दुन्दुभियोंका शब्द होने लगा तथा आकाशसे पुष्पोंकी झड़ी लग गयी। तब राजा धृतराष्ट्रने कहा, 'कमलनयन ! सारे संसारके हितकर्ता आप ही हैं, अतः आप हमपर कृपा कीजिये। मेरी प्रार्थना है कि इस समय मुझे दिव्य नेत्र प्राप्त हों; मैं केवल आपहीके दर्शन करना चाहता हूँ, फिर किसी दूसरेको देखनेकी मेरी इच्छा नहीं है।' इसपर भगवान् श्रीकृष्णने कहा, 'कुरुनन्दन तुम्हारे अदृश्यरूपसे दो नेत्र हो जायँ।' अब सभामें बैठे हुए राजा और ऋषियोंने देखा कि महाराज धृतराष्ट्रको नेत्र प्राप्त हो गये हैं तो उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वे श्रीकृष्णकी स्तुति करने लगे। उस समय पृथ्वी डगमगाने लगी, समुद्रमें खलबली पड़ गयी और सब राजा भौंचक्के-से रह गये। फिर भगवान्‌ने उस स्वरूपको तथा अपनी दिव्य, अद्भुत और चित्र-विचित्र मायाको समेट लिया। इसके पश्चात् वे ऋषियोंसे आज्ञा ले सात्यकि और कृतवर्माका हाथ पकड़े सभाभवनसे चल दिये। उनके चलते ही नारदादि ऋषि भी अन्तर्धान हो गये।

श्रीकृष्णको जाते देख राजाओंके सहित सब कौरव भी उनके पीछे-पीछे चलने लगे। किंतु श्रीकृष्णने उन राजाओंकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इतनेहीमें दारुक उनका दिव्य रथ सजाकर ले आया। भगवान् रथपर सवार हुए। उनके साथ ही महारथी कृतवर्मा भी चढ़ता दिखायी दिया। इस प्रकार जब वे जाने लगे तो महाराज धृतराष्ट्रने कहा, 'जनार्दन ! पुत्रोंपर मेरा बल कितना काम करता है—यह आपने प्रत्यक्ष ही देख लिया। मैं तो चाहता हूँ कि किसी प्रकार कौरव-पाण्डवोंमें मेल हो जाय और इसके लिये प्रयत्न भी करता हूँ। किंतु अब मेरी दशा देखकर आप मुझपर संदेह न करें।'

तो ये थे महाभारत के संदर्भ जहां आप देख सकते हैं कि कृष्ण के शरीर के रूप में कुछ देवताओं का समागम है और उनके शरीर में बलराम अर्जुन दिखाई दे रहे थे।

आइए अब विश्वरूप के गीता संदर्भ को देखें।

यह संदर्भ गीता अध्याय ११ श्लोक क्रमांक ९ से प्रारंभ होता है।

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् /

अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् // *10*//

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् /

सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् // *11*//

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता /

यदि भा: सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मन: // *12*//

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा /

अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा // *13*//

अनुवाद : उस लौकिक रूप में, अर्जुन ने असीमित चेहरे और आंखों को देखा, जो कई दिव्य आभूषणों से सजाए गए थे और कई तरह के दिव्य हथियारों को धारण करते थे। उन्होंने अपने शरीर पर कई मालाएँ पहनी थीं और कई सुगंधित स्वर्गीय सुगंधों से उनका अभिषेक किया गया था। उसने अपने आप को अद्भुत और अनंत भगवान के रूप में प्रकट किया, जिसका चेहरा हर जगह है। (11)

यदि आकाश में एक साथ एक हजार सूर्य प्रज्वलित हों, तो वे उस महान रूप के वैभव से मेल नहीं खा सकते। (१२)

वहाँ अर्जुन ने देवताओं के देवता के उस शरीर में, एक स्थान पर स्थापित संपूर्ण ब्रह्मांड की समग्रता को देखा।(१३)

यहां आप पहले और बाद में देखे गए फॉर्म में अंतर देख सकते हैं। एक बड़ा अंतर यह है कि कृष्ण ने दुर्योधन महल में कम देवता और अन्य के साथ विश्वरूप का केवल एक छोटा संस्करण

दिखाया, लेकिन युद्ध के मैदान में, कृष्ण ने विश्वरूप का एक मेगा संस्करण दिखाया जिसमें सब कुछ विशाल है और कोई शुरुआत और अंत नहीं दिखा रहा है।

यह समझने के लिए पर्याप्त होगा कि कृष्ण क्यों कहते हैं कि आपके पहले किसी ने भी मेरा रूप नहीं देखा है। लेकिन हमेशा की तरह कल्ट के सदस्य इस उदाहरण का प्रचार कर रहे हैं क्योंकि कृष्ण को दूसरी बार अपने रूप के बारे में पता नहीं था और यह दूसरी बार काल था।

अब हम ज्ञान गंगा के अगले और अंतिम दावे पर आएंगे कि ज्ञान भाषण देने वाला कोई और नहीं बल्कि काल निरंजन है क्योंकि गीता भाषण देने वाला खुद को गीता 11:32 में काल कहता है।

stay composed after seeing your dreadful appearance."

In Adhyay 11 Shlok 47, Kaal, the God narrating Holy Gita ji is saying, "Oh Arjun! This is my real 'Kaal' appearance, which nobody has seen before you."

One fact that has been proved from the aforesaid explanation is that in Kaurav's assembly, Shri Krishna ji had shown the 'Viraat' (huge) form and here in the battlefield, Kaal (by entering into Shri Krishna ji's body like a ghost) had shown his 'Viraat' form. Otherwise, he would not have said that nobody has seen this 'Viraat' form before, except you, because Shri Krishna ji had already shown his 'Viraat' form in Kaurav's assembly.

Secondly, this has been proved that the narrator of Holy Gita ji is Kaal (Brahm / Jyoti Niranjan), and not Shri Krishna ji because Shri Krishna never said before that I am Kaal and never said afterwards that I am Kaal. Shri Krishna ji can not be Kaal; men and women from far-off places used to long for a sight of his.

Note: - What is 'Viraat' form?

Viraat form: - If, during daytime or in a moonlit night, when your body's shadow is small, nearly the size of your body or slightly bigger, you gaze at the area of the chest of that shadow for two minutes, even if your eyes water, and then look at the sky ahead; you will see your own 'Viraat' form which will be white in colour and touching the sky. Likewise, every human being has his 'Viraat' form. But those, whose power of bhakti (worship) is more, their light becomes equally stronger.

अब सबसे पहले हम गीता का श्लोक ***11:32*** देखेंगे।

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो

लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्त*: /*

ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे

येऽवस्थिता*:* प्रत्यनीकेषु योधा*: // 32//*

काल*(?????)* अस्मि*(i am)* लोक*(world)* क्षयकृत*(the source of destruction of the worlds)*

प्रवृद्ध—*mighty;* लोकान—*the worlds;* समहरतुम—*annihilation;* इह—*this world;* प्रवृतह—*participation;* ऋत—*without;* अपि—*even;* त्वम—*you;* न भविष्यन्ति—*shall not cease to exist;* सर्वे—*all;* ये—*who;* अवस्थितः—*arrayed;* प्रति अनिकेषु—*in the opposing army;* योधा *the warriors*

तो यहां कल्ट के सदस्य नाचने और जश्न मनाने लगते हैं कि गीता भाषण देने वाला खुद को काल कह रहा है और वह काल निरंजन है ***??***

लेकिन संस्कृत भाषा में काल का वास्तव में क्या अर्थ है***?***

आइए विभिन्न शब्दकोशों से देखें।

यहाँ लोकप्रिय संस्कृत से अंग्रेजी शब्दकोश है जिसमें शब्द काल का अर्थ समय या गणना है।


Automatically

Output transliteration
IAST (Diacritics)
Harvard-Kyoto (ASCII)
submit

काल
Translate

कलहं करोति (कृ)		kalahaM karoti (kR)	quarrel	
ते सर्वदा कलहं कुर्वन्ति	sent.	te sarvadA kalahaM kurvanti	They always quarrel.	
काल	m.	kAla	time	BV
काल	m.	kAla	era	BV
कला	f.	kalA	art	BV
कलाय	m.	kalAya	peanut	BV
कालांश	m.	kAlAMza	period	BV
कलङ्क	m.	kalaGka	stain	BV
कलङ्क	m.	kalaGka	blot	BV
कलावर्ग	m.	kalAvarga	art class	BV
कालद्वीप	n.	kAladvIpa	Africa	BV
कलाशास्त्र	n.	kalAzAstra	teachings related to arts	BV
खलनायक	m.	khalanAyaka	villain	BV
कालानुक्रम	m.	kAlAnukrama	chronology	BV
कलाप्रदर्शनी	f.	kalApradarzanI	art gallery [Am.]	BV
भाविष्यत् कालः	n.	bhAviSyat kAlaH	future	BV
कस्यचित् कालस्य अनन्तरम्	phrase	kasyacit kAlasya anantaram	after some time	BV
काल	m.	kAla	fate	
काल	m.	kAla	destiny	
काल	m.	kAla	space of time	

चौंक गए न !! अन्य जगह देखते है

काल	m. (3. **kal** - ,"to calculate or enumerate"), [ifc. f(**ā** -).], a fixed or right point of time, a space of time, time (in general) etc.
काल	m. the proper time or season for (*genitive case dative case locative case,in compound, infinitive mood,or Potential* with **yad** - *exempli gratia, 'for example'* **kālaḥ prasthānasya** - or **nāya** - or **ne** - ,time for departure; **kriyā - kāla** - ,time for action ; **nāyaṃ kālo vilambitum** - ,this is not the time to delay ; **kālo yad bhuñjīta bhavān** - ,it is time for you to eat) etc.
काल	m. occasion, circumstance
काल	m. season etc.
काल	m. meal-time (twice a day, hence **ubhau kālau** - ,"in the morning and in the evening" ; **ṣaṣṭhe kāle** - ,"in the evening of the third day" ; **ṣaṣṭhānna - kāla** - ,"one who eats only at the sixth meal-time, *id est* who passes five meals without eating and has no meal till the evening of the third day " ;or without **anna** - *exempli gratia, 'for example'* **caturtha - kālam** - ,"at the fourth meal-time *id est* at the evening of the second day ")
काल	m. hour (hence **ṣaṣṭhe kāle 'hnaḥ** - ,"at the sixth hour of the day, *id est* at noon")
काल	m. a period of time, time of the world (*equals* **yuga** -)
काल	m. measure of time, prosody
काल	m. a section, part
काल	m. the end
काल	m. death by age

यहाँ मोनियर प्रसिद्ध संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश है और यहाँ फिर काल का अर्थ समय है।

of Durgā),' N. of an Upa-purāṇa. **-mukha**, m., N. of a Rakshas, R. iii, 29, 30. **-rahasya**, n., N. of a work. **-vrata**, n., N. of a ceremony, KālP. **Kālikâśrama**, m., N. of a hermitage, MBh. xiii, 1710. **Kālikā-stotra**, n., N. of a Stotra. **Kālikôpanishad**, f., N. of an Upanishad. **Kālikôpapurāṇa**, n. = *kālikā-pur°*.

Kālikeya, mfn. relating to Kālikā, BrahmaP.

Kāli-tarā, f. (compar.), Pāṇ. v, 3, 55, Pat.

Kāliman, *ā*, m. blackness, Śiś. iv, 57; Hit. &c.

Kālim-manyā, f. thinking oneself to be Kālī, Pāṇ. vi, 3, 66, Kāś.

Kāliya, *as*, m., N. of a Nāga (inhabiting the Yamunā, slain by Kṛishṇa, also written *kālīya*, VP.), MBh.; Hariv. &c. **-jit**, m. 'destroyer of Kāliya,' N. of Kṛishṇa or Vishṇu, L. **-damana**, m. id., L.

Kāliyaka, *am*, n. (= *kālīyaka*) a yellow fragrant wood (perhaps sandal-wood or Agallochum), L.

Kālila, mfn., gaṇa *picchâdi*.

Kālī (f. of 1. *kāla*, q. v.) **-kula-sarvasva**, n., N. of a work. **-krama**, m. = *kālikā-kr°*. **-tattva**, n., N. of a work. **-tanaya**, m. 'son (or favourite) of Durgā,' a buffalo, L.; (cf. *hayagakālī-t°*.) **-tantra**, n., N. of a Tantra. **-purāṇa**, n. 'the Purāṇa of Kālī,' N. of an Upa-purāṇa. **-manu**, *avas*, m. pl., N. of certain mystical prayers. **-māhātmya**, n. = *devī-māh°*. **-mukha**, *ās*, m. pl., N. of a religious sect; (cf. *kālā-m°*.) **-yantra**, n., N. of a Yantra. **-rahasya**, n., N. of a work. **-vilāsa-tantra**, n. id. **-vilāsin**, m. 'the husband of Kālī,' a form of Śiva, Daś. **-samasta-mantra**, m., N. of a Mantra. **-sahasra-nāman**, n., N. of a work. **-sāra-tantra**, n. id. **-hṛidaya**, n. id. **Kāly-upanishad**, f., N. of an Up.

Kālīya, *as*, m. = *kāliya*; (*am*), n. a dark kind of sandal-wood, Suśr. **-damana**, m. = *kāliya-jit*, Gal. **-mardana**, m. id., Gal.

Kālīyaka, *am*, n. = *kāliyaka*, MBh.; R.; Suśr. &c.; (*as*, *am*), m. n. a kind of turmeric (Curcuma xanthorrhiza), L.; (*as*), m., N. of a Nāga (different fr. Kāliya), MBh. i, 1555.

1. **Kāleya**, *am*, n. (fr. 1. *kāla*), the liver, L.; a yellow fragrant wood, Kum. vii, 9; saffron, L.

2. **Kāleya**, *as*, m. (metron. fr. *kālā*), N. of a Nāga (= Kāliya), L.; (*ās*), m. pl., N. of a family of Daityas, MBh. iii; BhP.

Kāleyaka, *as*, m. the plant Curcuma xanthorrhiza, L.; a particular part of the intestines (different fr. the liver), Suśr.; a disease like jaundice, Suśr.; a dog (for *kaul°*), Hcat.; (*am*), n. a fragrant wood, R.

काल 2. *kālá*, *as*, m. (√3. *kal*, 'to calculate or enumerate'), [ifc. f. *ā*, RPrāt.], a fixed or right point of time, a space of time, time (in general), AV. xix, 53 & 54; ŚBr. &c.; the proper time or season for (gen., dat., loc., in comp., inf., or Pot. with *yad*, e. g. *kālaḥ prasthānasya* or °*nāya* or °*ne*, time for departure; *kriyā-kāla*, time for action, Suśr.; *nâyam kālo vilambitum*, this is not the time to delay, Nal.; *kālo yad bhuñjīta bhavān*, it is time for you to eat, Pāṇ. iii, 3, 168, Kāś.), ŚBr.; MBh. &c.; occasion, circumstance, MBh. xii, 1950; Mṛicch.; season, R. &c.; meal-time (twice a day, hence *ubhau kālau*, 'in the morning and in the evening,' MBh. i, 4623; *shashṭhe kāle*, 'in the evening of the third day,' MBh.; *shashṭhânna-kāla*, 'one who eats only at the sixth meal-time, i.e. who passes five meals without eating and has no meal till the evening of the third day,' Mn. xi, 200; or without *anna*, e. g. *caturtha-kālam*, 'at the fourth meal-time, i.e. at the evening of the second day,' Mn. xi, 109); hour (hence *shashṭhe kāle 'hnaḥ*, 'at the sixth

kālatom kālam, for a long time, Pañcat.); *nitya-k°*, constantly, always, Mn. ii, 58 & 73; *dīrgha-k°*, during a long time, Mn. viii, 145; (*ena*), instr. ind. in the course of time, Mn. ix, 246; MBh. &c.; with *gacchatā*, id., VP.; *dīrgheṇa kālena*, during a long time, MBh.; after a long time, R. i, 45, 40; *kālena mahatā* or *bahunā*, id.; (*āt*), abl. ind. in the course of time, Mn. viii, 251; *kālasya dīrghasya* or *mahataḥ*, id., Mn.; MBh. &c.; *kasya-cit kālasya*, after some time, MBh. i, 5299; Hariv.; (*e*), loc. ind. in time, seasonably, RV. x, 42, 9; ŚBr.; (cf. *a-kāle*); *kāle gacchati*, in the course of time; *kāle yāte*, after some time; *kāle kāle*, always in time, MBh. i, 1680; Ragh. iv, 6; [cf. *κήρ*; Lat. *calen-dæ*; Hib. *ceal*, 'death and everything terrible.'] **-karaṇa**, n. appointing or fixing a time. **-karman**, n. 'time's act,' death, R. vi, 72, 11. **-kalpa**, mfn. like death, fatal, deadly. **-kāra**, mfn. making or producing time, ŚvetUp. **-kārita**, mfn. effected or brought about by or in time; (cf. *kāla-kṛita*.) **-kuṇṭha**, m., N. of Yama, L. **-2.-kūṭa**, m. id., L.; (for 1. & 3. see p. 277, col. 1, and p. 279, col. 2.) **-kṛit**, m. 'producing the times, i. e. seasons,' the sun, L. **-kṛita**, mfn. produced by time, Suśr.; appointed (as to time), lent or deposited (by a giver) for a certain time, Yājñ. ii, 58; (*kāla-kārita*) Mn. viii, 348; (*as*), m. (= *-kṛit*) the sun, L.; time, L. **-kaumudī**, f., N. of a work. **-krama**, m. lapse of time, Kathās.; (*eṇa*), instr. ind. in process of time; (*āt*), abl. ind. id., Pañcat.; Kathās. **-kriyā**, f. 'fixing the times,' N. of a chapter of the Sūrya-siddhânta; death, Buddh. **-kshepa**, m. allowing time to pass away, delay, loss of time, Megh.; Pañcat. &c.; *a-kālakshepam*, ind. without delay, Śak. **-gata**, mfn. dead, Lalit. **-gati**, f. lapse of time, W. **-gupta**, m., N. of a Vaiśya, Daś. **-granthi**, m. 'a joint of time,' year, L. **-ghātin**, mfn. (said of a poison) killing in the course of time (i.e. by degrees, slowly), Suśr. **-cakra**, n. the wheel of time (time represented as a wheel which always turns round), MBh.; Hariv. &c.; a given revolution of time, cycle [according to the Jainas, the wheel of time has twelve Aras or spokes and turns round once in 2000,000,000,000,000 Sāgaras of years; cf. *ava-sarpiṇī* and *ut-s°*]; the wheel of fortune (sometimes regarded as a weapon), R.; N. of a Tantra, Buddh.; (*as*), m., N. of the sun, MBh. iii, 151; *-jātaka*, n., *-pradīpa*, m., N. of works. **-codita**, mfn. summoned by Death; *-karman*, mfn. acting under the influence of fate. **-joshaka**, *ās*, m. pl., N. of a people (v. l. °*shika* and *-toyaka*), MBh. vi, 353; VP. **-jña**, mfn. knowing the fixed times or seasons, Mn. vii, 217; Ragh. xii, 33; (*as*), m. an astrologer, W.; a cook, L. **-jñāna**, n. knowledge of the fixed times or seasons, Jyot.; VP.; N. of several medical works (by Malladeva, Śambhu-nātha, and others). **-jñānin**, mfn. knowing the fixed times or seasons, L. **-tattvârṇava**, m. 'ocean of the truth of time,' N. of a work. **-tantra-kavi**, m. an astrologer. **-tara**, m. (compar.), Pāṇ. v, 3, 55, Pat. **-taraṅga**, m. the first part of the Smṛity-artha-sāgara by Nṛi-siṃha. **-tas**, ind. in the course of time, Kathās. vi, 101. **-2.-tā**, f. seasonableness, timeliness, Ghaṭ. **-tulya**, mfn. like death, deadly. **-toyaka**, see *-joshaka*. **-traya**, n. the three times, i. e. past, present, and future. **-tritaya**, n. id. **-daṇḍa**, m. the staff of death, death, MBh.; R. &c. **-damanī**, f. 'conquering Kāla,' N. of Durgā. **-dāsa**, m. = *tintiḍa* (?), L. **-divākara**, m., N. of a work. **-dūta**, m. the angel of death, Hcat.; an omen pointing to death, Kād. **-deśa-vibhāga**, m. the difference of time and locality, Suśr. **-dharma**, m. the law or rule or operation of time, death, dying, MBh.; Hariv.; R.; line of conduct suitable

m. 'felly of
by Kṛishṇa
&c.; N. of
the Brāhm
n., N. of
-(*nemy-*)
Kṛishṇa o
fellies of
= *-nemi*,
tured by
f°), Mn. vi
destined to
Viśvā-mitr
ripening,'
m. standin
mented), V
of time;
Hcat. **-p**
-parita, n
m. 'havin
-purush
a servant o
time-heap,
long time,
ening in ti
bhāta, n.
months foll
rūḍha, m
ripe. **-pr**
sun; *-nāth*
kāla), Utt
'time-deve
of time, Śā
-mayūk
-mahim
m., N. of
metrical ve
m., N. of a
-mūrti,
time to pas
na, n. id.,
in the sixty
m. connect
MBh. iii;
tiny,' N. of
trī, f. the
destruction
and identifi
MBh.; R.
cad.; a par
seventh da
seventh ye
from attent
a Brāhmaṇ
104. **-ru**
is to destro
mfn. weari
m. id., N.
or with the
f., N. of a
-vikram
knowing th
ledge of th
P.) 'know
VarBṛS. **-**
ti, f. lapse
(scil. *rasa*)
-viprak
-vibhak
-vibhāg
veka, m.,
dhi, f. per
Mn. viii, 1

काल in the **Hindi** dictionary

Also find **काल** in the Sanskrit dictionary.

हिन्दी

प्रकाशितकोशों से अर्थ

शब्दसागर

काल ^१ संज्ञा पुं० [सं०]

१. समय । वक्त । वह संबंधसत्ता जिसके द्वारा, भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है और एक घटना दूसरी से आगे, पीछे आदि समझी जाती है । विशेष—वैशेषिक में काल एक नित्य द्रव्य माना गया है और 'आगे' 'पीछे' 'साथ', धीरे,' जल्दी आदि उसके लिंग बतलाए गए हैं । संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग और विभाग उसके गुण कहे गए हैं । 'पर', 'अपर' आदि प्रत्ययों का भाव सर्वत्र सब प्रणियों में समान होता है, और इस परत्व, अपरत्व की उत्पत्ति में असमवयि कारण से से काल का संयोग होता है । इससे काल सबका कारण तथा व्यापक और एक मान गया है । उसकी अनेकता की प्रतीति केवल उपाधि से होती है । कोई कोई नैयायिक काल के 'खंडकाल' और 'महाकाल' दो भेद करते हैं । पदार्थों (ग्रहों आदि) की गति आदि से क्षण दंड, मास, वर्ष आदि का जिसमें व्यवहार होता है, वह खंडकाल है । और उसी का दूसरा नाम कालोपाधि है । जैन शास्त्रकार काल को एक अरूपी द्रव्य मानते हैं और उसकी उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी दो गतियाँ

तो आप देख सकते हैं कि गीता वाणी देने वाला स्वयं को मृत्यु नहीं बल्कि समय या भाग्य कह रहा है।

यहाँ गीता श्लोक ११:३२ का वास्तविक अनुवाद काफी सापेक्ष हो जाता है कि मैं समय हूँ, वह पराक्रमी जो इन दुनिया को नष्ट करेगा और अपने इन शत्रुओं को पहले ही मरा हुआ समझ, इसलिए आप बस अपना काम करें।

कृष्ण या गीता ज्ञान दाता केवल यह घोषणा कर रहे हैं कि वह समय या भाग्य है, जहां वह जीवन मृत्यु तय करता है लेकिन रामपाल मूर्ख कल्ट के सदस्य सिर्फ काल शब्द को चुन लेते हैं और काल यानी हिंदी भाषा का अर्थ निकालते हैं, मौत।

यह सत्य है की हिंदी भाषा में काल का शाब्दिक अर्थ मौत होता है और आमतौर पर मृत्यु, लेकिन जैसा कि रामपाल और उनके शरारती कल्ट ने हमेशा इस तथ्य को गढ़ा है, उन्होंने लोगों को गुमराह करने के लिए यहां ऐसा ही किया है।

हम सभी सवालों का जवाब "गीता, रामपाल पाखंडी के मुख में " नामक एक अलग किताब में देंगे।

भाग **15 :** उपसन्हार

इस पुस्तक के अंत में, हम उन सभी को अलविदा कहना चाहते हैं, जिन्हें इस कल्ट और अपने उद्देश्यों को भरने के लिए तथ्यों को गढ़ने के इसके धोखेबाज तरीके का ज्ञान हो सकता है। रामपाल को विभिन्न अपराधों में शामिल होने के कारण भारतीय पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद उनकी वर्तमान स्थिति अराजकता में है।

रामपाल पूर्व सहयोगी और पुस्तक के लेखक भगवान बना शैतान (शैतान भगवान के रूप में प्रकट हुए) करौंठा आश्रम छोड़ कर रामपाल गुरु आश्रम छुड़ानी वापस आ गए थे। उन्होंने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि कैसे सत्ता और नियंत्रण ने रामपाल को भ्रष्ट कर दिया। वह भक्तों की उपेक्षा करने लगा और आश्रम में स्त्रियों से लिपट गया।

अब पुस्तक के लेखक यानी पूर्व रामपाल कल्ट के सदस्य, आश्रम छोड़ कर अपना अनुभव पुस्तक में बताया था, जिसकी वजह से बाद में कल्ट के लोगों ने ६ जून २००६ को छुड़ानी आश्रम पर हमला किया। इस हमले में छुड़ानी आश्रम के कुछ लोग घायल हो गए थे।

इस मामले में 7 जुलाई 2006 को पुलिस ने छापेमारी कर रामपाल आश्रम करौंठा से 3 लोगों को गिरफ्तार किया और अगले दिन रामपाल कल्ट के सदस्य ने झज्जर-रोहतक हाईवे को चक्का जाम करते हुए एक हाई क्लास ड्रामा दिखाया जहाँ नजदीकी गांव के लोग तनाव में आ गए। स्थानीय ग्रामीणों ने बदले में रामपाल के करौंथा आश्रम के रास्ते जाम कर दिए ताकि वहां भीड़ न जमा हो सके।

12 जुलाई को स्थानीय ग्रामीण और करौंथा आश्रम के लोग आपस में भिड़ गए, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई।

इसके कारण 13 जुलाई 2006 को रामपाल को उसके साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और रामपाल ने इस गिरफ्तारी के लिए अदालत में अपील की और जमानत और आश्रम पर दावा करने के अधिकार की मांग की।

जमानत मिलने के बाद, रामपाल हत्या के मामले में मुकदमे के लिए नियमित रूप से अदालत में पेश नहीं हुआ। उनके अनुयायी करोंथा आश्रम के अंदर थे, जब आर्य समाज से जुड़े ग्रामीणों ने आश्रम पर हमला करने के प्रयास में मई 2013 में आश्रम की सुरक्षा करने वाली पुलिस के साथ संघर्ष किया, जिसके परिणामस्वरूप 3 लोगों की मौत हो गई और लगभग 100 लोग घायल हो गए। ग्रामीणों की जांच करने में असमर्थ, पुलिस ने रामपाल के अनुयायियों को करोन्था आश्रम छोड़ने और बरवाला आश्रम जाने के लिए मजबूर

किया। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उनकी गिरफ्तारी और मुकदमे की मांग की। 14 मई 2014 को वह एक वीडियो लिंक के जरिए हिसार कोर्ट में पेश हुआ। इस अवसर पर, उनके अनुयायियों ने अदालत परिसर में प्रवेश किया और अराजकता पैदा कर दी। रामपाल एक विवादास्पद उपदेशक हैं, लेकिन भारत के हरियाणा राज्य और उत्तरी भारत के अन्य हिस्सों में बड़ी संख्या में अनुयायी हैं।

जुलाई 2014 में, रामपाल के अनुयायियों ने फिर से अदालती कार्यवाही को बाधित करने का प्रयास किया। सितंबर 2014 में, रामपाल को अदालत की अवमानना के एक मामले में चंडीगढ़ में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के समक्ष पेश होने के लिए कहा गया था। स्थानीय प्रशासन ने उनके अनुयायियों को शहर में प्रवेश करने से रोकने के लिए धारा 144 लागू की और 2,000 पुलिस कर्मियों को तैनात किया। बावजूद इसके हजारों अनुयायी शहर में जमा हो गए, हालांकि रामपाल कोर्ट में पेश नहीं हुए।

२०१०-१४ के दौरान, रामपाल ने ४२ बार अदालत की सुनवाई को अधूरा छोड़ दिया। उन्हें कानून और व्यवस्था की स्थिति बनाए रखने के लिए अदालत द्वारा 'उपस्थिति से छूट' दी गई थी। 2014 में, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने उनके खिलाफ गैर-जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी किया, जब उनके अनुयायियों द्वारा अदालत की कार्यवाही को बाधित करने का आरोप लगाया गया था। जब पुलिस ने 9 नवंबर को उन्हें हिरासत में लेने की कोशिश की, तो उनके अनुयायियों ने सतलोक आश्रम के बाहर मानव श्रृंखला का गठन किया। पुलिस उसे गिरफ्तार करने से पुलिस ने बातचीत शुरू करने की कोशिश की, और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। रामपाल के अनुयायियों ने घोषणा की कि पुलिस को उसे गिरफ्तार करने से पहले 100,000 से अधिक अनुयायियों को मारना होगा।

18 नवंबर तक, हिसार में उनके सतलोक आश्रम को उनके हजारों अनुयायियों द्वारा संरक्षित किया गया था, जिन्होंने लाठी, लाठी और अन्य आग्नेयास्त्रों का इस्तेमाल किया था। आश्रम को हजारों महिला भक्तों ने भी संरक्षित किया, जिन्होंने कई दिनों तक प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर दिया, जिससे पुलिस को प्रवेश करने से रोक दिया गया। उन्हें कथित तौर पर उनके सहयोगियों द्वारा परिसर तक ही सीमित रखा गया था। 20,000 से अधिक सुरक्षा कर्मियों और पुलिस ने जबरन आश्रम में प्रवेश किया, लेकिन वे रामपाल को गिरफ्तारी के लिए नहीं ढूंढ सके। पुलिस ने उन्हें खोजने के लिए आश्रम के पीछे की दीवार को तोड़ने के लिए अर्थ मूवर्स का इस्तेमाल किया। लेकिन बड़ी संख्या में अनुयायियों ने उनका विरोध किया जिन्होंने उनके प्रवेश को रोकने के प्रयास में 28 पुलिस कर्मियों को घायल कर दिया। उनके आश्रम में पांच महिलाओं और एक 18 महीने के बच्चे के शव पाए गए।

रामपाल को 19 नवंबर 2014 की रात को उनके 900 से अधिक अनुयायियों के साथ देशद्रोह, हत्या, हत्या के प्रयास, साजिश, अवैध हथियारों की जमाखोरी और आत्महत्या

करने वालों को सहायता और उकसाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। हिसार की एक विशेष अदालत, हरियाणा ने 26 जुलाई 2021 को संत रामपाल जी महाराज और 4 अन्य को सभी आरोपों से रिहा कर दिया और उन्हें ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स मामले में बरी कर दिया।

29 अगस्त 2017 को, रामपाल को दोषी नहीं पाया गया और हिसार अदालत द्वारा गलत तरीके से कारावास और कर्तव्य में बाधा से संबंधित दो मामलों में बरी कर दिया गया, फिर भी, वह न्यायिक हिरासत में बना रहा क्योंकि हत्या और राजद्रोह के मामले अभी भी चल रहे थे।

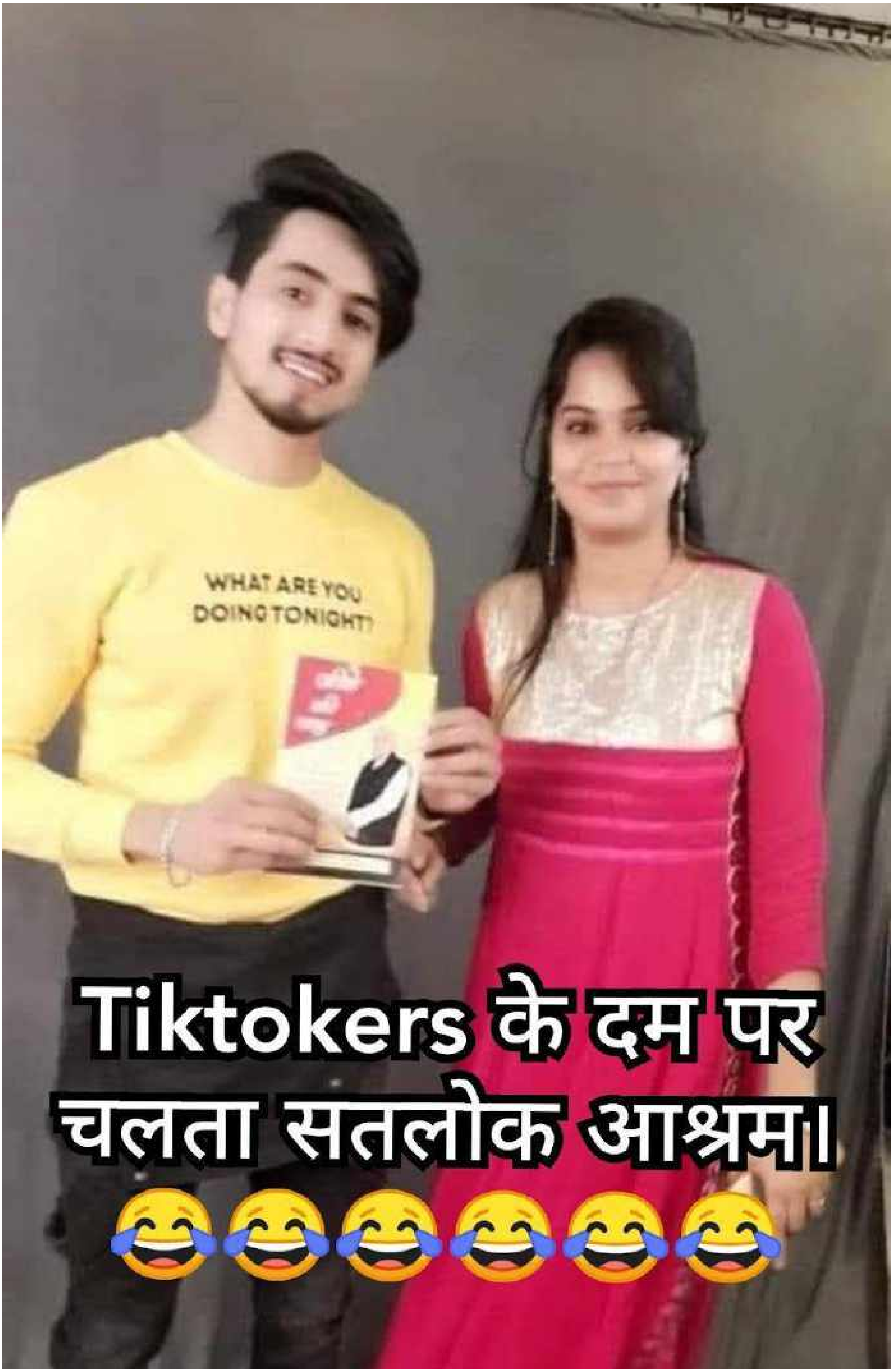
11 अक्टूबर 2018 को, रामपाल को दो मामलों में प्राथमिकी संख्या के साथ हत्या का दोषी पाया गया था। 429 और 430. दोनों मामले 2014 में बरवाला में उनके सतलोक आश्रम में उनके समर्थकों और पुलिस के बीच संघर्ष के दौरान पांच महिलाओं और एक अठारह महीने के शिशु की मौत से संबंधित हैं। 16 अक्टूबर 2018 को, सभी दोषियों को सतलोक गतिरोध के दौरान चार महिलाओं की हत्या के मामले में 429 रुपये के जुर्माने के साथ-साथ आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डी.आर. चालिया ने रामपाल और उनके चौदह अनुयायियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई और साथ ही हत्या और आपराधिक साजिश के लिए अलग-अलग 1 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया। दोषियों को दो साल की कैद की सजा भी दी गई और गलत तरीके से कारावास के लिए प्रत्येक को 5,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया।

एफआईआर सं. 430 अस्पताल में मरने वाली महिला और शिशु की हत्या से संबंधित है। हिसार की अदालत ने 11 अक्टूबर के अपने फैसले पर रामपाल और 13 अन्य आरोपियों को दोषी ठहराया। इस मामले में 17 अक्टूबर को सभी आरोपियों को आजीवन कारावास और ₹2 लाख के जुर्माने की सजा सुनाई गई थी। इन दिनों कल्ट के सदस्य अभी भी अपने नेता के लौटने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन मुकदमे की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कल्ट के लोग नियमित रूप से झूठी किताब ज्ञान गंगा पर आधारित सामग्री और विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइटों पर रामपाल आधा ज्ञान पोस्ट कर रहे हैं।

वे ज्ञान गंगा धारण करने वाले लोगों की तस्वीरें भी फोटोशॉप कर रहे हैं ताकि लोग इससे प्रभावित हों।

देखिए उनकी कुछ मजेदार पोस्ट जहां टिकटोकर्स और कुछ मशहूर हस्तियों को पैसे की जरूरत है, लेकिन जब हमने उनमें से एक से इस बारे में पूछा कि क्या उन्हें वास्तव में पता है कि इसमें क्या लिखा है, तो वे नकार में जवाब देते हैं।

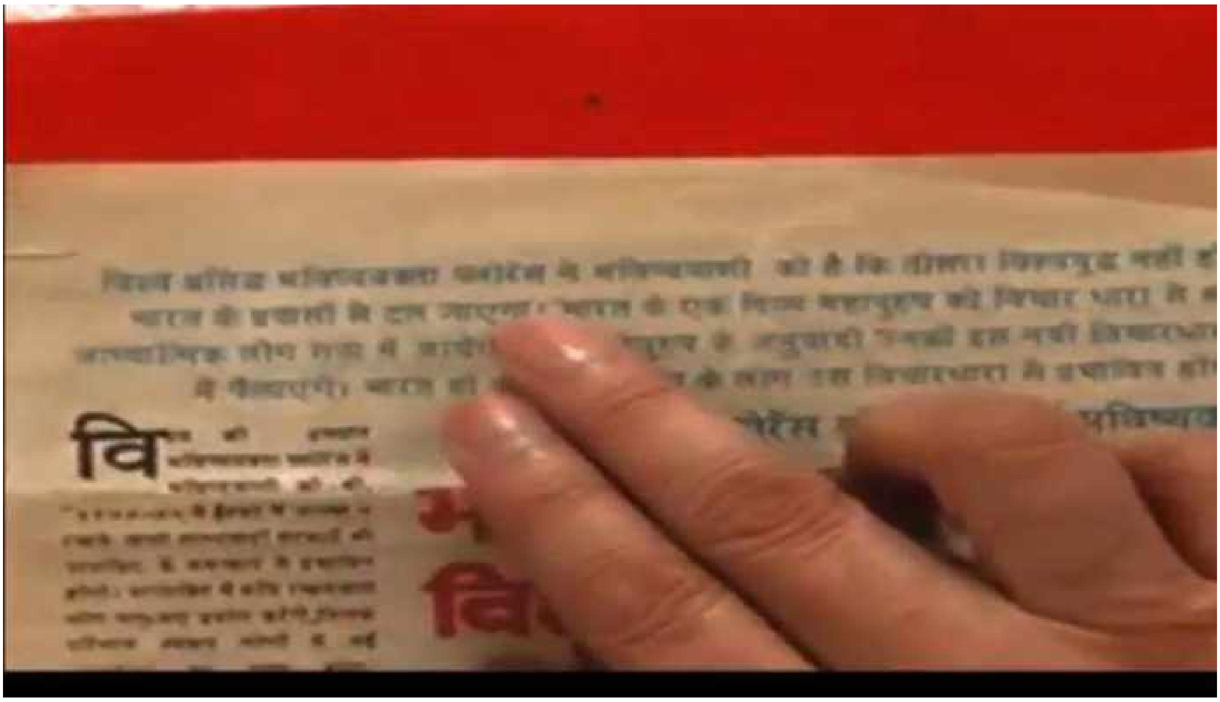

WHAT ARE YOU
DOING TONIGHT?
Tiktokers के दम पर
चलता सतलोक आश्रम।

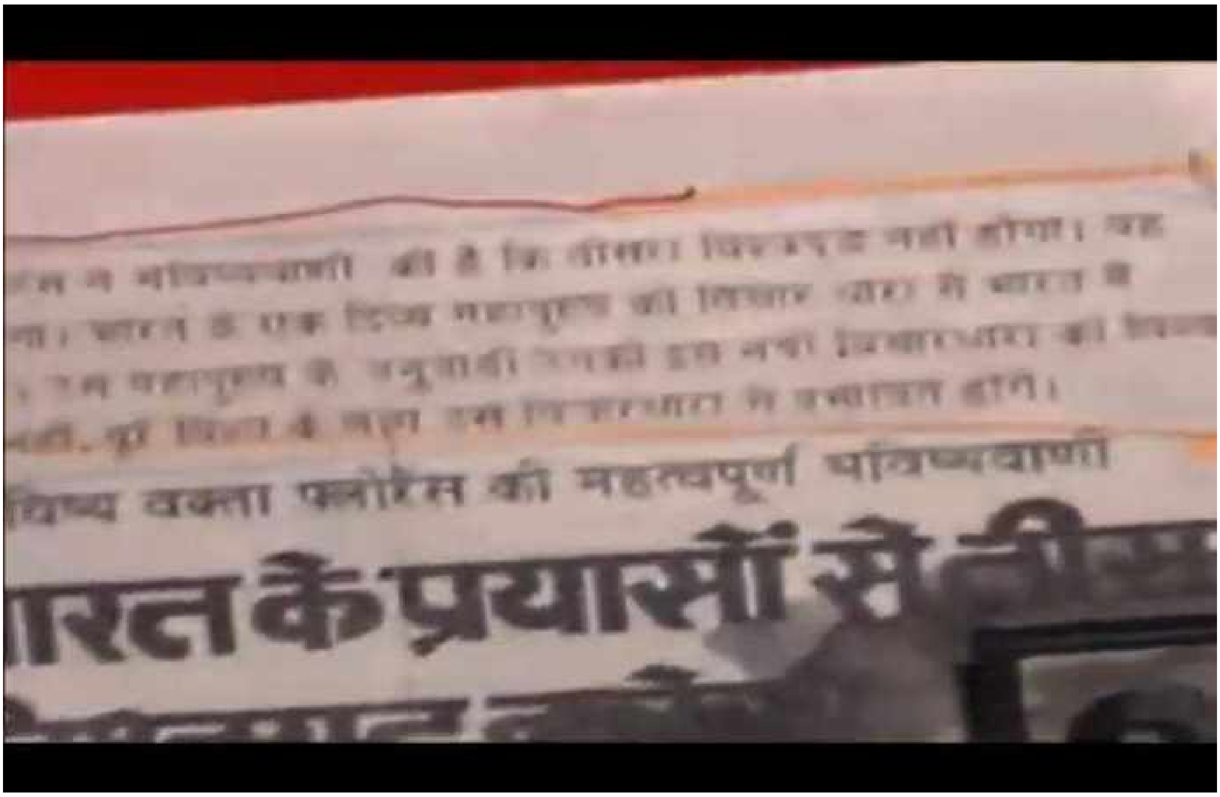


जीने की राह
फोटोशॉप की राह।
झूठे rampal कल्ट के साथ।
😁😁😁😁😁😁

कल्ट द्वारा फोटोशॉप प्रचार देखें कि उन्होंने फ्लोरेंस को असली दिखने के लिए नकली फ्लोरेंस के पेज की तरह पत्रिका का निर्माण किया। यह पत्रिका पत्र रामपाल सत्संग वीडियो में से एक में दिखाया गया था।

वास्तव में इस पत्रिका के शीर्षक में कोई तिथि, पत्रिका का नाम नहीं है। नीचे स्क्रीनशॉट में देखें।





हम कहेंगे कि आपको रामपाल कल्ट और उनके झूठे दर्शन और आधे ज्ञान से सावधान रहना चाहिए क्योंकि उनका असली मकसद सिर्फ अपने कल्ट को फैलाना और दूसरे के विचारों को दूषित कर देना है। वे वर्तमान में पूरी दुनिया में फैल रहे हैं और सभी भाषाओं में अपनी झूठी किताब का अनुवाद कर रहे हैं।